

# कविकुलकल्पतरु

श्री मत्कविकुल भूषण चिन्तामणि महा

राजरचित

जिसमें

INDIA-OFFICE  
LIBRARY.

काव्य गुण, उदाहरण सहित अलङ्कार, काव्य  
दोष, शब्दार्थ, और श्रीमहाराणी राधिका जी  
की स्तुति कथन और अन्य नायिका वृत्तान्त भाव  
अष्टादश चैष्टा और शृंगारादि क वर्णित हैं

वही

भाषा काव्य रसिकों के पठनार्थ परिचित महेश्वर  
के द्वारा यथाविधि शुद्ध होकर

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के पाषाण मन्त्रालय में अति स्वच्छना पूर्वक रूप

जनवरी मन् १८७५ ई.

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ श्री चिंतामणि कवि रचित भाषा कवि

॥\*॥ कुल कल्पतरु लिरव्यते ॥

॥ अथ कवि ॥

श्रीगण नायक सुंदरके अंगन गह्वरे सुर सिंधु  
सरोज रह्यो फवि ॥ हाथानि अंकुश पाश अ  
भय वर तुंदिल अंगानि में उमरो रह्यो ॥ मां  
नों दयामय सत्वकों अंकुर दंत की दीपति  
यो वरने कवि ॥ कुंभ सिंदूर लसे मनि सुंदर  
मानों उदय गिरि अंगानि में रवि ॥ १॥ मेरे  
नावलि सी विद्यतावलि तीषन दानन में  
न उदारसों ॥ सेवकों नित देत अभय पा  
ल लेवारसों कल्पद्रुम डारसों ॥ श्रीगिरिजा  
हरजू को दुलारे यहे भजनीय जो चित्त वि  
चारसों ॥ लागि सदा मनि सिंधुर आनन  
सुंदर इंद्रके असवारसों ॥ २॥ दोहा ॥ जे सुर  
वानी मंथहैं तिनको समुह विचार ॥ चिंता  
मनि कवि कहत है भाषा कवित विचार ॥  
३॥ वत कहाउ रस में जु है कवित कहावै सो  
द ॥ गद्य पद्य है भांति सों सुरवानी में होदू ॥  
४॥ छंद निवद्ध सुपद्य कहि गद्य होत विन

छंद ॥ भाषा छंद निवद्ध सुनि सुकवि होत  
सानंद ॥ ५॥ मेरे पिंगल मंथते समुहो छंद  
विचार ॥ रीति सुभाषा कवित की वरनत बुध  
अनुसार ॥ ६॥ सगुना लंकारन सहित दोष  
रहित जो होदू ॥ शब्द अर्थ ताको कवित कहत  
विबुध सब कोदू ॥ ७॥ जे रस आगेको धरम  
ते गुन बरने जान ॥ आनप के ज्यों सरितादि  
क निहचल अवदात ॥ ८॥ सवे अर्थ तबुव  
रिगेये जीवित रस जिय जानि ॥ अलंकार  
हारादि ते उपमादिक मन जानि ॥ ९॥ श्लेषा  
दि गन सरिता दिक् से मानो चित ॥ वरने रि  
ति सुभाव ज्यों वृत्ति वृत्ति सी मित्र ॥ १०॥ प  
द अंगुन विश्रामसों सज्जा सज्जा जाँन  
रस आस्वादन भेदजे पाक पाक से मानि  
११॥ कवित पुरुषकी साजु सब समुह लोक  
की रीति ॥ गुन विचार अव करतहों सुनो  
सुकवि करि प्रीति ॥ १२॥ प्रथम कहत माधु  
र्य पुनि वोज प्रसाद वरवानि त्रिविधै गुन  
तिनमें सवे सुकवि लेत मनमानि ॥ १३॥ जो  
संयोग सिंगारमें सुखद दवावै चित ॥ सो  
माधुर्य वरवानियै यहई तत्व कवित ॥ १४॥

सौ संयोग सिंगारतें कहणा मध्य अधिका  
 ॥ विपलंभ अहंसांतरस तामें अधिका व  
 नाइ ॥ १५ ॥ दीप चित्त विस्तारको हेतु वोज  
 गुन जानि ॥ सुते वीर वीभत्स अरु रोद क  
 माधिक मानि ॥ १६ ॥ सुखे ईधन आगज्यो स्व  
 ह नीरकी रीति ॥ मल्लके अक्षर अर्थ जो सो  
 पसाद गुन नीति ॥ १७ ॥ कोऊ अंतर भूत ह  
 त कोऊ दोष अभाव ॥ कोऊ दोष त्रिविधि  
 गुण जानें दसन गनाउ ॥ १८ ॥ और गुने जो  
 अर्थ गुण तेन कहू करि मानि ॥ रचना वर  
 न समान गुन के विंजन के जानि ॥ १९ ॥ अ  
 नुस्वार जुत वरन जिति संवै वर्ग अटवर्ग ॥  
 मृदु समास माधुर्यकी घटना में जुनि सर्व ॥  
 २० ॥ माधुर्यकोउ ॥ संवैया ॥ इक आजु मै बुदनि  
 बोलि लखी मनि मंदिरकी सचि बंद भरे  
 कुरविंद के पल्लव बंदु तहां अर विंदनतें  
 मकरंद करै ॥ उत बुंदनके सुकता गनहैं फ  
 ल सुंदर द्वै पर आनि परै ॥ लखि यों दुतिक  
 द अनंद कला नंदनंद सिला दूर रूप धरे ॥  
 २१ ॥ दोहा ॥ वर गन मै जो आदि अस तीजो  
 आखर कोइ ॥ तिनसों योग दुतीय अरु चौ

थे को जोहोइ ॥ २२ ॥ रेफ जोग सब द्वेजा  
 तुल्य वरन जग जोग ॥ स पट वरगदरथ  
 वारत जेससास कवि लोग ॥ २३ ॥ रंभी अत  
 ना वाजकी व्यजका मनमें आनि ॥ सवाल  
 सुवावि जनको मनों सुजन लेहु मजानि  
 २४ ॥ संजोगी उद्धत वरन जोएनि लिख  
 मास ॥ रेसी रचना करतहें सुनताहें कजप  
 कास ॥ २५ ॥ वाः उः ॥ इक् पद फल सात ह  
 वा दूदत किलकत अति ॥ चिंतामं बल  
 वंत इक् आवत उद्धत गति ॥ \* ॥ मरदगज  
 कद पद समद गरजत गंभीर धुनि ॥ चुन कर  
 त पधान रहे पवय मानों धुनि ॥ उत उम डि  
 पूरि गिरवर धनि प्रवल जलाथ जिम दि  
 न हटका ॥ सम वारत सैल दगगन विकट उद  
 भट मरकाट भटकाटका ॥ २६ ॥ दोहा ॥ कृपापि  
 भागत निरखि के हस्यो प्रगट धन सह ॥ रु  
 द करत जग अंतजनु सह दिसानि विहद  
 सह दिसान विहद दर पपल दूर सिध ॥ रु  
 द धुकि पद कुद्धर नि विरुद्ध धुनि कियारह  
 छिति धर भट दूरक अलक्ष छपि छपि ॥ रा  
 व विजय असव विकल अरु वह कप ॥

प्रसादल॥ दोहा॥ जामहि सुनलहि पद  
 नके अर्थ बोध मनहोइ॥ सो प्रसाद वरनादि  
 इति साधारन सब जोइ॥ २६॥ प्रसाद को उ  
 कविता॥ सांवरो सलोतो नित बडी अगिब  
 योन को जुहोतु आभरन आनि जमुना  
 केतीरको॥ चिंतामनि बोहे गारी दीजे तो हं  
 सत दीद घसि निकासे त पुनि नारिनकी  
 भीरको॥ मैतौ आजु जानी अवलौ नहौ  
 नजानत ही करतु अनीति जैसी छोहरा  
 अहीरको॥ पनिघट रोकात कन्हैया याको  
 नाम देया छोटेहै निपट छोटे भैयावल  
 वीरको॥ २७॥ दोहा॥ प्राचीनो दिन गुननि को  
 जैसो कछू प्रकार॥ सोयामें सब लिखत है नि  
 जमति को अनुसार॥ २८॥ श्लेष प्रसाद वरन  
 बहु समता नाम बखान॥ माधुर्यो सुकुमार  
 ता अर्थ व्यक्त पहिचान॥ २९॥ पुनि उदारता  
 वोजगानि कांति समाधौ जानि॥ संवेदभीरी  
 तिके पानद सो गुनमानि॥ ३०॥ श्लेष गुनको  
 ल॥ बहुत पदनको एक पद समझे है आ  
 भास॥ ताको कहत सलेश गुन सिधिलनि  
 बंध विलास॥ ३१॥ श्लेष विकटता पदन

की जो उदारता होइ॥ वोजगानि जैसि थि  
 ल पद बंध प्रसाद जु कोइ॥ ३२॥ अ  
 रोहाराहसो जोग समाधि प्रकार॥ मेवे  
 जहि गनत सब संमत बुद्धि विचार॥ ३३॥  
 श्लेष॥ कविता॥ राम भुज दंडको हंस  
 लिति कारि दिख उदंड सर दंड बंड॥ स  
 काल निशिचरन को दंड ऐसो हज्जे पद  
 ल घन अनिल जनु थग विलोडे॥ आ  
 थ आवरन संगमाहि योंगिरे हने कुरु  
 र राकास निगोडे॥ गिरे घन धरन केदावा  
 त सधात लहि छपरन संग जनु दू गेडे  
 ३४॥ उदारता कोल॥ दोहा॥ जहां न्यसो  
 करत पद हो उदारता जानि॥ अर्थ चार ता  
 सहित सो अति संजुल पहिचावि॥ ३५॥  
 उदारता कोड॥ सदैया॥ काननि कुंज कालि  
 दीके कूलनि कान्ह मिले बछरानि चरा  
 वैं॥ हेमनि हेमनि मंडितये पाल फूल प्र  
 वालन की छवि छावैं॥ संजुल मूरी नाच  
 त गावत कूदत वेनु विषान वजावैं॥ सांवरो  
 सुंदर नंद कुमारहि याविधि गोप वृद्धारि रि  
 तावैं॥ ३६॥ आरोहा अदरोहा समाधि को उ



\*॥ कविता ॥ हाथ करिचाप रघुनाथ करिहा  
थ वर विमिष दुर्धर्ष दुस्सह चलाय ॥ चले  
नभ मूँदि जनु पक्ष थरि नाग निमिचरन  
के पान बहु पवन खार ॥ दुवन भट विकट  
आकार उद भयनिपट समर पदकटि रिपु  
गन घटाए ॥ ध्वजन कों छेदि, धनु कावच  
गन भेदि, धनरत्न उछेद वह छविनि छार  
॥ ४८ ॥ दोहा ॥ वोज विमिश्रित सिथिल पद  
यह प्रसाद है कोइ ॥ अर्थ व्यक्त जह उल्ल  
सत वही प्रसादो होइ ॥ ४९ ॥ वोज विमिश्रि  
त सिथिलात्मक प्रसाद को उदाहरन ॥ क  
विता ॥ विभुवन घट घट प्रगट प्रकाश पाथो  
जोगी जाहि जातन अनल ज्यो अरनि में  
चिंतामनि कोहे निगमनि बखानि जाको  
ज्योति उडगन आदि चंदमा तरनि में ॥ व  
न में सावनि संग गोधन चरावें तेवें सुख  
पावें सावन ओ भादों की भैरनि में ॥ स  
लल समीप निरमल शिला पर हरि  
खात दधि भात गिरि कंदरा धरनि में ॥  
॥ ५० ॥ दोहा ॥ अर्थ व्यक्त प्रसादते अर्थ आनि  
जो कोइ ॥ तहां जो अर्थ व्यक्त सो अलंकार का

हु होइ ॥ ४३ ॥ अर्थ व्यक्त को उदाहरन ॥ कवि  
ता ॥ कहां जागे रैन आये निपट उनीदे होज  
सोइ रहो प्यारे विष्टो आछो परजंक सैं ॥  
खेलति है चाँदनी में गलन संग काहुं ग  
लही को नामलीजे कहा कछु संकोहे ॥ यो  
ही भले मानमें लगावती कलंक हो कोइ  
यो काहु चिंतामनि रतिह को अंकोहे ॥  
पीतरंग अमर सोमयो नीलरंग लाल भूरी  
हो गुपाल नुहे कोइ को कलंक है ॥ ४३ ॥  
साधुर्य को उदाहरन ॥ सेवेया ॥ व्यास ते आदि का  
हे कविजे जाग ऊपर सोम समूह विसेखो  
बहु कहा अर विंदे कहां हो गुविंदयो आन  
नके समलेखो ॥ तो भिगोर फल भाग गनो  
भन आपन भागनि की धनि लेखो ॥ तो पुनि  
पेनके वानन वारिखे वादक नंद कुभा रहि  
देखो ॥ ४४ ॥ समता को उदाहरन ॥ दोहा ॥ जामे  
पदम तुलित है सो समता पाहिं चाँनि ॥ यो मेका  
हो प्रकार्यों विषम बंधु जनि आनि ॥ ४५ ॥  
अर्थ प्रोद में जह कहत दोष बखान्यो जात  
काहुं पवडन में जह सग सके कहा सुहात ॥  
॥ ४६ ॥ चंदेजु नुमसन हा धनु तो नुममें वल

कोइ॥हमसौं तुमसौं भलीविधि हुंद जुद्ध पु  
नि होइ॥४७॥कथा मध्य जो कहि गये प  
रस रामकी उक्ति॥वैनन उद्धत रीति विन  
वांमे ऐसी युक्ति॥४८॥जहं समता जो पद  
निंमे वद्ध वद्ध नुप्रास॥शब्द अलं कादन  
विषे तिनको प्रगट प्रकास॥४९॥समता  
को उदाहरन॥कावित॥चिंतामनि काव्य गुण  
भारलंक लचकात सोहै तनका छवि लाल  
की॥चपल विलास मद आलस कान्तन  
न ललित विलोकनि लसति मृदु बानि की  
नाक मुक्ता हल अधर लाल रंग संगली  
नी रुचि संस्था राग नवत प्रभानि की॥व  
दन कमल पर अलिज्यो अल कलोल  
अमल कापोलनि भालक मुसक्यानिकी॥  
५०॥सौकुमार्य अप रुष वदन श्रुत कटु दो  
ष अभाउ उज्ज्वल वध्यनु कांति यह नाम्य  
अभाउ गनाउ॥सौकुमार्यको उदाहरन॥सवै  
या॥वामनि मंदिर की छवि हुंद छपा कर  
की छवि पुंजनि पोख्यो॥पादको स्वच्छ म  
नोहर चादनी चापुलै मैन महा बल रख्यो  
सुंदरि को मुख चंदको छाडि चकोरन चंद

मयूषन चोख्यो॥चंद सिलानित नीरु भा  
र्यो सुसवै तियको विरहा गिति सोख्यो  
५१॥दोहा॥शब्द अर्थमे लक्षणा तेंगुनकी  
तिथि जानि॥अव वरनत प्राचीन मत  
द्वे अर्थ गुन मानि॥५२॥पौद सुव्याधि  
समास पुनि वोज प्रसाद बावनि॥पुनि  
साधुर्य उदारता सुकु मारता जु जानि॥५३  
अर्थ व्यक्त पुनि ज्योरेहें कांति श्लेष वखा  
नि अवेधम्य द्वे भांति की अर्थ दृष्टि सो जा  
नि॥५४॥वरनी एक अजोनिहें अर्थ दृष्ट  
यह कोइ॥अन्य ज्ञाना जानि पुनि अर्थ दृ  
ष्ट दत्त होइ॥५५॥पौद कोल॥वाक्य रच  
न पद अर्थ में एक पौद यह कोइ॥वा  
क्य अर्थमें पद रचन पौद दूसरी होइ॥५६  
पदार्थमें वाक्यार्थ कथने॥अत्रि नयन सं  
भव सदां संभु सोलि दान वास॥पति विर  
हित तिय बध सिरयो दात यह नीति वि  
लास॥५७॥उज्ज्वल वेप विलासिनी उज्ज्व  
ल जाकी छांह॥कांत हेत संकोतको चली  
चादनी मांह॥५८॥वाक्यार्थमें पद रचना॥  
यह स्यामा सावन निहा लावी मिलीहें जाहि

सो स्यामा अभि सारिका सुकृत सुकृत फल चाहि ॥६८॥ एक वाक्यार्थ में अनेक वाक्यार्थ कथन ॥ कवि ॥ वामन कहा ऊँ के से जप तप हीने दै के जनम विनायो है असाधुन के साथ में ॥ कोन गृह मेथी जो पतिथ न पूजे के सो पंडित हों आन वस भटवों अकाथ में ॥ चिंतामनि कहे के सो कवि पद पाऊँ जोन कवहुं गुविंद जखो गाऊँ गुन गाथ में ॥ पतित वनाइ भयो वा त जो वनाइ की सो पतित पावन परमेश्वर के हाथ में ॥६९॥ दोहा ॥ बहु वाक्यन को अर्थ जे एक वाक्य में होइ ॥ याहुं प्रौढ समास यह वरनत है कवि कोइ ॥७०॥ अनेक वाक्यार्थन को एक वाक्यार्थ करि कथन रूप समास गुन को उदाहरन दो बाल अधर रद उरज हर वि बीज फूल फल ऊँद ॥ वैस संध्य में दा डिमी लई विचारी लट ॥७१॥ या विधि के वै चित्य में अलंकार कछु होइ ॥ एजो वर्नत अर्थ गुन समुझौ सुतौन कोइ ॥७२॥ साभि प्राय पदनि कथनि वोज अर्थ गुन कोइ ॥ अपुष्यार्थ पद दोष को इहाँ अभवे होइ ॥

६४॥ साभि प्राय वोज को उदाहरन ॥ कवि ॥ हौं तो हों अनाथ तुम नाथ नैं नाथ हों जू दीन तुम दीन वंधु नाम निरुकी नो हों तो हों पतित तुम पतित पाव वेद पु रान वरवान कछु कह्यो नानदी बहे ॥ कव करी सेव हों जो कहा मेरी सेवा रीके आप हीत आपरो के चिंतामनि लीने ॥ अवतु में मेरी रक्षा करवे ही परी राम रावे ही मोहि नित जाँतो जे रि दीने ॥६५॥ दोहा ॥ जहाँ अधिक पद परत नहिं विमला बवाजु प साद ॥ सुतौ अधिक पद दोष को कह अभव अविवाद ॥६६॥ अर्थ गुन प्रसद को उ दाहरन दो कुंदन दरपन तूलित तनु वसन कुसुमी रंग लसत लाल मनि के लसी ला ल वाल सब अंग ॥६७॥ नयो उन्नवै चित्र जो सो माधुर्य निहारि ॥ यह अलंकार गुन दोष की इहाँ अभव विचारि ॥६८॥ चोषी च रखा ज्ञान का आही मन की जीति ॥ संगति सजन की भली नीधी हरि की प्रीति ॥६९॥ संगल मय कोमल अरथ सुक सखा वला नि ॥ असंगल्य अस्लील को यह आव मन

बीन  
अधर

साभि प्राय

आनि॥७०॥करि लीजें उत्तम क्रिया हरि  
पद प्रीति विशेष॥रहत सदा उत्तम पुरुष  
या जगकी रति सेव॥७१॥अर्थ बीज अ  
गनामता उदारता सो जानि॥समाप्त दोषको  
सृजन दूति दूहो अभोवे मानि॥७२॥सो  
हि मैत चंडाल यह अदय महा दुखदेत॥  
सुंदरि सो तोपर सद्य भलो भाग इत हेत  
७३॥जाकौ ऐसो रूपहैं तेसो वरनो होइ॥स्व  
भावोक्ति अलंकार यहु अर्थ व्यंग जोकोइ॥  
७४॥कवि॥लालसौ जटित लसे ललित  
लदन बीच लाल मुख लटकन ललित ल  
लाटको॥वडी वडी आंखें नीकी नाक मध्य  
भालकात वडी भुजा हल अनुल छवि टा  
टको॥चिंतामनि सोहतहैं अति अभिराम  
तन दूदी वर स्याम मन हरन निराटको॥  
चेरी हम तेरी वड भागिनि जसोदा किलक  
नि लखि टोटाकी बटोही मोहें वाटको॥७५॥  
दोहा॥रसनथ्यानि गुनि भूत पुनि व्यंग जहां  
रसुहोइ॥सुनो दीप रस रूप वह कांत वावा  
नत सोइ॥७५॥रस धुनि गुराी भूत व्यंग  
को उदा हरन॥आगे कही वाक्य भेद निर्ग

य विषे॥क्रम कौटिल्यजो अप्रगट उपमां  
दिकका जूति॥जो बटना यह अर्थकी त  
हंलेष की उति॥७६॥कवि चातुरी विचि  
जता यहगुन केों करि होइ॥अक्रम भंग  
अभाव वह अर्थ व्यंग्य गुन कोइ॥७७॥  
अम्लेष गुनको उदा हरन॥कवि॥सक  
पलका पै वैही सुंदरि सलोनी दोऊ चाहि  
को छवीलो लाल अयो रति केलि घर  
चिंतामनि कोहे आनि बढ्यो प्रीतम पै काहें  
सां काछन कदि को सकत दुहंके डर॥सुख  
के मजादने को रेकको दिवायो नाहं दि  
परीतरति को स्वरूप लखि चित्रपर॥जौलौ  
वह सवुचनि आंखें मूदि रही तौलो व्या  
र पान व्यारीके उरोज कर पर॥७८॥वैध  
व्यको उदा हरन॥दोहा॥अरुन उदय रवि  
होतहैं अरुने अषट्क आनि॥संपति वि  
पति बडन को रसो आमसों जानि॥७९॥  
अजोत अर्थको उदा हरन॥दोहा॥चंद दि  
पत रमनीय रति सरद विमल नभस्यां  
म॥मानो कौरव सनि लसत हरि उरमें  
अभिराम॥८०॥अन्य छाया जोनि को उदा

हरन॥दोहा॥चाप मुकुट पट तडित विग पां-  
ति मुकत में दाम॥कनक लता लखिऊनयो  
आइ दूते धन स्याम ८१  
द्वितीया चिंतामनिकवि रचिते कवि कुल  
कल्प तरो पथमं प्रकारां १ अथ अलंकारः  
॥दोहा॥

शब्द अर्थ गति भेदसों अलंकार है भांति  
अलंकारा आदिक शब्द अलंकार की पां  
ति॥१॥वक्रोक्ति अथु प्रास पुनि कहि लो  
रा नुप्रास॥जमक स्लेषो चित्र पुनि पुनैरु  
क्ति बंदा भास॥२॥सात शब्द अलंकारये  
तिलमें शब्द जोहोइ॥ताहीने पजय पहादि  
येन भासे कोइ॥३॥अलंकार ज्यों पुरुष  
के हारादिक मन आनि॥प्रासो पत आदि  
क कवित अलंकार ज्यों जानि॥४॥वक्रो  
क्ति नुप्रासल॥और भांतिको वचनजे  
और लगावे कोइ॥कैस्लेषकै काकासो व  
क्रोक्तिहें सोइ॥५॥स्लेष वक्रोक्ति कोउद  
हरनदो॥ए दृष्ट भानु सुता निशि विचार  
जामुने ससु भेंन॥स्त्रिद्वि जीवन चातुर्व  
यन कीन्हो गुरु मेन॥६॥काय वक्रोक्ति को

वक्रोक्ति

हादिक  
प्रास पत

कै स्लेष  
कै काका  
वृषभनु

उदा हरनदो गुरु कवस परदेस पिय आ  
यो ललित वसंत॥अलि कुल कोकिल  
मा विना नहि रंहै सरिकंत॥७॥अनुर  
प्रासको लखना॥समता जो आदरन की  
अनुप्रास जो जानि॥छेक कृति है आते  
सो है विधि ताहि कवनि॥८॥छेक अनु  
प्रासको लखनादो लखिनेहो आदरन की  
वारक समता होइ॥चिंतामनि कवि का  
हत यों छेक काहोवे सोइ॥९॥छेक अ  
नुप्रासको उदा हरन॥दोहा॥जो अनेक सुखा  
भा सदस मधुर भेद मुसक्यानि॥वृत्त जी  
वन आनंद धन नंद नंद लखि आनि॥  
१०॥वृत्ति अनुप्रासको लखना॥हो॥एक अने  
काक्षर रचत बार बार सर होइ॥चिंताम  
नि कवि कहत है दृष्ट काहोवे सोइ॥११॥  
वृत्ति को उदा हरन॥कवित॥तेसुनु कूरव  
रेखर बाहरखरे खरके दिग तोहि पठैहें॥  
मूरखतेरीया दुर्गम लंकाहि खेलहिमें रघु  
नंदन सेहें॥\*॥\*॥मुंडकी माल दियाइ म  
हेस सों संपति राम छिडाइ सुलैहें॥कुंड  
ल मंडन मंडित मंजुल मुंडकी माल महे

ता बिन

माला

कुर  
खरे खर

राकौहैं॥१२॥अथरतिभेद-हो-माधुर्यो विजवाव  
रन उप नागार को होइ॥मिलि प्रसाद पुनि  
कोमला पुरुषा वोज समोइ॥१३॥विदभी पंच  
लज्जा मोडी थरम नवीन॥रीति काहत कोउ  
उन्के दृति जेहैं समीन॥१४॥उपनागरिका  
दृति को उदाहरन-हो-छकि प्रनंद रति रंग के थति  
त अंग सुकुमार॥मग यग मंद गवंद रति थ  
रति तरुनि कुच भार॥१५॥कोमला को उदाह  
रन हो-कौहू को विसरीत काहों वह मुसकरानि अ  
नूप॥लग्यो अरी हियरा लग्यो ललित लाल को  
रूप॥१६॥खान पान परिधान सब ज्ञानन वि  
संखो बाल॥थौ माही तुम को निरखि तुम नि  
मोही लाल॥१७॥पुरुष दृति को उदाहरन॥थ  
नादारी॥उदय रविकरत तमरासि सहरत म  
न ध्यान के थरत तमरास फांटे॥परम किर  
पाल प्रभु पलक पाइन परत प्रीति करि पुन  
कै पुंज पौटे॥नाम के जापसों अमाप संपति  
कौरे प्रवल परताप की टाट टाटे॥विधन अति  
सधन अथ सधन वंकाट निपट विवाट संकाट  
कटक प्रकाट काटे॥१८॥लाटानु प्रास को ल-हो-  
तात पंथ के भेद ते दीन्हो जो पद देश सो लाटानु पास है

ह तीन  
शक्ति अंग

वितर्यो

समुभास जने लेइ॥१९॥लाटा मुद्रास को उदा  
हरन॥\*॥तोमें दोष कर नहीं होत न संको  
पर तोष॥दोष जु देखत आपुमें रहे तिरारी  
दोष॥२०॥जमक को उदाहरन॥अथ होत अ  
न्यारयक वरनन को जेहैं होइ॥फिर अवन  
सो जामकाहि वरनन यों राव कोइ॥२१॥जम  
क को उदाहरन॥चंदन नख सम सन परति  
चंदन जेट अमोज॥कुंदन रद सन लुति निर  
ति कुंदन रद सन समान॥२२॥फुली पोनि पु  
ती सुरभि कौलित रावन॥काहे जाल लह  
लहे लही छवि धन॥शाबत को बिल बानी  
यस मदन धन॥मदित समन कोहे मधुप  
गल॥२३॥पद अभिन्न भिन्न रथ को वाहन न  
हो अश्लेष॥बाको हत उदाहरन र गह रुक  
वि रुवि सेष॥२४॥मास रसी लखन विरह  
गोषम अरतु को घाम॥जीवन तामे अलपहे  
सुधि लीजे धन स्वाम॥२५॥हा बुद्धि को ला  
लम विरह वृक्ष भयो वरजो॥घली लही  
वन की धमका धरव्यो नहीं काडो॥२६॥दे  
पर खेलत है काहों जगहो अति दयाइ॥ल  
ल जानहे हाथने अरी लुकी मरु हाइ॥२७॥

नोट  
१२-१३ शक्ति  
१४-१५ शक्ति  
१६-१७ शक्ति  
१८-१९ शक्ति  
२०-२१ शक्ति  
२२-२३ शक्ति  
२४-२५ शक्ति  
२६-२७ शक्ति



कविता॥ वसन दिशाहि और वासन कपाल  
कर विषो खादू रहै पेनहोत हिय जानिये  
चिन्तामनि कोहै ऐसी रीतिहोइ दुसकादीन  
कोऊ गौत भोले जाको सांजी बात मानिये  
नाथन पहार पर राहत जतीको बेध सोय  
भूत संगपेन संका उर आनिये॥ भसमसंग  
वै रहै रहै शूल धरै सदा जाको गिरा जाई धन  
ताकी एही शूल जानिये॥ २॥ खड्ग आदि  
कर वरन काम धेनु है आदि॥ चित्राखंड  
त बहुत विधि वरनत सुकवि जनादि  
जोर जोर पर पीर हर सरवर धर धर धीर  
मेर सर पर ढेर कर सर कर धर नर धीर॥  
३॥ खड्ग बंध कापाट बंध कमल बंध कायम  
ति गोमूत्रिका बंध दूतने बंध या दोहामें देखि  
ये॥ दोहा॥ एक छंदमें छंद बहुकाम धेनु है सो  
द॥ बहु छंदन भारवों बहुत यहौ कहत कविको  
द॥ ४॥ काम धेनुको उदा हरन॥ सवैया॥  
रुसरो सह नैन स मोहत पेधिय सांजोरोहि  
सुहाई॥ साजत नैननि चैनजे जोहत रोहि  
ये देख अजाके गनाई॥ सीपात सो गन जेस  
न मोहत रोहिंये सीमन को लल मारी॥

जना रित्त सैनजे मोहत देखिय कपड  
काहाई॥ ५॥ सर्वतो भद्रा मानिजे  
कारिके मति रामें जेये वों कहीहि को सु  
वसो॥ मानिजे हितही भरिके जगदोमे  
दुखवों मोहोहै चली नवसो॥ जगति नित  
ही धरिके अतिही रति तामें चहुँहेनला  
अवसो॥ धरिकें नितही धरिकें नितही  
जये वों गहीहै गली अवसो॥ ६॥ रंज  
मिने पदम में सका सो जाहो जय जय  
चिन्तामनि कवि कजलसो पुन पदम  
७॥ नन सवरन कायन सुखन चन गन  
सब वार॥ जौये सरसी औरसी जगद  
८॥ खड्ग चित्र दून स मय जगद  
वित यहि चानि॥ जेनेहें कवि हीनें जय  
चित्र सोमानि॥ ९॥ सधन धित नन  
मुभा राव अर्थ धित जानि॥ जगद जगद  
हि विधि गये विद्या नाथ बहाई॥ १०॥  
द्वितीय मान चिन्तामनि विरचित  
वि कुल काल्य तरो गाय जगद  
रूपन नाम दितीये जगद  
मिने विधि पर गन जगद

CMKA  
p. 100  
गौत

चिन्तामनि

अवसो

गुन

गौत

गौत

गौत

गौत

रिजा पौर ॥ एक विनायक करत है एक वि  
नायक सौर ॥ १ ॥ जाँमें मंजुल आनसों स  
मता वरनी होइ ॥ वरणी मान दाछु वस्तु जो  
पमा कहिये सोइ ॥ २ ॥ सो पुनि श्री श्री आ  
रथी है विधि चित्तमें ल्याय ॥ पूरन लुप्रा मे  
दने होऊ दुविध गनाय ॥ ३ ॥ ज्यों आहिक  
पदके दिये श्री श्री उपमा जानि ॥ सदस कृत्य  
पदके दिये होति आरथी आनि ॥ ४ ॥ उप  
मा नो उप मेय पद उपमा वाचकी होइ ॥ आ  
र साधारन धर्म यह पूरन उपमा सोइ ॥ ५ ॥  
शब्दा पूर्णो उपमा को उदाहरन ॥ नाह चचाहि  
विरहते आइ अचानक रोह ॥ दया लीचकी  
बेलि ज्यों उमडि वरस जल मेहदेक श्रीय  
दु नंदन द्वारिका नाथ विभूति महा कविको  
वरने दियो ॥ श्रीपति आपही दु भात है अरु दे  
खि महा छवि री भात है यों ॥ लालन के भात  
रीनिको मंदिर सुंदरी वंदन सों भाल के यों ॥  
लाल सलाकन सों जकारे विलसै सुनियान  
भरे पिंजरान स्यों ॥ ७ ॥ अर्थी पूर्णोपमा को उ  
दाहरन ॥ दोहा ॥ बल काल चौर जटा धरे का  
गा जर के तीर ॥ राम लखन होऊ जाने भये रि

पिनके तल ॥ ८ ॥ जहां एक है तीनिको लोप  
चारिमें होइ ॥ चिंतामनि कवि बहत है लुप्रा  
कहिये सोइ ॥ उपमान लुप्रा ॥ चिंतामनि मनु  
जगत में दूढ़ फिरौ चहु ओर ॥ तोसम मोस  
न मोहनी कोनि तरुनि सिर सौर ॥ ९ ॥ उप  
मेय लुप्रा ॥ सुललित खंजन से चपल दस  
त रहत वैचित ॥ तिन परनिवृत्त वरि करे न  
न मन सब काछु विज ॥ १० ॥ धर्म लुप्रा ॥ वदव  
चंद सो तरुनिको ओर सुधासे बैन ॥ चंदि  
क सी हासी लसे वंदी करसै जैन ॥ ११ ॥ वाच  
की लुप्रा ॥ सजल जलद अभि नाम तनु त  
डित ललित पद पीति ॥ नंद नंदन सखि चं  
दमुख चोरत चित नव नीत ॥ १२ ॥ जित य  
कहि व उपमेय जहं से उपमान अनेक ॥ सोमा  
लोपम जानिये भिन्न धर्म के एक ॥ १३ ॥ अ  
भिन्न धर्म मालोप को उदाहरन ॥ वाकित ॥ सरद  
तें जल की ज्यों दिनतें कामल की ज्यों थनतें  
ज्यों थल की निपट भर सार्दे है ॥ थनतें सांव  
न की ज्यों वोपते रतन की ज्यों गुनतें सुजान  
न की ज्यों परम सुहाई है ॥ चिंतामनि कहै आ  
छे अक्षरनि चंद की ज्यों निशा गम चंद

की ज्यों दृग सुख दाई है ॥ नरालें ज्यों कंचन  
 वसं ज्यों वनकी यों जोवनलें तनकी नि-  
 कार्य अधिकार है ॥ १५ ॥ भिन्न धर्म मालीप  
 मालीप हारन नक माली ज्यों मोदकों यदा  
 वीत सहज वास सुधा ज्यों जिवाइ देकी  
 जातन धरति है ॥ चिंतामनि चारों वार कारांत उ-  
 ज्यारी प्यारी चंदिका ज्यों मेरी चित चाडून  
 भरति है ॥ करारी ज्यों मंद चारु चलति मय  
 क सुखी मंद राज्यों मोहि महा मोहित क  
 रति है ॥ प्रान ज्यों सुंदरि नेकु हिये तें रति  
 नाहि नाद ज्यों नवेली नैन कोर विह रति है  
 ॥ १६ ॥ दोहा ॥ दूत साधारन धर्म बुद्धि जान के  
 भांति गनाइ ॥ वस्तु और प्रति वस्तु से काम  
 विंदोज बनाइ ॥ १७ ॥ एक अर्थ द्वै शब्दों ज  
 ह कहिये द्वै वार ॥ क ही वस्तु प्रति वस्तु यह  
 भावसु बुद्धि विचार ॥ १८ ॥ एक शब्दों अर्थ  
 जुग जहां वरवान्यो होइ ॥ तहां विंव प्रति विंव  
 यह भाव कहै कवि कोइ ॥ १९ ॥ वस्तु पवस्तु भाव दो-  
 निज तनु तें पिय तनु परसि ज्यों सुख अधि-  
 क उदीत ॥ आपुन तें पिय पर सरवी अधिका  
 प्रेम न्यो होत ॥ २० ॥ विंव प्रति विंव ॥ नाह वचा

ई विरह तें आइ अचानक गेह ॥ दवा वीचकी  
 वाल ज्यों उमड वरस निरस मेह ॥ २१ ॥ प्रथम हि  
 जो उपमेय वह प्रति उपमान जु होइ ॥ वस्तु औ  
 र्यों कामजु यह रसने पम है सोइ ॥ २२ ॥ भावि  
 सम मूरति मधुर अरु मूरति तरस न भाज  
 ते जन सहित समाप्त हो श्री अजय सदा ॥ अजेय  
 ॥ २३ ॥ वचन तुलित मन मन तुलित रुक ॥ वि  
 राजत काल ॥ काज तुलित निराल रुजत  
 सतत साथ सिर नाज ॥ २४ ॥ अन्वय कोर रुक  
 ॥ २५ ॥ दोहा ॥ कहिये जो उपमेय अरु वह है जहां  
 उपमान ॥ ताहि अनव्यय कहत है पंडित सु-  
 कावि सुजान ॥ २६ ॥ हियो हरत अरु करत  
 अति चिंतामनि चित चैन ॥ वा सुंदर को मेल  
 ये वाही कैसे नैन ॥ २७ ॥ जहां वराय उपमान  
 को बदलो वरन्यो होइ ॥ उपमेयो उमान क  
 हि वरनै है सब कोइ ॥ २८ ॥ नैन कमल से क  
 मल से लगत नैन छवि भार ॥ वदन चंद से  
 वदन से चंद्र प्रभा विलार ॥ २९ ॥ सदस धर्म  
 सो अन्यता समावन यों होइ ॥ वराय भानु का  
 छु वस्तु को उत्प्रेक्षा कहि सोइ ॥ ३० ॥ उत्प्रेक्षा  
 दवाय अरु प्रतिय माना और ॥ विनो आ-

दिपदविन गनो प्रतिपत्ति माना ठौर ॥३७॥ जाति  
क्रिया गुणद्वयकी जोहे अर्थ्य वसाद ॥ ताको  
विषय सुनो इहे चोविधदिविध गनाद ॥ \* ॥  
३७॥ चोविध चिंतामनि कोहे अर्थ्यवसाद वना  
द ॥ क्रमतेदिविध सुजोगर विद्यानाथ गनाद  
३८॥ ताकिभाव अभाव को वाच्या गम्यों जानि  
हेतु वाच्याता गम्यता वाच्यादिविध वरवानि ॥  
३९॥ तेजात्यादि स्वरूपकोहेतुहिको फालरूप ॥  
अर्थ्य वसाद विषयसुयो भेद बहुत जे अरु  
प ॥ ४०॥ वाच्या उत प्रेक्षा विषय हेतुका फा  
ल जित होद ॥ वाच्यों होद निमित्त जित ग  
म्य तहां नहिं सोद ॥ ४१॥ जातें वाच्य स्वरूप  
को उत्प्रेक्षाही मांह ॥ वाच्य गम्यता अर्थको व  
रनी विद्या नांह ॥ ४२॥ उपात्त गुनि निमित्त जा  
तिभाव स्वरूप उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ विसद रूप हि  
य रामकुत विलसत कच उतमंग ॥ जनु य  
मुना जल पूर पर भल्लकात गंगातरंग ॥ ४३॥  
उपात्त क्रिया निमित्त जाति भाव स्वरूप उ  
तप्रेक्षा ॥ दोहा ॥ जघन पुलिन परहीर मनि  
जडित किंकिनी कोति ॥ फौलति बोलति मधुर  
जनु कल मराल की पंति ॥ ४४॥ अनु पात

गुन निमित्त जाति भाव स्वरूपो त्येक्षा ॥ दोहा  
वदन वंदु समहीर मनि वार सुकात चहु ओ  
रा ॥ सुद्ध विंद सुंदर मनो वंदुवाल जनु छोर  
४५॥ अनु पाति गुन निमित्त जाति भाव स्वरूप  
उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ लखे नयन सुंदरिनके  
श्री घन स्याम सकाम ॥ विलसति कंचन  
वेलिवन जनु खंजन अभिराम ॥ ४६॥ उपा  
त गुन निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्येक्षा ॥ दोहा  
श्री हरि वचन प्रमान जग की वेधम प्रका  
स ॥ यह समभात अव करत लख लख ज  
वन विनास ॥ ४७॥ उपात्त क्रिया निमित्त जात्य  
भावस्वरूपो त्येक्षा ॥ दोहा ॥ पंचानन चरचा  
वारत सुजत शंभुको दास ॥ पाषाण मंतग चटा  
मनो पावत भयन विनास ॥ ४८॥ अनु पात  
गुन निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्येक्षा ॥ विदित  
विभव यह यों परसु जाके उर निसि दाहि ॥ \*  
दुख चमर आयु धन विन भूपनि भू जनु  
नाहि ॥ ४९॥ \* ॥ ४९॥ अनु पाति क्रिया  
निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्येक्षा ॥ दोहा ॥ दु  
र्जन दुर्जनता प्रगटि सकात न हिये ससोवा  
राम तेज मानो मयौ अखिल अखल यहल

२१ मी १०

दिपदविन

See  
P. 95  
CMKA

क॥४५॥जाति हेतु त्पेक्षा॥श्री गिरिजा के ध्या  
नते ज्ञान होत मन भरी॥पदनाव विधि अ-  
वलोकित जनु होतु अंधारी दूरि॥४६॥जात्य  
भाव हेतु त्पेक्षा॥मही माहा नहिं कल्प तरु  
यह करि हिये विचार॥जनु सज्जन प्रति पा  
लको कान्ह लियो अवतार॥४७॥जाति  
फलो त्पेक्षा॥दोहा॥कालिंदी जल गोपिका  
जल मुख छवि अधि कात॥कान्ह भौन सु  
ख रूप लखि जनु फूलें जल जात॥४८॥  
जात्य भाव फलो त्पेक्षा॥दोहा॥चंद्रमुखी यों  
चंद्रिका में कीन्हो अभिसार॥जनु क्षीर धि-  
अधि देवता को ध्याधि संचार॥४९॥क्रि-  
या स्वरूपो त्पेक्षा॥दोहा॥कुटिल कूवरी आ-  
पने तनमें मन अटकाइ॥जनु हंदावन आ-  
गमन हटवैयो हरिको आइ॥५०॥क्रिया हे-  
तु त्पेक्षा॥दोहा॥सुंदरि मों है धनुष धर तो मन  
वास अनंग॥लोचन वॉन हनें मनो व्याकुल ह  
रिके अंग॥५१॥क्रिया भाव हेतु त्पेक्षा॥दोहा॥वा-  
दिनेतें मृगलोचनी ललित भई पियराइ॥निज  
छवि अने देखे मनो वदन कमल कुहिलाइ॥५२॥  
क्रिया फलो त्पेक्षा॥दोहा॥कंदो दीन जनु वदन

तेज हीं राम यह नाम॥मानोत प्रति पालको तव-  
ही पंहुचे राम॥५३॥क्रिया भाव फलो त्पेक्षा॥सब अ-  
वतार प्रपंच मय आपु आत्मा शुद्ध॥कालि प्रपंच  
अन लखन को मनो ध्यान मय बुद्ध॥५४॥गुण स्व-  
रूपो त्पेक्षा॥दोहा॥सांभा धेनु गन दुहन की गुरु  
रजन गंभीर॥खगन नचाइल तान की रस  
मुरज ध्वनि थीर॥५५॥गुण भाव स्वरूपो त्पे-  
क्षा॥दोहा॥राम चंद्र की को भुदी की रति विद  
त उदार॥स्वत दीप कीन्हो मनो यह सिंगरो सं-  
सार॥५६॥लाल और के ध्यान जनु कान्ह न  
हावत लाल॥सुंदरि तें जों वस किये सुंदर  
स्याम गमाल॥५७॥गुण भाव हेतु त्पेक्षा॥दोहा॥  
श्री नारायण वदन विधुलखि दुष मिटत असेष  
जाते जनु सब तव परषटग कुवलय अन मेघ॥  
५८॥गुण फलो त्पेक्षा॥दोहा॥साधु सुदामा को-  
रई संपति स्याम निवाहि॥उन सेवा कीन्ही भ-  
ली मनो इंदु सखि चाहि॥५९॥गुण भाव फलो  
त्पेक्षा॥दोहा॥देत असाधुन साधु गति यों हरि नाम  
निवाहि॥मनो कियो उन की रतन पाप अभावे  
चाहि॥६०॥द्वय स्वरूपो त्पेक्षा॥दोहा॥चंद्र दिप-  
त रमनीय रूचि सरद विमल नभ स्याम॥मनो

कौस्तुभ मनि लसति हर उरमें अभिराम॥६१॥  
 द्रव्य भाव फलो त्पेक्षा॥६२॥ उमडि विंदु की  
 भांति सौं हरि रवि ससि संचार॥तिमिर अच-  
 ल कीन्हो मनो जग अकास संधार॥६३॥  
 द्रव्य हेतू त्पेक्षा॥६४॥ औषध पति दुज राज  
 धन ग्रीषम ऊँख समीत॥चंद्र करस भौनों  
 कियों सकल जगत मय सीत॥६५॥ द्रव्य भा-  
 व हेतू त्पेक्षा॥६६॥ जल धर मद जल गजन  
 जनु किय सीस सूर अभाव॥जाने जात न रा-  
 ति दिन प्रावस चतु परभाव॥६७॥ द्रव्य फा-  
 लो त्पेक्षा॥६८॥ यों पैली है चंदिका महि अं-  
 वर अव गाहि॥मानो उमड़ो छीर निधि चं-  
 द नंद नहि चाहि॥६९॥ द्रव्य भाव फलो त्पेक्षा  
 दोहा॥ मदन दहन यह जानि यह मदन सहा  
 यक आहि॥धरे भुजंगम नहम लय अनि-  
 ल विनासहि चाहि॥७०॥ यों उत पेक्षा में कि-  
 यो विद्या नाथ प्रकार॥उपमा हूं मैं करि सका-  
 त यह क्रम का संचार॥७१॥ उत पेक्षा संभा-  
 वना वस्तु हेत फल रूप॥उक्ता नुक्ता प्रथम  
 ये कहत एक कवि भूप॥७२॥ सिद्धा सिद्धा  
 स्पद बहु रिधि विधि औ निरधारि॥सुभग कु

कलया नंदमें यह क्रम कियों चिचारि॥७३॥ उ-  
 क्ता स्पदा स्वरूपो त्पेक्षा॥७४॥ सुख विधु लखि  
 कुच कौक जुग यह विरहाग प्रकास॥रोमाव-  
 लि जनु लई उन दुखन सधूम उसास॥७५॥  
 अजुक्ता स्पदा हेतू त्पेक्षा॥७६॥ वर सत अंज-  
 न नभ मनो तमली पत जनु अंग॥स्यामा स्या-  
 म स्वरूप धरित कैं स्याम कौ संग॥७७॥ ति-  
 द्वा स्पदा हेतू त्पेक्षा॥७८॥ सुंदरि भूमि धरे म-  
 नो लाल निहारे पाइ॥मुख समता वृक्षामनो  
 विधु लखि कमल रिसाइ॥७९॥ सिद्धा स्पदा व-  
 स्तू त्पेक्षा॥८०॥ कुच जीतन कौ हेम गिरि  
 शृंगानि सौं संनद्ध॥भार गहन कौ कनक जनु  
 दामन वद्ध निवद्ध॥८१॥ असिद्धा स्पदा फलो  
 त्पेक्षा॥८२॥ सूरज सनमुग व जल वसत सह-  
 त सदा दुख कंज॥सुंदरि पग साजे अन्य को  
 करन मनहुं तप कंज॥८३॥ प्रतीप मानो त्पे-  
 क्षा को उदा हरन॥कविता॥ अलि मनो हर दं-  
 तिके अलिंगन परवारियत त्रिभुवन सुख-  
 मा सुखे खहै॥चिंतामनि कहै कवि कौ से कहि  
 सकै कोऊ अद्भुत कुरूप रचना अलोरखे ॥  
 सुवरन लता है तमाल सूर तह संग घन सदा



म संग थिर दामिनि विशेष है ॥ राधाजू को दीपि  
देव वनिता वरवानती है ॥ हरि उर निरख परवा  
न हेम रेख है ॥ ७४ ॥ स्मर मरना लंकार को ल  
दोहा ॥ सदृश वस्तु अनवे सदृश वर त्वत्तर को  
ज्ञान ॥ स्मरन बोलत विबुध जन सम भौ सु  
कवि सुज्ञान ॥ ७५ ॥ स्मरना लंकार को उदा  
हरन ॥ दोहा ॥ दृगन सुधा वरवत सरद रावा  
चंद निहारि ॥ सुधि आवत वा वदन की जाप  
र हौ बलि हारि ॥ ७६ ॥ जह विषई अस विख  
य को वरन्यौ होइ अभेद ॥ अलंकार रूपक  
तहौ सम भौ सुजन अवेद ॥ ७७ ॥ जो अति  
रोहित विषय को उपकारक जो होइ ॥ विष  
ई सो रूपक वरन यौ वरनत कवि कोइ ॥ ७८  
पुनि इत सा वयव अस निर्वय वस्तु प्रकार  
द्वै विधि सा वयव पुनि त्रिविधि वरनत वि  
मल विचार ॥ ७९ ॥ सरव वस्तु विषयक प्रथ  
म वरनत सुकवि विचारि ॥ एक देस विचर  
त अपर परं परित निरधारि ॥ ८० ॥ निरवय  
वो पुनि द्विविध गन केवल माला रूप ॥ दू  
के देत उदा हरन सुनिये सुजन अनूप ॥ ८१  
सर्व वस्तु विषय को उदा हरन ॥ कवित्त ॥ को

किल कपोत कीर कुलानि कोकल कल भारी  
कोला हल दिसि विदीसि मै छाये है ॥ न  
ए राते पातए पताका पाह रात मनि पुहुप  
ग थूर अमर उडयो है ॥ भौर मोते मान गढ़  
गंजन मतंग छूट मोहन सौ रूसी मत कौन  
मन भायो है ॥ आली महा वली रति पाति म  
ही पाति को सोरिनु पति सेना पाति सेना साजि  
आयो है ॥ ८२ ॥ रूपक कोराधारन उदा हरन ॥  
कवित्त ॥ जाहि मिलि नैन नील वामल रबुले  
हैं कान मुकुत नखत पर वारको विचार्यो है  
परम मथुर सुसवयानि कौमुदी सौ बडो सु  
ख सा राख बारि ज्ञान को विडार्यो है ॥ निर  
खत सदन को सब वरवत को हिये हवरवत  
हरि आन निरधार्यो है ॥ चिंता मनि कोहे चखच  
कोरन को आनंद मुख चंद राधिका मुकुंद को  
निरार्यो है ॥ ८३ ॥ एक देस विवर्ति रूपक को उदा  
हरन ॥ दोहा ॥ सरद सिंहा सन चमरिका स  
जल जलज कर अत्र ॥ किरनि माल मुकता  
वली विधु अनंग सिर छत्र ॥ ८४ ॥ परं परित  
को लछन ॥ दोहा ॥ जहां एक आरोप में आरो  
पान्तर होइ ॥ परं परित रूपक तहौ अर्थावधि

तिहिंकोइ ॥ ८५ ॥ लिख विसेषन होइ कह और  
अलि हनिहारि ॥ माला रूपक परं परित रूप-  
क सुभग विचारि ॥ ८६ ॥ शिलस विसेषन प  
रं परित को उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुंदर नंदन नंद  
को रूप जितो जनुकांभ ॥ गोपी फूली हेम  
तन वेलि रसिक अलि स्याम ॥ ८७ ॥ शिलस  
माला परं परित को उदाहरन ॥ दोहा ॥ जीवन  
दायक स्याम घन गोपी पदमिन मित्र ॥ संध  
रूप महरन काला निधि श्री गोविंद विचित्र ॥  
८८ ॥ अशिलस विसेषन माला रूपको उदाह  
रन ॥ वृज जन सुरगल कल्पतरु मन अनंदत  
रु कोद ॥ सुखभा सलिल समुद्र हरि लोचन कु  
वलय चंद्र ॥ ८९ ॥ दूसरो उदाहरन ॥ कविन ॥  
मन कुल मंदाकिनि जलकी कमल महा राज  
महा विमल प्रकाशित विविधि नय ॥ दुंदिवाव  
न अरविंद नैन दूंद मुख दूंदी वर दल दाम सुं  
दर सदा सदा ॥ चिंतामनि मुनिमन मोरकेन  
वीन धन सीता नैन मीन सुधा समुद्र अनंद  
मया कौसल्या कल्प वेलि संभव सुमन राजा  
दशरथ दूध निधि चंद्र राम चंद्र जय ॥ ९० ॥  
निरवयव केवल रूपको उदाहरन ॥ दोहा ॥ ४

ललित अलक मुख चंद्र पर मनकी यहा अगो  
द ॥ विहसौं हैं चंचल नयन भीने अंचल कोटा ॥  
९१ ॥ निरवयव माला रूपको उदाहरन ॥  
दोहा ॥ दर पहिरी कंदर पकी यनवी सह नम  
साल ॥ भागीनि की अधि देवता कौन अरु  
ही बाल ॥ ९२ ॥ परनामालंकार ॥ दोहा ॥ लखि  
विषद विषयात्मके कारण पलाति उप नारा  
रूपकते परनाम जो भिन्न कहत कवि लोग ॥  
९३ ॥ वृज वासिने जगत पर और सभा दिन  
जानि ॥ कल्पद्रुम तिनको भयो आपु अज  
न्मा अनि ॥ ९४ ॥ जहाँ विषे विषद सुभगा  
वि संमत मत ताहि ॥ सेदेहास्यद होत है कवि र  
संदेह तहांहि ॥ ९५ ॥ प्रथम कहत निश्चय गर  
भ निश्चय यांत पुनि जान ॥ अलंकार संदेह य  
ह सजन द्विविध मन अन ॥ ९६ ॥ दर्पन थोयो  
ललित वात ससि थों किते कलंक ॥ अंगुज  
थों विलास यों त्रिय मुख लखि मनसंक ॥  
९७ ॥ निष्प्र गांत को उदाहरन ॥ सवेया ॥ खंज  
नहीं थों उडातन अंबर बांज है थों पिरना नहिं  
चीन्हें ॥ भृग है स्यागल स्वेतन वदूथों मीन हैं  
नैनन मोद जू दीन्हें ॥ कामके वान थों पांचर

सुनेहमय अवचाथलदै विन कीन्है ॥ नैनन  
चैनकोरै निरखैं अति नैनीति नैन स जानि जु-  
लीन्हैं ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ जहाँ होतुहै प्रकृतिमें अ-  
प्रकृतिहि कौं ज्ञान ॥ भौति मान यासों कहत  
पंडित सुकावि सज्जान ॥ ६९ ॥ फटिका महल  
चदि विधु मुखी देखत श्री नंद नंद ॥ काहेषो  
सखीसों हरि चलै ऊपर आयो चंद ॥ ७० ॥  
अपनुत ॥ विषद को आरोप कौ करि जो वि-  
षय निषेध ॥ ताहि अपनुत कहत हैं धर्म-  
हि समुझि समेध ॥ ७१ ॥ कविता ॥ वारन मत्त  
विदार्यो महा तम देखि महा तमकी अधिका-  
र्य ॥ अंकमें मारि गह्यो कर सायल जानत लो-  
क कलंक करार्द ॥ मानसकै सेवै मृग लो-  
चनी कान्ह समीप वसै तो भलार्द ॥ आवत ऊ-  
पर मंदहि मंद सों दूद नहोपम गेंद है मारद ॥ ७२ ॥  
उल्लेख को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कहं ग्राहक के  
भेद कहु विषय भेद सो होइ ॥ एकहि को उ-  
ल्लेख बहु कहि उल्लेख जु सोइ ॥ ७३ ॥ नाम  
भेद उल्लेख को उदाहरन ॥ दोहा ॥ दीन दया र-  
जल कौ जलधि सकल कामिनी काम ॥ कहत  
भक्त जन कल्पतरु रामहि रिपु जम नाम ॥ ७४ ॥

विषय भेद उल्लेख को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कह-  
त स्याम को कल्पतरु पूरन लखितव साध-  
दीन दया निधि सब जगत सुखमा सिंधु अ-  
गाध ॥ ७५ ॥ शिल्लेख को उदाहरन ॥ दो-  
हा ॥ जीवन दायक देखि कौ दज वासी धन स्याम  
कौन्हि भक्त मुकुंदानी कहत कामिनी का-  
म ॥ ७६ ॥ पर नाम उल्लेख र दोऊ रूपव-  
मोहि ॥ भिन्न अंस हात रूप तो संमत वरन  
नोहि ॥ ७७ ॥ अति शयोक्त को लक्षण ॥ दोहा  
॥ प्रोढ़ उक्ति जो कविन की अति शयोक्त है सो  
इ ॥ भिन्न अलंकार भेदते भिन्न काही जैल  
इ ॥ ७८ ॥ जहाँ ज्ञान उपमेय को उपमान  
में होइ ॥ प्रकृति को जो अन्यता को दत्त  
वि जोइ ॥ ७९ ॥ जो वह यो तो होइ जो यदि-  
धिके अभिधान ॥ कारज पहिले ही कहै सो  
छे कहै निदान ॥ ८० ॥ अति शयोक्ति र चारि वि-  
धि मंमद कथन प्रकार वरनत चिंता मनि  
सुकावि निज मतिके अनुसार ॥ ८१ ॥ अ-  
ति शयोक्ति यथा क्रम उदाहरन ॥ सर्वेया ॥ पूर-  
न मंडल वेलिके मूल लख्यो अकलंक मय  
कान वैयोहै ॥ नील सरोज भौरे मधु सिंदूर

सरतारका चंद्र सवैयै है ॥ डोलतु है तिल मून  
के चैनव थूकी लखे छवि कोन छवै है ॥ गे  
हके द्वार मैं काहु महा सुवृत्ती जनको जन पुन  
पवै है ॥ ११२॥ \* ॥ डोलनि दोलनि आन  
काछू लटवै काछू आन सुभा यहि जोऊ ॥  
आन काछू परिहास विला सहै आन हसी  
मदु सुधि हि सोऊ ॥ आन काछू दग कंज नि  
तो निहै आन काछू द्युति दांतनि सोऊ ॥ ऐसी को  
यो पर है तम मैं मान लागे जहाँ करना दार दो  
ऊ ॥ ११३ ॥ सरितो समहोन को सारदा सौं का  
मलामिलि कैर स्वरूप थैर ॥ पुनि ताही स्वरूप  
मैं चंद मुखी सब चंद्रिका आपनी चंद भरे  
मति तापर जोत प कोरि करै पुनि तात प पे  
जो विरंचि दै ॥ तिहुं लोक की सुंदरता हरि के  
गव तोसी जो वाहि करै तो करै ॥ ११४ ॥ दोहा  
मोष कामिनिन के मन निलखि छवि धन  
धन स्याम प्रेम उमग पहिले भद्र पीछे व्या  
प्यो काम ॥ ११५ ॥ प्रेक्ष विषे धन बल उकुत  
जो काछू ओर की होइ ॥ याहि सभां सो कति  
कहत पंडित संमट कोइ ॥ ११६ ॥ अति पवित्र  
जल वास वत कुमुदिन निगि अथि काइ ॥ फूल

ह पाति देवता दुज पतिको पति पाइ ॥ ११७ ॥ प  
स्तुति वक्र विशेष नन काहा जायल होइ ॥ अ  
पस्तुति गमिता सभा सो जा कहै स कोइ ॥ ११८ ॥  
जोन अलिंग देत धन कुम दिन को आनंद  
निसा वदन चुवन करत उदित भयो जव चं  
द ॥ ११९ ॥ शिलसु विशेषन होत काहुं काहुं साथ  
रन जानि ॥ उपमा गर्भित होत काहुं सज्जन  
गम मन आनि ॥ १२० ॥ कहा मुदित अति ही  
भई पतिको आगम जानि ॥ पगटे चारु मय  
का सचि निसा वदन मुस क्यानि ॥ १२१ ॥ जा  
को रूप स्वभाव अरु त्रियाजु जैसी होइ ॥ \*  
ताको ते सोई कथन सुख मोदी ते नति दोइ ॥  
१२२ ॥ काकि ॥ जसु मति मैया होइ ते या नद  
हैं हैं सदा चिंता मनि वैरि नदो उर नमै साहिब  
सुख वरधन गोप कुल हरष ज लाख लाख वरद वन  
दज भूमि प्रति पालि है ॥ ललित ललाट पर लटकी  
हैं लटैं मानो चंदन कमल पर मधुरकार आलि है  
देख लाल पलका की पाटी को पकारि खरे खेल  
त हंसत किलकत हांस हांसि है ॥ १२३ ॥ दूसरो उदाह  
रना कुल ही ललित विलसति चर ॥ दो ॥ पगटित वस्तु  
छपाइये जो वनाइ काछू काज ॥ व्याजो कति ता सो

कहत पंडित सकवि समाज ॥१२४॥ कांनदहिल  
रिब पुलकित कहति कालिंदी तट नारि ॥ ज-  
लतरंग सीतल कहाँ सजनी वहति वयारि ॥१२५॥  
संग अर्थ केशव वल दैधाचक पद रुका ॥ त-  
हो सहोक्ति होतिहे यों कवि करत विवेका ॥  
॥१२६॥ समुभिहिचेपति आगमन उमर्यो अ-  
ति आनंद ॥ लस्यो निशामुखचंदवाल सततत  
रुने मुखचंद ॥१२७॥ जहां कछू विन होत कछू र-  
म्य अरम्य जुवात ॥ बुध जन मत सो विन उ-  
कति अलंकार कहि जात ॥१२८॥ अन्य वि-  
शन विन होतिहे विद्या विमल अनूप ॥ विन  
दोषन को कवित यह ताहि गनत कवि भूप ॥  
॥१२९॥ निंदत नृपति विवेक विन चरचा को  
है साथ ॥ दान विना सन मान को विना दान  
को हाथ ॥१३०॥ प्रस्तुति में जह औरसों गुन-  
के साम्य निहारि ॥ एक रूप तावरनि ये सो  
सामान्य विचारि ॥१३१॥ चंदन लेपन मुकात  
गन थस्यो सुभजन चीरा ॥ तरुनि चंदिका मि-  
लिगई मनो संख को खीर ॥१३२॥ निज गुन  
तजि उत हास गुन गहै अनिकै कोइ ॥ अ-  
लंकारत हुन सुनो कवि जन संमत होइ ॥०

॥१३३॥ तिय मंदिर की इंद्रिग पति को भाग्य उदो-  
त ॥ तनबी दीपति सौथ गृह सब सुवरन की  
होत ॥१३४॥ और वस्तु गुन को मनहन जहंन का-  
रे कछु वाल ॥ ताहि अंत गुन कहत हैं जो क-  
वि मति अधिकृत ॥१३५॥ गंगा जल उज्ज-  
ल जमुन जल छावि अंत समेत ॥ दुहुं स-  
ख्य मज्जन कारतु हंस सेत को सेत ॥१३६॥  
सो विरोध अवि रुद्ध में जह विरोध अभि-  
थान ॥ सुनो जानि गुन क्रिया अह दूख मा-  
हं स ज्ञान ॥१३७॥ जाति जात्या दियान सों  
गुन गुनादे सों जानि ॥ क्रिया क्रिया अह  
दूख सों दूख दूख सों मानि ॥१३८॥ यों विरो-  
ध दृश भौतिमो ममद गये बरवानि ॥ तिनहे  
हेत उदाहरन सुवादि लेहु मन मोहि ॥१३९॥  
जाति जाति विरोध ॥ दोहा ॥ अतिमद ननि  
नो दल कमल मेवल मृदुल गुजाल ॥ अन-  
ल भये या बाल को विरह तिहारे लाल ॥१४०॥  
परवत में तारवन भये मारवन सुदु पयान  
ललित पल्लवित वेसिहुन सय कलपू-  
ल निदान ॥१४१॥ जाति गुन सों विरोध ॥ गो-  
पद सुहमी कानक मय गिरि सर षप को मि-

त॥समुद्र अंबु कन होतुहें भयो सखिनकेचि  
 त॥१४२॥जाति क्रिया सों विरोध॥दोहा॥जे-  
 जन साथत साथु जन वचन सुथाको पान  
 जन्म मरन भय रहितते सोदू पायत कल्या  
 न॥१४३॥गुन सौ गुन विरोध ॥कहों चढ़ा  
 वतिहें सखी वंदन चंदन संग॥सीतल सब  
 उपचार सखिजान मेरे अंग॥१४४॥गुन  
 सों द्रव्य सों विरोध॥दोहा॥प्रेम मगन सुनि  
 जन कहत हजजन थव्य वनादू॥मिचका  
 सचि परमा तमा लोचन गोचर पादू॥१४५॥  
 क्रिया क्रिया सों विरोध॥दोहा॥लखिते सु-  
 खपरि सुखोनिज मुख होत निहाल॥तोका  
 पोल चुवन करत निज मुख चुवन लाल  
 १४६॥क्रिया द्रव्य सों विरोध॥कविता॥जगत  
 विहित न्याय मत पसिद्ध यह छोटी जगस  
 व्यं परमान ते नैह कछुक॥ताहीके समान  
 नरच्यो॥सबही कोमनु ऐसी रचीहै विरंचि  
 तुम रचना काछू अचूक॥चिंता मनि कहै  
 ताहि और भांति करतुहें मे नवल वंत याके  
 लाइयेरे मुहें लख॥पीतम के विछुरत भार  
 भार दानन सों करतुहें मार मेरे मनके हजा

रदक॥द्रव्य द्रव्य सों विरोध॥कविता॥मालती  
 के फूल मालतीके फलनही मार फूलनकी  
 मार सींठा मारे सुकुमारीको॥चिंता मनि कहै  
 हे वदन नहीन अंग अंग औरई वदन होत अ-  
 निल विचारीको॥भयेहें जलज वाल सरको  
 जलज वाल गिरि गिरि भूत लमें जाये गिरि  
 थारीको॥भयोहै निसाहें समै कांन्हके दियेरा  
 सीत मान दध मानकी दुलारीको॥१४७॥वि-  
 रोधको लहरा॥दोहा॥विन प्रसिद्ध आधार जो  
 कांन अथेय वखानि॥एकहि की दूक वा लो  
 पित अनेक यल ग्रानि॥१४८॥एक वस्तु के  
 कारत जो होदू असंख्यो और॥विविध विरो-  
 ध विचारिके काहा सुकावि सिरमौर॥१४९॥  
 द्रव्य लोका वास्तु भये जिनकी उत्तम बानि ॥  
 रहति रसावति सक्त नन सोयन वार विनमा  
 न॥१५०॥वह मनमें वह दृगन में दहै वचनहें  
 भाह॥वहत तिहारे वास वह हम पावे कितनो  
 १५१॥रचन उदार सुचाइ छवि तोहि चतुर्द  
 सिर मौर॥नई सिर रति दूसरी रची सारदा और  
 १५२॥जो अथार अधेय की अन रूपता  
 नहोदू॥दोऊ को अधिद्य काम अधिद अ-



लंकात सोइ ॥ १५५ ॥ पृथु अधिका लंकार को  
उदा हरन ॥ दोहा ॥ जाहि जसोदा गोद में ली  
न्ह मोद आखंड ॥ तावा लक के उदर में लखे  
राकल ब्रह्मांड ॥ १५६ ॥ दूसरो उदा हरन ॥ कल  
प अंत जाके उदर सकल चराचर रूप ॥ नंद  
मेहनी रोह में ताहि सुवावत रूप ॥ १५७ ॥ \*  
अन्यत्र ॥ दोहा ॥ कलप अंत जाके वसत जग  
त सकल सवि भाग ॥ तोहरि अंग अस्मात् नहि  
राधे को अनुराग ॥ १५८ ॥ विभावना अलंका  
र को लखन ॥ दोहा ॥ कारज उत्पत्ति की जहां  
कारन की प्रति धैथ ॥ सो सब वाहत विभावना  
पंडित सुकवि सुमेध ॥ १५९ ॥ विभावना को  
उदा हरन ॥ दोहा ॥ वान धनुष सब फूल को  
सेना अवला संग ॥ कौन हेतु है जीति को जीत  
तु जगत अनंग ॥ १६० ॥ विशेषो यो न्तिको ल  
दोहा ॥ जो अखंड कारन मिले कारज काछून  
होइ ॥ तामो विशेषो कति कहत पंडित सत  
कवि कोइ ॥ १६१ ॥ कविज ॥ मंडप दुनाल ज  
ल जातन के पातन के सेज हू में विछे जल जा  
तन के पात है ॥ करी नीरै गुलाब के नीर की अ  
नूपनदी सिकता कापूर चूर अति अवदात है ॥

चिंतामनि ऐसी भांति विकल विरहिनी को सी  
तल अपार उपचार अधिकात है ॥ एते परप्रति  
फल विरह अगति पीरे पीरे होत पेन सीरे होत  
गात है ॥ १६२ ॥ अस गति को लखन ॥ दोहा ॥ हेतु  
और थल में दाह काज और थल होइ ॥ अलं  
कार ज्ञाना वाहत होति असंगति सोइ ॥ १६३ ॥  
आजु चलाए नैन सर मोपे तकि तवि नाह ॥  
सखी लखे आचस्त यह छिरे मोति उर माह ॥  
१६४ ॥ कहि विचित्र सुविरह फल पावन को उ  
दाहर ॥ अलंकार सुन बीन यह वरनत पंडित  
लोम ॥ १६५ ॥ गनपति प्रभु सुनिये वचन बोलत  
विमल सुभाइ ॥ सब ते ऊंचे होन वों नवत तिहा  
रे पाइ ॥ १६६ ॥ जहां विमल देवान वाछु काइत  
परस परकाज ॥ अलंकार अन्योन्य यह वरनत  
सब कवि राज ॥ १६७ ॥ अन्योन्य को उदा हरन दो  
हा ॥ छया वति चांदनी समुझ बडो उपकार ॥  
विपुल वारत है चांदनी सुंदरि की अभिसार ॥  
१६८ ॥ जो रंग रोग देवान को जया जोग नहि हो  
इ ॥ विषम अलंकार कहत यह कवि पंडित  
सब कोइ ॥ १६९ ॥ कौन कौन किया फलै मुनि  
अनर्थ कह होइ ॥ जो कारज गुणा क्रियाते कीज

और विधि सोइ ॥ १७० ॥ यों विरह तदिरिव के  
विषम कहत कविनाह ॥ अलंकार करता न के  
देख्यो मंथन माह ॥ १७१ ॥ प्रः विरह को उदा  
हरन ॥ दोहा ॥ कितसि रीख कोमल अमल कम  
ल मुखी को अंग ॥ कित कर्कस वारह रतन ती  
रवत तपत अनंग ॥ १७२ ॥ मदन सिली मुख के  
उरन सेयो वन धन कुज ॥ भये महा दुख दानि  
उत दुगुन सिली मुख सुज ॥ १७३ ॥ श्री हरि ज  
अरसी कुसुम स्याम तिहोर ध्यान ॥ विसद होत  
मन मुनिन के विमल शुद्ध विज्ञान ॥ १७४ ॥ नीम  
विषम को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मोहन तापसिरे  
सदा मोहन सीतल संग ॥ तेहीने उपज्यो विरह  
जारत मेरे अंग ॥ १७५ ॥ समको लक्षणा ॥ दोहा ॥  
होत समा लंकार सो जो कछु जोग संजोग ॥ दि  
विध सु वरनेते सत असत जोग कहत कवि लो  
ग ॥ १७६ ॥ संजोग समा लंकार को उदाहरन ॥ \*  
सवैया ॥ वैदूष के हित लेत उसासन ए उन के हि  
त होति है पीरी ॥ सुंदरता हरि राधिका की लखि  
और की सुंदरता विधि कीरी ॥ वैदूष नंद कुमार  
इते वृष भान कुमारिए रूप गहीरी ॥ जो यह जो  
री मिले सरिव होहि वनो अरिवयां सरिवयां

नकी सीरी ॥ १७७ ॥ दूसरो उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रग  
ट भई संसार में निदा वाही जोग ॥ ताके आदर  
करन को प्रगट भये खल लोग ॥ १७८ ॥ को प्र  
कृत निन होइ के अप्रकृत को कोइ ॥ तुल्य थ  
म इक वारही तुल्य जोगता होइ ॥ १७९ ॥ मंड  
ल विधि मंद किनी वृष बाहन सब गात ॥ स  
दा सदा शिव त्व सासि सवे वात अव दात ॥ १८० ॥  
प्रकृति और अप्रकृति की वृत्ति सदाही वार  
कारवा की बहु क्रियन में दीपक उक्ति उदार ॥  
१८१ ॥ प्रस्तुति अप्रस्तुतिन को सदस धर्म संजो  
ग ॥ गम्य होइ अगम्य जित तित दीपक बुध  
लोग ॥ १८२ ॥ श्री राधा के अधर रस स्वादन और  
सुहोइ ॥ दास सिना मधु सुधा स हरिको भाव  
त नाहि ॥ १८३ ॥ लोभी जन धन लाभ अरु नित्य  
जन संग सकाम ॥ साधु सदा ल श्री राम के ना  
म लहत आराम ॥ १८४ ॥ देह तरुनि मन रोह  
पुनि लसत सिरी संपन्न ॥ जल अरु वित्त कवि  
न ए नीके लगे प्रसन्न ॥ १८५ ॥ पूरव पूरव करे  
जो उत्तर को उपकार ॥ माली दीपक होत यह  
समझो बुद्धि उदार ॥ १८६ ॥ कविन ॥ लूनी अली  
चित वैनन मे मन तोमह जीवन मे यह जानी ॥

ता यह जोवन बीच वनाई अनूपम रूप कला  
 पहि चानी ॥ ताही अनूपम रूप कालामें मनो  
 रथ में न महां सुख दानी ॥ ताते वदो मन मो-  
 हन को मन मो निलये के मनो रथ रानी ॥ १८५ ॥  
 दोहा ॥ आवाति दू न पुनि जाति है ललित दि-  
 खावति गाल ॥ मृग नैनी हेरति हंसति कहति  
 मधुर कछु बात ॥ १८६ ॥ सदस धर्म वृत्त को  
 शब्द भेद सो होइ ॥ कवित रकोड़े बात में प्रति  
 वस्तु पमे सोइ ॥ १८७ ॥ प्रति वस्तु पम को उदा-  
 हरना दोहा ॥ जो हरिके हिय रंगी तरनि सीस  
 मनि सोइ ॥ लिय गने ऊपर उर न सी सर्वांग भा-  
 ही कोइ ॥ १८८ ॥ माला मथ प्रति वस्तु पमा ॥  
 दोहा ॥ हीरामें ते से ते सुवान अव दौते वैलना-  
 स ॥ ॥ रक्ते सत को हिये थव ले सति सिंग पर  
 गास ॥ १८९ ॥ मेरु थ दूति ही तुंग विधु सीत  
 ल विजा उपाइ ॥ सहज समुद्र गंभीर अरु सु-  
 जन सुभाइ गनोइ ॥ १९० ॥ जहं विंव प्रति विंव  
 को भाव सवन में होइ ॥ कहत सुकावि दृष्टांते है  
 सुनहु ताहि सब कोइ ॥ १९१ ॥ जहां तुलित है  
 वस्तु को शब्द भेद अभि ध्यान ॥ सो विंव प्रति  
 विंव मय भाव कहत स ज्ञान ॥ १९२ ॥ अलंका

रदृष्टांत में सदस धर्म को होइ ॥ विसे धनहु को हो  
 द पुनि विसे धर्म सोइ ॥ १९३ ॥ लाल तिहारे  
 लावत ही बात हिये हुलसात ॥ तरनि तरनि  
 अव लोकार्ताहि पदमिनि पदमिनि कास ॥  
 १९४ ॥ वैथर्मने दृष्टांत ॥ दोहा ॥ कहं दंभ दंभी  
 न को दृष्टो न रहत निदान ॥ भाख मारत ही  
 होतुं हे प्रगट वक्त को ध्यान ॥ १९५ ॥ अन  
 होनी जग वस्तु को कछु संवथ ज होइ ॥ उ-  
 पमा पर कल्प का दौते निदर्स नो कीह सोइ  
 १९६ ॥ कित अवला हम अल्प मीत कित य-  
 हु जोग अगाध ॥ कैंपां कर कौर पील का अ-  
 चल उचावन साथ ॥ १९७ ॥ अलि अंजन  
 वंधु का दुति अधर अधर लखि लाल ॥ धरी  
 नई दुति इंदु की कान बदन में वाल ॥ १९८ ॥  
 अपने अपने हनु को जोजा संवथ ज्ञान ॥ हो  
 न क्रियाते निदर्सना ताह कहत सुजान ॥ १९९ ॥  
 कवि ज ॥ उज्जल स्वक्ष सुवत प्रभा निधि रे  
 गुन वंत अनूपम जों पाइ के उन्नत सोपद उ-  
 तम सोहत है निरखे मन मोहै ॥ सो यह बात  
 विचारि कोहें मन देख्यो विचारि मतो सब कोहै  
 मंजुल जो सुकाता हल हार सो नारिके ऊंदे उ-

रोजन सोहै ॥ २०२ ॥ दोहा ॥ अधिका जहां उप-  
मेय कवि थटवर नत उप मान ॥ नहं वितर-  
का बनाइ को वरनत सुकवि सुजान ॥ २०३ ॥ \*  
कविता ॥ उपमेय गान उत वारं अरु अयका  
र्य जहं उपमान को ॥ जहं होत है नून दुहुन को  
दुत कथन सुकवि सुजान को ॥ कहं कायन  
होइ दूहुन कहं सुकाही को जानिये ॥ कहं प्रा-  
वदते कहं अर्थते आछेपते कहं मानिये ॥ \*  
२०४ ॥ दोहा ॥ रा-चारि-चारि सुत होत वारह चा-  
रि को विसेख सों ॥ सब मैद र वित रं क को मनि  
जानि लेहु विसेख सों ॥ २०५ ॥ विविधि हाव भाव  
ना सहित अति सुंदर जग माहि ॥ सज्ज निरिह  
री चंद ज्यों वदन कलंकी नाहि ॥ २०६ ॥ रदं  
काहा प्रवाल ज्यों अमल कमल ज्यों नैन ॥ को  
कहिये कुच को क ज्यों वारत काहा चित चैन  
२०७ ॥ सुंदरि लुव अकलंक मुख जिन्यो कलं-  
की चंद ॥ दृगन जि ते रंजन कमल जनु की-  
ने रुचि मंद ॥ २०८ ॥ मेरी थिर सचि है सदा जी-  
ती विजुरी वाल ॥ जिते तिहार भुज नहं कांजनि  
कलित मृनाल ॥ २०९ ॥ सकल चासता सहित  
मुख क्यों ससि ज्यों कहि जाइ ॥ देखे कर कारि

होतें द्वे विद्वान् वसंस्क वनाइ ॥ २१० ॥ राव वाक्य से  
होतें द्वे कायन अर्थ अनेक ॥ काको अर्थ सलेख  
काहि कवि जन करन विवेक ॥ २११ ॥ दृगलखि  
मन सुख होत अति सब लस दुख मिटि जान  
जहं दीपति इति देवता दरसन पाये प्रात ॥  
२१२ ॥ लाभिषाय विशेष यनन कथन सुपर कर  
जान ॥ याको देत उदा हरन सुकवि लेहु मन  
आन ॥ २१३ ॥ कविता ॥ हों तो हों अनाथ तुम  
अनाथन के नाथ हो दीन तुम दीन बंध नाम  
निज कीन्हो है ॥ हों तो हों पतित तुम पतित  
यावन वेद पुरान वधाने कछु कहो मनवीनो है ॥  
याव करी सेवा जो हों कहां मेरी सेवा रीमो आ-  
पही ते आपनो के चिंता मनि लीनो है ॥ अत्र  
तुम्हें मेरी रक्षा करि वेदा परी राम रावेर ही मो-  
हि निज नानो जोरि दीन्हो है ॥ २१४ ॥ जहं विशेष  
अभि ध्यान की दृष्टा कथन निषेध ॥ चिंता म-  
नि कवि कहत है सो आछेपनि संध ॥ २१५ ॥  
वद मान विषय निषेध को उदा हरन ॥ देहा ॥  
कहों न काहु निडर सों हों काहु की बात ॥ विन  
विचार कर काज अद मरो जु मरिहो प्रात ॥  
२१६ ॥ उक्ति विषय निषेध आछेप को उदा ह-

रन॥दोहा॥प्रेम तिहारे चंदिका चंदन कमल  
 मृनाल॥अनल भये वा बालको काछूसका  
 हिये लाल॥१९७॥स्तुति निंदा मिश्रि कौर अ-  
 स्तुति निंदा होइ॥चिंता मनि कविकहत है  
 व्याजस्तुतिहै सोइ॥१९८॥कविन॥जाको कृ-  
 पा कौर ताको संसारे छुड़ावै कहै चिंतामनि भां-  
 ति यह भली मन भाईहै॥पापी सुकृती नसेसे  
 संके गति कौर दून्है जानै को कहंते भगवौ न  
 थों बड़ाईहै॥माया मोहै सबही को रहै व्या-  
 थ गनिकापै कीरति सकल जग रंसी क-  
 छू गाईहै॥रूप जाति गुन कहावै जगत पात  
 जगत की प्रभुता थौ कौन गुन पाईहै॥१९९॥  
 अस्तुति मिस निंदा मानस तोली जियतु पर-  
 षि सुभाव लषि तुम पिय सज्जन सिरोपन  
 प्रकासहै॥जिनकेहू चुगयो मन मानिकति  
 हगो सो वंहे नष दुति हिये पावतहु लासहै॥  
 चिंतामनि कहै कठोर कुच उर बीच ताही तुम  
 बांधे निसिगाढे भुज पासहै॥ताको सुखमा-  
 नि लेत कहाँ लौ भलाई कहों रं से स्याम सं-  
 दर सुथार्द के निवासहै॥२००॥अप्रस्तुति  
 प्रसंसा को लखन॥दोहा॥अप्रस्तुति के कथ-

न विनु प्रस्तुति जान्यो जाइ॥अप्रस्तुति पर  
 संसरो सज्जन सुनो वनाइ॥२०१॥कारज के  
 प्रस्ताव मे कारज को अभिधान॥कारन के प्र-  
 स्ताव मे कारज कथन सुजान॥२०२॥अप्र-  
 स्तुति सामान्य जो तहं विशेष कहि जाइ॥क-  
 हं विशेष प्रस्तुति कहें सामान्यो जवनाइ॥  
 २०३॥कहं सहस प्रस्ताव मेहासदम अभिधा-  
 न॥अप्रस्तुति संकार के चंच भेद दूखि जा-  
 न॥२०४॥यथाक्रम उदाहरन॥दोहा॥सज्ज-  
 न तजी कुल कानि दूज लखि गर लाज तमा-  
 न॥संयतगी हरि मुख निशि वसवन सज्जे रा-  
 जान॥२०५॥इहो अज्ञानु को स्वडी को नादी  
 है देखेंहें तोनि कछु सुनि नाही यह काज प्रस्ता-  
 व मे हरिमुख दखन को कारन बाह्यो कानन  
 के प्रस्ताव मे कारन कल अथर विंश बलत रहै  
 लाल उकति कारि कौन अज्ञ ललीक वरन्यो  
 चहत रहत लाल राह मोन॥२०६॥इहो सखी  
 मंडल मे नवोद के अथर दिवा खादन नायक  
 कियो यह प्रस्ताव मे विंश खादत नौकि कान  
 भाव वरन्यो नाही जान बुद्धि मांघ भयो यह का-  
 न कह्यो सामान्य के प्रस्ताव मे विशेष को कथन

दो जल कन कमल निपात में उन मन मुकुता  
 मानि कर परसत लषि लीन जड सोचत कहि  
 निजु हानि ॥२२७॥ विशेष के प्रस्ताव में सामा-  
 न्य को कथन ॥ दोहा ॥ जासों आपन मित्र को वि-  
 था जाइ उपकार वह कुलीन वहै क्षती बहै ध-  
 न्य संसार ॥२२८॥ जहां तुल्य अभि ध्यान तहं  
 तीन प्रकार विसेष ॥ श्लेष समासो कति अ-  
 पर समता मूल कलेष ॥२२९॥ श्लेष मूलक  
 को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कहि मनि अधिक सने-  
 ह कर कौरी लाख विधि कोइ ॥ कहं प्रकासत  
 जगत में विन गुन दिया नहोइ ॥२३०॥ समा-  
 सोक्ति मूलक को उदाहरन ॥ दोहा ॥ दसा  
 जंगे जबलों नहीं होतुन आर मेह ॥ दसा ज-  
 गे जा दीप में सबै करत है नेह ॥२३१॥ सदस प्र-  
 स्ताव में सदस कथन ॥ दोहा ॥ जित तित ललि-  
 त वसंत में फूली लता अतल ॥ फूल नहीं  
 अलि के हिये विना मालती फूल ॥२३२॥  
 वाच्य जु वाचक भाव की रीति तजै कुधु भ-  
 क्ति ॥ पेच लिये सो सब कहत पर्या यो वात  
 जक्ति ॥२३३॥ साम अर्थ जो विंजना सो प्रताप  
 दित दोइ ॥ पर्या यो कति ताहि को कहत विबुध

सब कोइ ॥२३४॥ निगीय कान्ह को रस सावत  
 जीवास को प्रीति ॥ मंदरता उन मद मज्ज मय  
 मन सुध बुध बानी ॥२३५॥ प्रसूति कारण ने-  
 जूहे प्रसूति कावन जान ॥ प्रजो यो कान्ह कान-  
 त्यों विद्या नाथ तु जान ॥२३६॥ प्रजो यो कान्ह  
 या नल राजी सारी अति चित चेत प्रजु को  
 हैं मे नानिने हैं आन लजो हैं नेन ॥२३७॥ प्र-  
 ह रचि को यो रचये मे सी कहि कान्ह जान ॥  
 जुवा दो प उप मान को सो प्रतीप कति जात ॥  
 २३८॥ उप मानो उप मेव यद करे अना सरा-  
 ज ॥ इहां प्रतीपे कहत है पंडित सब काव राज  
 २३९॥ रचि मधुरादे अथर को संहर वदन क-  
 इ ॥ मध्या मध्या निधि यो रचे विधि दुखि म-  
 व पाइ ॥२४०॥ गारुभ धरत मन जानि दो एक  
 तरुनि मिर मोर ॥ रूप चलो अति जगत में ले-  
 सी रति है और ॥२४१॥ जूहे साथ्य साथ्य क-  
 दिन सोवर नन अनु मान ॥ तर्क न्याय मूलक  
 सुतो अर्थ काव जान ॥२४२॥ भौं प्रजु जाइ  
 तिय कोरे तही परति है दान ॥ इनके अंगो सर-  
 मदन लीने दान कमान ॥२४३॥ हेतु वाक्य-  
 को अर्थ के अर्थ पदन दो दोइ ॥ काव्य लेना



तासो कहत हेतु बखानत कोइ ॥२४५॥ हरि  
 उर निर्मल नील मनि दरपन मिला समान ॥  
 प्रति विवत इत राधिका कमला कांति निधा-  
 न ॥२४५॥ पदार्थ को हेतु ताको उदा हरन ॥ \*  
 दोहा ॥ आथ अगाथ नदी बही पारन पावत  
 लाल ॥ हे अवलंबन कुच कलस जस असो-  
 ल से बाल ॥२४६॥ नील वसन पावस निसा  
 चली जहां नंद नंद ॥ नेक कह मराल प्रयति है  
 कछु उधार मुख चंद ॥२४७॥ श्लेष मूल को  
 उदा हरन ॥ दोहा ॥ पाप भतंग ध्यान तिन भ-  
 नरनो निय रहि ॥ चिंता मनि जिनके वसत  
 पंचानन उर माहि ॥२४८॥ कारत परस परसो  
 मथन जो सामान्य विशेष ॥ सो अर्थ तरन्या-  
 स कहि लखि पंडित गन लेख ॥२४९॥ विसे-  
 ष परि मान को उदा हरन ॥ दोहा ॥ मूढन की  
 मति मंद ता तियन साधु करि लेत ॥ लावत  
 सर पति कमलिनी मधुपन को मधु देत ॥  
 २५०॥ रीभनिखीभानि बूझ विन बूझहु लेत  
 रिभाइ ॥ नीके कौनी को लगे सब विधि स-  
 वै सुभाइ ॥२५१॥ काम कन को अन्वय जहां  
 वरन्यो काम काम होइ ॥ यथासांख्य सो अलं-

कृत समति कहत सब कोइ ॥२५१॥ अथ वदन  
 कच कुच लसत सुभा वैन अरु नेन ॥ विव चंद  
 तम कोक जग अमी कमल से सेन ॥२५२॥ अ-  
 क वस्तु को भरणे और भई जो होइ ॥ ताको क-  
 हिये यह कहा अर्थ पतिस कोइ ॥२५३॥ सुंदर  
 की दिन कांति तनु राति उज्यारी होति ॥ दीपक  
 की जीती कहा चंपकली की जोति ॥२५४॥ अ-  
 क वस्तु जो अनेक थल पापत एक निवार ॥  
 नियमित की जे एक थल पर संध्या लंकार ॥  
 २५५॥ एक वस्तु जो एक दोर नेम जो होइ ॥ पंडित  
 संख्या तासो कहत कावि पंडित सब कोइ ॥२५६॥  
 अथ पूर्व जोका पुनि नाते भिन्न ज और ॥ परिसं-  
 ख्यो द्वैविध प्रयत्न कहत समति हिर मोर ॥२५७॥  
 वर्जनीय इन जो कछु कह शब्द गन होइ ॥ क-  
 हूं अर्थ बल पाइये यह विधि होइ ॥२५८॥  
 प्रथो अथ प्रथो कथन कछु वस्तु को होइ ॥  
 ऐसे और न देत यह परिसंख्या कहि सोइ ॥२५९॥  
 परिसंख्या लंकार नै कहत शब्द गन होइ ॥ क-  
 हूं अर्थ बल पाइये जो सम नाही कोइ ॥२६०॥  
 मंमट अकार जइहां से सो विधि विवेक ॥ प-  
 रि संख्या लंकार को समुझो पंडित एक ॥२६१॥

शब्द गत वर्जनीया प्रश्न परि संख्या को उदाहर-  
न॥ दोहा॥ कौन सुखी जो राम को नहि संपति  
रस लीन॥ कौन सुखी जो राम ते विमुखन सं-  
पति हीन॥ २६३॥ अर्थ गत वर्जनीया प्रश्न पूर्वि-  
का परि संख्या॥ दोहा॥ कहा से दिये पुरुष को  
सब दिन सज्जन सखा॥ कहा थिय ये कहत म-  
नि व्यापक ब्रह्म असंग॥ २६४॥ शब्द गत वर्ज-  
नीया प्रश्न पूर्वि का परि संख्या॥ दोहा॥ भूय-  
न की रति नहि रतन बन बिद्या नहि विना॥  
लोचन सुमतिन नैन जग समभान सज्जन  
चित्त॥ २६५॥ अर्थ गति वर्जनीया प्रश्न पू-  
र्विका परि संख्या॥ दोहा॥ दुखि लाई तेरे कुचन  
कर पग दोठन रंग॥ नैन नि चलीता कटिन  
ता कुर्बान भाल मे भाग॥ २६६॥ शब्द गत व-  
र्जनीया प्रश्न पूर्वि का श्लेष मूल परि संख्या॥  
दोहा॥ कौन नहि विन दो सक दीपन सज्जन स-  
माज॥ कौन मंद स्तन दार नहि मनुज राम के-  
राज॥ २६७॥ प्रश्न पूर्वि का अर्थ गत वर्जनीया  
श्लेष मूल परि संख्या॥ दोहा॥ कोविन गुन र-  
ति हार विन जो ती को कुच चंद॥ कौन मंद गति  
अवध में वात वाल सा नंद॥ २६८॥ शब्द गत व-

र्जनीया प्रश्न पूर्वि का श्लेष परि संख्या दोहा॥  
तिथ छवार मंगल विना क्यों कहिये खर कोदु-  
विसमप रस नहि खल वयन जित हार चर-  
चा होइ॥ २६९॥ अर्थ गत वर्जनीया पूर्वि का  
श्लेष मूल परि संख्या॥ दोहा॥ मजि मरोच  
मय द्वारिका हरि नगरी अवदात॥ सुनी विगु-  
न वर वाहि मे जा मे तम की वात॥ २७०॥ उत्त-  
र सुनि जहं प्रश्न को अटक रही ते ज्ञान॥ का-  
हु पिष्टा उत्तर कथन प्रथमो नर सज्जन॥ २७१॥  
वसन कहौ कैसे अधिक पति मेरो पर देसा॥  
सासु अंध बहिरि ननंद वंदे कल कल लेस  
२७२॥ कावित॥ सुंदर क्यों मन मोह जूझत वैठी  
हो वैठी कहौ सब जीकी॥ वात कहै सुनि हो  
कहि सपति की वतियां सुख दायक लीकी॥ अ-  
बो दूते मिल आर सी देखिये हैं हम नीकी कि  
हो तुम नीकी॥ नीकी भई जु जो हो तो कह हम  
कैसे के होहि वरा वर पीकी॥ २७३॥ दोहा॥ रि-  
खवन पठये तुम जु दूत ऊधो सब गुन आम॥  
निरागुन कुविजा संग ते के सुत बल सो ख्याम  
२७४॥ एक सिद्ध कर संग मिलि औरो साथक  
होय॥ होइ अपने क समुच्च या अलं दार यहर

कोडू ॥ २७५ ॥ कविज ॥ दुलारे सा बापके सका-  
ल गुन धाम राम महा राज कुमार ललित रूप  
वानि हैं ॥ जोवन को आगमन मंदिर पूरन थ-  
न जगत निहाल करिबे को हाथ वानि हैं ॥ सी-  
ता जू ललित अंग सहित संग को संग सखी जे  
सिखाई सब सकल कालानि हैं ॥ जोन कांहे चिं-  
ता मनि मनि मय मंदिरनि अप जोति रूप जे-  
से खेले कछु अनि हैं ॥ २७६ ॥ विरहि नी को  
असत वस्तु को जोग ॥ कविज ॥ चिंता मनि थ-  
न वन वीथिनि बोलत मोरते सिंघे रहों हे थरा  
थनकी उने उने ॥ तेसिये भई है लाल भूमि दूंद  
वधुन से वधुन पहारि लाल चूनी चुने चुने  
सीरी सीरी तेसिये कादंबन की वासुलैले पा-  
य बंदे लहलही बोलनि दुने दुने भांकि कै भा-  
रोखे मुरभाति वाम थरी थरी हरी हरी पैथि अं-  
कुरन की मुने मुने ॥ २७७ ॥ सदस जोग समुच्च-  
य को उदा हरन ॥ दोहा ॥ रूप हीन अह अपरसी  
देवि देवि मुसकात ॥ मूरख प्रगटे चातुरी बडी  
हंसी की बात ॥ २७८ ॥ गुन गुन जोग समुच्चय  
को उदा हरन ॥ दोहा ॥ दृजजन पालक को सखी  
प्यापक द्रुह असंग ॥ थरे अंग इक संग ही स-

भयाम हैरंग ॥ २७९ ॥ क्रिया क्रिया जोग स-  
मुच्चय को उदा हरन ॥ दोहा ॥ औंध नगर ते  
निकारि कारि वन वसि रथकुल राज ॥ स-  
त्य पिता को वचन अरु कियो देव गन काज  
॥ २८० ॥ दूज कारन के मिले काजु नु हरवर होदु  
से समाधु वरनत विवुध समभात सज्जन  
कोडू ॥ २८१ ॥ हरि चाहौ परापरन को मान  
वती लखि वाम ॥ भई तडित थन स्याम मे  
निरखि तडित थन स्याम ॥ कहं करिये परत-  
स सम भावी भूत ज्वात ॥ अलंकार करता का-  
हत स्वाभा विक कहि जात ॥ २८२ ॥ दियो हुल्यो  
जावक जुयो पराट देखिये पादु ॥ अंग भूषकै  
सखे भूषित लखो वनादु ॥ २८३ ॥ जा उपाय काहु  
करी काहु जु अन्यथा बात ॥ ता उपादु जोते सि-  
ये कौरे दुयो व्याधात ॥ २८४ ॥ ज्यावति है तिय  
नेनही नेनजु ज्यो यों काम ॥ जीतति विद्यम  
फिलोकननि वाम लोचनी वाम ॥ २८५ ॥ कर्मज  
म एक अनक मे एकाहु माह अनेक ॥ दे प्रका-  
र पर्जाव यों सत कवि करत विवेक ॥ २८६ ॥  
संवेया ॥ अडि दई तनु ताजु निते वाहे ताको क-  
हं सेवन लाब्यो ॥ पादुन चंचल ताजुत जो अ-

वसा परनेन जंगे अनु राग्यो ॥ संद सुभावालि यो  
 गति जो मृगलोचनी की मीत को तजि भाग्यो  
 अंग न के गुन को बदल्यो करि के तिय के तन  
 जीवन जाग्यो ॥ २८० ॥ कावित ॥ शिबी काम भयो  
 सुखहसी वास भयो दुखजा को मुख परन सर  
 दरितु को समी ॥ चिंता मनि दैयो मन मोह  
 न जू आयि बाके बाके चारों वोर चंदिका स  
 चिरै हेलसी ॥ राख्यो दिन घर वासी रहति घर  
 वासी मेरे कहै कैसे रसी ॥ अवे हारे लगनि का  
 सी ॥ नेनीन मे वसी रूप आज से ज बाच उर व  
 सी जानी लाग उर वसी ॥ २८१ ॥ सवेया ॥ नाह  
 जु नाहर लागल है काछु दोसन मे उन मान  
 ल्यो ॥ भयो भीत सुभावालि लाल प्यटे दिन ह  
 दिन ज्यों उन नेह ब्यो ॥ बहुयों बडे प्यार को दो  
 र भयो सजनी सुखदायक रूप नयो ॥ अवजा  
 के छूटे छत्र को जित्यो सखि पीतम ग्रान स्व  
 रूप भयो ॥ २८२ ॥ दोहा ॥ पूरव पूरव अर्थ ज  
 हं उत्तर उत्तर हेतु ॥ कारन माला होतु सो सुने  
 बैठे चित चेतु ॥ २८३ ॥ विद्या तें उपैत विने वि  
 नय जगत वस होत ॥ जगत भये वस धन मि  
 ले धन ते धर्म उदेत ॥ २८४ ॥ किय पिये के दूहि

थै किये विसे धन भाउ ॥ यथा पुथम पर फेरि  
 कहि सका वली गनाउ ॥ २८५ ॥ थाम वाम ज  
 त वाम जो रूप वंत बहु रूप ॥ सहित विलास  
 विलास जो मन मथ वान अनप ॥ २८६ ॥ नज  
 ल जहां नहि कांज नहि कांज जहां नमि लंद  
 नाहि मिलंदक सरवन जो खनन जित आनंद  
 द ॥ २८७ ॥ जह समास सम अर्थ को बदलो  
 वरल्यो होइ ॥ चिंता मनि पर सज बह वरनत  
 है कवि लोइ ॥ २८८ ॥ थाम दियो तन जोवनहि  
 जीवन तन को जोति ॥ उप कारन उत्तमन की  
 रीति परस्पर होति ॥ २८९ ॥ काहा कहों हों  
 कान सों आहु हों दुह काहु ॥ सुधि बुधि ह  
 रि सब हरि लई दीन्ही विरह वलाइ ॥ २९० ॥  
 जाइ लियो नहि वे ॥ जह परसो प्रवल विचा  
 रि ॥ एकै को अपकार जो पुत्य नीक निरथा  
 रि ॥ २९१ ॥ रूप दु पहिने नम दियो वह तुम  
 सों अक मेन ॥ जोतिय चाहति है तमै ताहि देत दु  
 ख मेन ॥ २९२ ॥ होइ जू कौनो अर्थ ते सुखम अर्थ  
 प्रकास ॥ सुखम नाम परिदु यह अलंकार सु  
 ख वास ॥ २९३ ॥ कावित ॥ कहु किसक फूल फ  
 लानि सो पूजतु ग्राम लखे हय भान दरी ॥ मुसका

ति कछु मनि डोहि रखी को सुवाल उरो जन-  
वीच परी ॥ असु वान विलोचन पूरि रही सु-  
वि सरति सी कछु आध धरी ॥ तब कौल क-  
ली सेदु ओ कर जोरि तिया नति संकर वोर  
करी ॥ ३०४ ॥ दोहा ॥ जहां कौनह बातें में कछु  
वर्निये सार ॥ सो उत्तर उकार्य यों सुनिये सार  
विचार ॥ ३०५ ॥ पुहु मीसी वारा नसी तां में पंडि  
त सार ॥ वहरि पंडित न में समुझि सार सुवह  
विचार ॥ ३०६ ॥ जहां तहां संपति कायन सो उ-  
दार मन आनि ॥ जो उप लक्षन बंदेन को क-  
हो वहे पहि चानि ॥ ३०७ ॥ कविता ॥ लालन की  
सीलनि को ललित पटाउ लाल जटित दिवा-  
लन की चो कचह वोर की ॥ लाल वद्ध भूमि हे  
महल खंड खंड लाल खंभनि खुलनि छवि वृ-  
के भकोर की ॥ चिंता मनि मनि में भरो खन-  
की बैठ कन गान मृदु घुमर मृदंग धन थोर  
सुंदर रतन मय सुंदरि सुंदरी संग बिलन ल-  
त लाल लसनि विहार की ॥ ३०८ ॥ दोहा ॥ से-  
यह वृंदावन जहां रच्यो राम नंद लाल ॥ मुरली  
मधुर वजाइ के मोही सब हृज वाल ॥ ३०९ ॥  
एक कवित में अलंकार भासे भिन्न अनेक

के निषेद्यज परस्य रहे संश्लिष्ट विवेक ॥ ३१० ॥  
शब्द लंकार अनुप्रास यमकी यष्टि ॥ दोहा  
शिव गिरि परगज मुख मुदित गरजत गिरिजा  
पौर ॥ एक विनायक करत है एक विनायक  
सौर ॥ ३११ ॥ चाप मुकुट पट तडित दग पांति  
मुकत मनि दाम ॥ कनक लता लाविकुन यो  
आइ दूते धन स्याम ॥ ३१२ ॥ संकर पुनि इनकी  
दूते अंग गिला बलानि ॥ आपुहि को विश्राम  
को पावत जे नहि आनि ॥ ३१३ ॥ कनक लता  
इह अति सयोक्त संबोधन में ताको उपमा वा-  
रि उपस्था पित जो अर्थ सो याको उपजी व्य-  
है यति अर्था लंकार को संकर है ॥ दोहा ॥ व-  
हुत अलंकार में जहां अर्थन निश्चित होइ ॥ को-  
है में संकर बहो वरनत है सब कोइ ॥ ३१४ ॥ क-  
विता ॥ हों दो तुम्हें पहि चानति हो वल बातन  
को बहु पंच बने हो ॥ ओर के माल भयो छति  
यां कुच कुंकुम छाप छपा वन रहे ॥ बाह  
सों सेति ही बोलहुगे मनि पीत ह जाकि धरे  
जव जेहो ॥ मोहनी मंत्र से वैनी मोहि को मो-  
हन मोहि कहा वहं कहो ॥ ३१५ ॥ \* ॥ यामे  
मोहनी मंत्र तुलित जे वचन है तिनकर मोहि-



बो कारन ताहे यह कारनते विच मान ताह  
 वह करि की वसों सलाहते अर्थ लंकार की  
 स्थि हे या कविन की वस्तु सो योमे मोहनी मंच  
 वलित से वचन हैं तिन कार मोहिनी कारनता  
 हे यह कारन के विच मान ताह वह करि की  
 वसों सलाहते अर्थ लंकार की स्थि हे या  
 वित की वस्तु सो कविन प्रथम ॥ ३१६ ॥  
 हो इन सोह जं कां बुकी की करि आरसी योमे  
 अंग प्रमाण अन पन नैन वसो सदाही गुमानि  
 लोपे ॥ याद सन बुति चिहिको लालची चाहे  
 चकार भवे हग लोपे ॥ वारक लो विचु वं  
 हसि नैकु विलोकि विलाहिनि मोपे ॥ ३१७ ॥  
 इहां प्रथम शक्ति प्रथम चरन मे ॥ विलोक  
 दूसरे चरन मे ॥ पर नामा तीसरे चरन मे ॥ ३१८ ॥  
 चौथे चरन मे वा सत है ॥ दोहा ॥ सके दे क  
 जने हे नहि करतु अनंग ॥ प्रति विं वित आ  
 पुहिल वत रा दे क दुहु अंग ॥ ३१९ ॥ \* ॥ \* ॥  
 श्री राधा कृष्ण जी सदा लाल्य है अंग क  
 रमे उभया व लो कान हेतु है यति साध्या साध  
 न अनु मान है के अंग करत विचारते अंग  
 ते भिन्न करत तात पद यह माया प्रतिविंबित

चेतन्य उभयवदे आपु आत्मा एके हे माया स  
 वको छोदे शूद्र चेतन्य है आपु आत्मा एके  
 हे माया सवको छोदे शूद्र चेतन्य है महाश्ले  
 प है सो उभयव एकत्व साधक है ताते अनु  
 मान लंकार है अंग प्रमाण अंग अलं  
 कार संभावित है अन्या अन्या दिका याते स  
 क्यो निग्रय नाही ताते संकर है ॥ दोहा ॥  
 काधुन सपरि सा सुदलता विलस वन जत फ  
 लो ॥ लंपन मे निहि तवात अलि सव विलिन  
 को सल ॥ ३२० ॥ \* ॥ दुहां विहंगम सत समा स  
 नि है के अप्रतीति प्रसमा है ताको निग्रय ना  
 ही ताते संकर है ॥ दोहा ॥ अस्फुटि जो एक दि  
 विसय पद अर्थ लंकार ल है जवासा को जपुनि  
 संकर समुभा विचारक मोर विरीट लसे अंग  
 पद नील वला हक रंग हेर है ॥ गोपके कंध  
 थोर भुज दंड अनप धिलास कलकाल थोर है ॥  
 बान ओर नव मंजरी मंजरी वलास कंधा लो  
 निकोरे हैं ॥ सुंदर मार हते सुकुमार लो जे लो  
 नंद कुमार खर है ॥ ३२१ ॥ दोहा ॥ सुवि सुलक  
 ति तब सहज की तापर ललित विलास ॥ सुंद  
 न पर सुंदर लगत ज्यों मनि दंड प्रकास ॥ ३२२ ॥



Chap 4

यहो उपमा लंकार को कति अनुपास को संकर  
है ॥ दूति श्रीचिंतामनि विरचिते कवि कुल का-  
ल्यतरो नाम अर्थो लंकार निरूपनं त्रितीयं प्र-  
काशमा ॥ ३ ॥ दोहा ॥ शब्द अर्थ रस को जू दूत देखि  
परे अप कर्ष ॥ दोष कहत है ताहि को सुने छ-  
टतुं है हर्ष ॥ \* ॥ १ ॥ श्रुति कदु च्युत जो संस-  
कृत अर्थ जुक्ति अस मर्थ ॥ निहता रथ अनु-  
चित अर्थ ओ रजु होइ तिरर्थ ॥ २ ॥ ओर  
अवाचक त्रिविधि पुनि दूत अश्लील विचा-  
रि ॥ सं दिग्धो अप्रतीति पुनि गामनि चार्थ  
निहारि ॥ ३ ॥ क्रिष्टो बहुरि वातानि ये विसद्व-  
मति कम जानि ॥ शब्दन के र दोष हैं सृजन  
लेहु मन आनि ॥ ४ ॥ कानन को जो कदु लगे  
श्रुति कदु दोष सुजान ॥ संस कार च्युत होइ-  
सो च्युत संस कृत मान ॥ जो नहि प्रोगी सत  
कविन काची भाषा जान ॥ मथुरा मंडल गवारि-  
ये की परिपक वखान ॥ ५ ॥ श्रुति कदु को उदा-  
हरन ॥ दोहा ॥ थन्य भयो कृत कृत्य हों सफल  
भई है दृष्टि ॥ दरस तिहारो पाइ को हिये भई स-  
खदृष्टि ॥ ६ ॥ काची भाषा को उदा हरन ॥ दोहा ॥  
वाकी स्मृति सावरी सो मुहि लागी नीकि ॥ व-

निरर्थ

निरर्थ  
प्रामाद  
निरर्थ

i.e.  
अप्रयुक्त

है वसति है चित्त में ओर नई सुधि देखि ॥ ७ ॥  
मथुरा मंडल गवारि यर की सुर बानी कोइ ॥  
जोन प्रयोगी सत ॥ कविन अप्र युक्ति है मोइ  
॥ ८ ॥ अप्र युक्ति को उदा हरन ॥ दोहा ॥ जवते दे-  
खा भावती तवते स्मृत्त चर चान ॥ भिन्न भिन्न त-  
नु जारि है मो कंदर पकवान ॥ ९ ॥ असर्थ को  
उदा हरन ॥ दोहा ॥ वन मे सेहत कमल अर  
राजत सारस हंस ॥ सर मे अति सुंदर लसन  
सरद वाल अवतंस ॥ १० ॥ द्वै वाचक पद सत-  
हां अप्रकृति दिह को बोध ॥ सो निह ताग्य कह-  
त है चिंतामनि भल सोध ॥ ११ ॥ निह तारय  
को उदा हरन ॥ दोहा ॥ लो इन ललित विला-  
सहे रकन रूपहे हाथ ॥ वात कहत कथु मंदग-  
ति चली सीवन के साथ ॥ १२ ॥ अनुचिता को ल-  
सन ॥ दोहा ॥ होइ अनुचिता अर्थ तहं उचित  
न वरनन होइ ॥ ताहि अनुक्तारथ कहत पंडित  
सत कवि कोइ ॥ १३ ॥ मानति नाही मे गर्द हरि-  
ज वारक आठ ॥ बोलति नाही गेरु के बैठ रही  
है काठ ॥ १४ ॥ निरर्थ को लसन ॥ दोहा ॥ छंद  
पूरन को जू पद होइ निरर्थक सोइ पावे वाचक  
पदन जो दै है अवाचक होइ ॥ १५ ॥ बोलति है

वाको

यह कोकिला सोपुनितहं तू पेय ॥ रिसहा प-  
 र्त्ती है सखी तुही बोल पुन लेष ॥ १७ ॥ अमली  
 को उदा हरन ॥ दोहा ॥ वि मारग देवति उहा पा-  
 द परी हों आइ ॥ तू तब दोसी करान जो वि-  
 ह पीउ मरिजाइ ॥ १८ ॥ सं दिग्ध को लखन ॥  
 दोहा ॥ जहा हेतु सं देह है सो सं दिग्ध वाक्य  
 शास्त्र हीन मे जो कह्यो अपुलीति सो माना ॥  
 १९ ॥ सं दिग्ध को उदा हरन ॥ दोहा ॥ कूदत  
 जाके होल है ये विरह मनु लाइ ॥ अति सुंद-  
 र सुंदर वन्यो हरि देख्यो किन आइ ॥ २० ॥ अ-  
 पुतीति को उदा हरन ॥ दोहा ॥ तो चितु मे चितु  
 है महा ल को वेठी करि ॥ ते बिजु मान कि-  
 यो भद ज्यो मरकट की मूढि ॥ २१ ॥ मास्य को  
 लखन ॥ दोहा ॥ होत गंवारी पद जहां मास्य  
 कहत है ताहि ॥ चिंता मनि कवि कहत है सुक-  
 वि तजत है वाहि ॥ २२ ॥ मास्य को उदा हरन ॥  
 दोहा ॥ चुन्नी जमीरी सी बनी गोल लाल है मा-  
 ल ॥ जाने नेन विशाल वह गेरु लै कव वाल  
 २३ ॥ ने गार्थ को लखन ॥ जहा निधि द्वि की ल-  
 खना सो नैया र्य वखानि ॥ चंदाइ इनत चंघट  
 सो तेरो मुख मृदु वानि ॥ २४ ॥ क्रिय को उदा हरन

जाकि अर्थ कहि विना जान्योई नहि जाइ ॥ को-  
 वेलि सति जानिये सोहै क्रिय वनाइ ॥ २५ ॥ दू-  
 व्य नाम दग हीन पद आसन रिपु परनासा ॥  
 फल दान ताको महुद तीन्यो दूरत तासा ॥  
 २६ ॥ विरह मति कत को लखन ॥ दोहा ॥ तो वि-  
 रुद्ध मत कत जहां जान्यो जाइ विरह ॥ दोहा  
 कथितन की जिये हे यह निपट अशुद्ध ॥ २७ ॥  
 विरह मति कत को उदा हरन ॥ दोहा ॥ वहु पु-  
 रीन सुबुद्धि है सदा अकार्य मित्र ॥ कहा जो-  
 र संभार मे रोमो विमल चरित्र ॥ २८ ॥ अ-  
 वायव होय गगना लिरखे है ॥ दोहा ॥ प्रति दूहा  
 हरि होत है अरु हत वृत्ति वाकानि ॥ अरु अधि-  
 क पद कायत पद पतत प्रकीर्षा मान ॥ २९ ॥  
 पुनि कला पुनि गत कहि चरनां तर पद हो-  
 द ॥ पुनि अस वन्यत जोग कहि अक धित दा-  
 ज्यो कोइ ॥ ३० ॥ पुनि कहि अस्थन स्थपद संकी-  
 र्णो निहारि ॥ वसित और प्रसिद्ध हत संभा ॥ का-  
 स निर थादि ॥ ३१ ॥ अक्रम अमृत अपार दो-  
 वाक्य होय र माणि ॥ कवि चिंता मनि कहत  
 है सज्जन के मन आनि ॥ ३२ ॥ पुनि दूहा ॥ हर-  
 को लखन ॥ दोहा ॥ अक्षर रस अनकूल नहि प-

ति कूलांतर सोइ ॥ कहत विबुध हत वृत्ति सो  
 छंदो भंगहि जोइ ॥ ३३ ॥ कटुत वटु विषटु कु  
 च बुद्धिपुट्टिय मार ॥ दंपत जुट्टिय लुट्टि सुख  
 छुट्टिय पट्टिय वार ॥ ३४ ॥ हत वृत्तः ॥ दोहा ॥  
 रूप काम अभिराम तन अमल कमल दल नै  
 न ॥ चलि जात हो वा गली देत हंसत सीविसे  
 न ॥ ३५ ॥ जोइ कर सजा छंद में भलो जो उत्तम  
 होइ ॥ जो जाके प्रति कूल है योंहुं कहत स-  
 व कोइ ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ धरनी धसि पातालहि  
 पेठी ॥ धूरि इंद्र के महल न वैठी ॥ सेस नाग फा-  
 न सहस नावायो ॥ साजि सेन जव भूपति था-  
 यो ॥ दोहा ॥ सर्व लक्षण न कर अहित सुनत न  
 नीको होइ ॥ यहौ कहत हत वृत्त हैं ते सज्जन  
 कविलोइ ॥ ३७ ॥ कामीन लागत चंद है जो मे  
 कांति कामीन ॥ ऐसो सुंदर वदन है वचन स-  
 मान अमीन ॥ ३८ ॥ न्यून पद को लक्षण ॥ \*  
 दोहा ॥ जहां वरन के करत है न्यून्या दिक् प-  
 द होइ ॥ चिंता मनि कविकहत है न्यूना पि-  
 क पद सोइ ॥ ३९ ॥ वाकी अद्भुत रीति है कों  
 काहू सो जानि ॥ है सब वष लनि लख्यो परत  
 जहीं तही है आनि ॥ ४० ॥ कनक लता दामिनि

किंथो आरुहि चंया दाम ॥ एक लखी वह कामि-  
 नी दूती मन मथ वाम ॥ ४१ ॥ काथित पद ॥ \*  
 दोहा ॥ जो पद दीन्हो है कछू वंहे वहुरि दे जाइ  
 होत काथित पद है तहां कवीजन सुनहुं वनाइ  
 ॥ ४२ ॥ कोमल मुख वह कमल सो तिरल जैन सि-  
 त नाम ॥ गोरी कोमल देह है सोहत ललित  
 पिलास ॥ ४३ ॥ प्रजति प्रकर्षन लक्षण ॥ दोहा ॥  
 जो आनंद अरंभये तैसे जो निव हैन ॥ चिंता  
 मनि कवि कहत है प्रजत कार्य सो ऐन ॥ ४४ ॥  
 चाह चुनरी चपन चप चौका चम कान चार  
 चतुर चंद वदनी चली गरे पहिरि के हाग ॥ ४५ ॥  
 समाप्त पुनर्हति ॥ दोहा ॥ जह वाक्यार्थ समाप्त  
 है वहुरि विमये देइ ॥ सो समाप्त पुनर्हति है  
 जानि सज्जने लेइ ॥ ४६ ॥ बडे वार लोइन बडे  
 श्रीनो दरि वर नारि ॥ दक्षिण दिशि मे सावरी  
 वह सोहति सुकुमारि ॥ ४७ ॥ जह जो उत्तर अरु  
 पद पूरव अन्वित होइ ॥ अर्थो तर गत पद सुयो  
 दयित भाषा कोइ ॥ ४८ ॥ जामे अन्वय वनत  
 नहिं सो अभव नमत जोग ॥ चिंता मनि कवि  
 कहत यों सुकविन को प्रयोग ॥ ४९ ॥ वै मन  
 मोहन ए इते रची सकल सो भाहि ॥ जो वह

जोरी सखि मिले वेन नेन सिय राहि ॥५३॥ \*  
 अनुक्त कथनीय ॥ दोहा ॥ जो अवश्य कथनी  
 प्रसोक हो जहां नहि होय ॥ इत अनुक्त का  
 थनीय यह दोष कहत है कोइ ॥५३॥ जो पा  
 ई नहि मै निका पाई काम बधून ॥ सो वह ला  
 ल लट् निर्गद तू कात लयत भटन ॥५४॥ ज  
 हां डोइ संकीर्ण पद सो संकीर्ण बतानि ॥  
 एक वाक्य मे और जहं सो गर्भित यहि चा  
 नि ॥५५॥ पीजे पान नखाइ ये पानी बेली  
 पानि ॥ पिय हिय ठाऊं रावेर सुखाहि मिला  
 ऊं आनि ॥५६॥ गर्भित ॥ दोहा ॥ और के अ  
 पकार ते खल सों कहं मिलाप ॥ तुम्हहि सि  
 खाऊं कारहु जनि कि ये परम संताप ॥५७॥  
 जो पद जायल चाहिये सो नहि जायल होइ  
 दूषन अस्थानस्थ पद कहत सुकवि जन  
 कोइ ॥५८॥ तू कात लखत भटन यह नकार  
 अस्थानस्थ पद दो ॥ जो पद अस्थानस्थ पद  
 योंही अस्थ समास ॥ जो न बुद्ध की उक्ति मे  
 कविकी उक्ति प्रकास ॥५९॥ मेरे आगम मा  
 नयों कहि यत पिक थुनि वंत ॥ अलि हंकि  
 त हंकि त कलित आयो अली वसंत ॥६०॥

प्रसिद्ध हत कोल ॥ दोहा ॥ थुनि ख आदि प्रसि  
 द्ध जहं तहां ही जिये सोइ ॥ और भांति योंही भि  
 ये तं प्रसिद्ध हत होइ ॥६१॥ वा मृग नेनी को  
 सनत नूपुर को निध्यान ॥ पंच वान अभि  
 मान सों ताने वान कामान ॥६२॥ पूर्व मनु वा  
 देन प्रसूय मानो दयः पश्चा दन्पत्र विधितः ॥  
 प्रजु ज्य मान प्रति निर्देस्य ॥ छंद ॥ ॥ उद्देस्य प्रति  
 निर्देस थल मे प्रथम ही जो ही जिये ॥ पुनि जा  
 व है कहिये पोर तो वहे ताथल लीजिये ॥  
 जा कायित पद की भांति ते प्रजाय पद मिल  
 कीजिये ॥ तो होइ प्रकाम भंग दोष सु सत्य ज  
 न पती जिये ॥६३॥ अरुन उदित रवि होन है  
 अरुने अथवत आइ ॥ संपति विपति वडेन  
 को सके काम लाव जाइ ॥६४॥ अरुन उदित वि  
 कारत है लाले अथवत आइ ॥ दोहा ॥ जो कवि  
 ये सुतो प्रकाम भंग हो जाइ ॥६५॥ जिन विरंच  
 जगती रची तिन नरची तू दास ॥ और लट् क  
 औरै ठवनि औरै दुति अभि राम ॥६६॥ \*  
 और लट् क औरै ठवनि से सोन कवि सोइ  
 नमत दूसरे और जहं अमत परा रथ होइ  
 चिंता मगि कवि कावित मे रचि ॥ अतः कवि को

यहै गहे पर हार है पर पीतमे सुहाव ॥ सव थ  
ल देखो मेन है ऐसो सती सुभाद ॥ ६८ ॥ वा  
क्य दोष ॥ अर्थ दोष गाना अर्थ अपु वृत्त का  
पुनि व्याहत अस पुनरुक्त ॥ अनामो संस  
थित पुनि जोन होत संयुक्त ॥ ६९ ॥ और प्रसि  
द्ध विरुद्ध पुनि अनवी कत मन गन्य ॥ नेम  
अनेम विहीन पुनि विन विशेष सामान्य ॥  
७० ॥ साकी ओ पद जक्ति पुनि सह चर मि  
न्न विचारि ॥ कहिय प्रकास विरुद्ध पुनि चि  
ता मनि निरधारि ॥ ७१ ॥ न्यक्त पुनः स्वीकृ  
त कह्यो निप्रसील वखानि ॥ अर्थ दोष याभा  
तिके अपने मन मे आनि ॥ ७२ ॥ अति विस्ती  
रन समुद्र को पार उत्तरि किनि जाइ ॥ धरि नर  
वर तुव गुन कथन कियो न जाइ वनाइ ॥ ७३ ॥  
कार्य ॥ दोहा ॥ करन दियो है सूर के या दिन  
जात विहात ॥ तेरा त्यागते भिटत नहि संची  
बोलत वात ॥ ७४ ॥ व्याहत ॥ दोहा ॥ सुधि न जा  
हां निज कथन की सो व्याहत मज्ञान जोनि  
जित कहिये प्रथम सोई पुनि उप मान ॥ ७५ ॥  
तेरे सम होना तवो चन्द मूवी यह चंद ॥  
कमल नयन तो नयन लरिब कमला गति

हुति मंद ॥ ७६ ॥ पुनरुक्तार्थ ॥ दोहा ॥ काहू को  
वर बन करत होइ विरुद्ध प्रकास ताको सोई  
कहत है जाको मन पर गास ॥ ७७ ॥ मोहि  
चहत दिल्ली सनीह रत तरवार नरेस ॥ क  
हत न क्षितिको समुद्र सो कित मानो सं  
देस ॥ ७८ ॥ जांमे विधि अस वाद को कथन  
न नीको होइ विध्यनु वाद अयुक्त सो कह  
त विवुध सय कोइ ॥ ७९ ॥ प्यो अयो परदे  
मेत सख समुद्र अधिकात ॥ अति प्रचर वे  
धित सखा सोवंगी तुम पात ॥ ८० ॥ उपसंह  
त करि बाक्य को बहुरि कोरे अभि ध्यान ॥  
न्यक्त पुनः स्वीकृत तहां कवि जन करत वखा  
न ॥ ८१ ॥ कालि अली नद लाल को रूप नि  
रखि अभि राम ॥ होमोही सुधिवुधि गई सा  
रत तीर न काम ॥ ८२ ॥ अश्लील ॥ दोहा ॥ हो  
काटार माये चहत छिद्र तके जो कोइ ॥ र  
ताको हर वर पात ज्यो उन्नत है नहि होइ  
॥ ८३ ॥ रस दोष ॥ दोहा ॥ संचारी चार्द रसो रा  
व कथित जो होइ ॥ अस अन भावकी भावो  
अक्त कायते होइ ॥ ८४ ॥ प्रतिकूल वि भावा  
दि को गहन आन सम उक्ति ॥ मुरव को अ



नु संथान नहि अंगहि की बहु जूति ॥८५॥  
 प्रकृतिनि को पुनि विपर्यय अनु मित  
 वर नन जानि ॥ चिंता मनि कवि कहत है  
 परस दोख वावाने ॥८६॥ शब्द कथित सं-  
 चारी अस्थाय रस ॥ दोहा ॥ संका दुरजन  
 के हिये याके हिये उछाह ॥ अरिन सा-  
 हत वीर रस अनु रागी नरनाह ॥८७॥ \*  
 विभाव की क्लेशते व्यक्ति ॥ वाकी मद सु-  
 धि बुधि गर्व वाहिन कहं विप्राम ॥ निमि  
 वासर रोवात रहति कछून भावे काम ॥८८॥  
 प्रति कूलोक्ति ॥ दोहा ॥ \* ॥ प्यारी हंसि के  
 वात कहि डारि गरे मे वाहि ॥ रोस छोड म-  
 ति मान करि जोवन धन की छाहि ॥८९॥  
 अलिशयोक्ति ॥ दोहा ॥ भली भई बहुते अ-  
 ली लारी घरमे आगि ॥ मेरे कर की गगरी  
 लीन्ही साजन मागि ॥९०॥ मुख्या नन सं-  
 थान ॥ दोहा ॥ मै चौपर खेलन लगी निमा  
 संमे मे आजु ॥ वैठी सखी समाज मे भूलि  
 गय वृजराज ॥९१॥ अंगको विस्तार ॥ दोहा  
 कालिंदी सुंदर नदी सुंदर पुलिन सरूप ॥  
 दृढावन धन छाह नकि कुंजनि रूप अंग

प ॥९२॥ प्रकृत विपर्ययाः ॥ दोहा ॥ निख  
 त नैन सहस्र सों सुंदरता सवि सेय ॥ रंभा  
 की मथया दुखित लागत हेत निमेय ॥९३॥  
 अनु चित वर्नन ॥ दोहा ॥ विरहिनि नैननिमे  
 सुझमि वाजार लोमे नवीन ॥ विन देखे पियके  
 रहे मनो स्याम मुख कीन ॥ कहं कर्न अवतंस  
 इत यदि पदन को दान ॥ सं निधान दुत्यादि  
 के बोध हेत सज्जान ॥९४॥ जहां हेत पर सिद्ध  
 है तहं नरहे तन दोख ॥ सब अदुष्ट अनुकार  
 न मे इनते नदी अतोख ॥९५॥ चिंता मनि  
 गोपाल को वर्नन कोरे वनाइ ॥ वक्ता दिक्छो-  
 चिन्यते दोषो गुन है जाइ ॥९६॥ इति श्री  
 चिंता मनि विरचिते कवि कुल कल्प जरो  
 दोष निरूपणां नाम चतुर्थे प्रकरणे ॥ \* ॥९७॥  
 दोहा ॥ पद वाच्यक अरु ला सारि क व्यंजक  
 विविध वावान ॥ वाच्य लक्ष्य अरु व्यंय पुनि  
 अर्थो तीनि प्रमान ॥९८॥ विन अंतर जा शब्द  
 कर जाको हेत वावान ॥ सो वाचक पद हेत  
 है कहत सुकवि परमान ॥९९॥ लक्षक ताको  
 कहत जो होत लक्षणा जूत ॥ चिंता मनि क-  
 वि कहत है यह प्रमान है उक्त ॥१००॥ मुख्या र-



थके बाध अरु जोग लक्ष्मि होइ ॥ होत प्र-  
 योजन पादुके कहं रूठ हित सोइ ॥ ५॥ गंगा  
 घोषक है तहां होत तीर को बोध ॥ सीतल ता-  
 रूप विवता तहां प्रयोजन सोइ ॥ ६॥ तहां वि-  
 जना वनि वह होत लक्ष्मि मूल ॥ जहां प्रयो-  
 जन जानिये कहत ग्रन्थ अनुकूल ॥ ७॥ \*  
 जहं अभिधा अरु लक्षणा अनिकछु भि-  
 न्न प्रकार ॥ होइ अर्थ को बोध तहं कवि ज-  
 नक व्यापार ॥ ८॥ शब्द अनेका रथवरनि अ-  
 तिकछु भिन्न प्रकार ॥ होइ संजोगा दिक्  
 गनन दूत अवाच्य को सार ॥ ९॥ तहां व्यंज-  
 ना वनि दूत यह मं मट तत्व है ॥ चिंता मनि नि-  
 जमत्य मे कवि दूत वरनन आनि ॥ १०॥ संजोगा  
 दिक् जोगने प्रथम एक सों जोग ॥ चिंता मनि क-  
 वि कहत दूत वरनो बहुरि विजोग ॥ ११॥ अर्थो  
 प्रकरण चिन्ह पुनि ॥ दोहा ॥ \* ॥ आनस दूकृत  
 चिन्ह पुनि आन शब्द कृत संग ॥ सामर्थ्यो अ-  
 चित्य ओ देस सों पर संग ॥ १२॥ ओर आभरन  
 आदि ते शक्ति नियं त्रित रीति ॥ एक  
 अर्थ में ओर की व्यंजन ते पर तीति ॥ १३॥  
 शब्द चक्र जत हरि तजे शब्द चक्र करि आनि

राम लक्षणा दसरथ तनय साह चर्यते जानि  
 ॥ १४॥ रामार्जुन तिन दुहुन को परस राम दू-  
 त मानि ॥ सहस बाहु अरु मनि कहै दुओ  
 विरोधित जानि ॥ १५॥ मकर ध्वज इहि चि-  
 न्हते गनत कंदरप लेखि ॥ देव पुरारिसु आ-  
 न पद जोग सद को पेनि ॥ १६॥ मधु मत्स्या को  
 इ लरित राज सामर्थ्य उर आनि ॥ रत्न संधरि  
 सन मुषता ओ चिपो पहि चानि ॥ १७॥ इत  
 राजत परमे श्वर यह रज धानी देस ॥ चिंता  
 मनि कवि जानिये तहां नृपति को वेस ॥ १८॥  
 राजे दिन निसि अमन रवि चित्र मानते  
 लेखि ॥ इत नो बालक बड भयो यह अभि-  
 न्हते पेनि ॥ १९॥ व्यंजन व्यंजन जुक्त पद  
 विरु सुता को अर्थ ॥ वाच्या वाच्या लक्ष-  
 निक को कहि लक्ष्य समर्थ ॥ २०॥ ओ अर्थो  
 व्यंजक वरनि शब्द संगते होइ ॥ व्यंग्य लक्ष-  
 ना मूल यह तहां सुनो कवि कोइ ॥ २१॥ \*  
 लक्ष्मि मूल व्यंग को उदाहरन ॥ दोहा ॥ भ-  
 ई अनूपम चोपतनु प्रफुलित नैननि चैन  
 आंकुस है फेरो हिये वाला पन ते नैन ॥  
 २२॥ कविता ॥ जेवन को आगमन दोसे मकर

ध्वज के नीकी लगी लगन सखी की रस दतियां  
 चिंता अनि पल पल पर प्यार चढ्यो उपज्यो  
 वियोग व्याधी विथा दिन रतियां ॥ मोह ही-  
 ते जहां तहां पिय को देखन लागी हंसि रे-  
 लि बोलि सहां लह्यो है सुख तियां ॥ याही  
 सोमो आये वेद संचे आपु आपु ही ते नकल  
 लप कुलागी लालन की छतियां ॥ २२ ॥ अ-  
 र्थ अनेकार्थ पद व्यंग ॥ दोहा ॥ सखी है सखि  
 यां सखे अवहो भई अचेत ॥ मे मनु दीन्हो आ-  
 पनो बै दूत पाउ नंदत ॥ २३ ॥ अर्थ व्यंग्यक ॥  
 वर्तिय मान सुरति गोपना ॥ कविता गनीष  
 म मे व्यापी कूप सरवर सुखे सब जल नदी  
 भिरनाते आवतु नगर में ॥ जहां जात आवत  
 लगत कांट भारन के होन जेहो हूं ही पान  
 पीवति हों घर में ॥ अति दूर हीते भरी गारा  
 लै आवति हों छूटत पसीना कोंपे अंग धर धर  
 में ॥ वाहति हों पुनि सासु नन दभु कौन मोपे  
 जाउंगी तो अरुगी भरि दुप हर मे ॥ २४ ॥ इति  
 श्री चिंता मनि विरचिते वाचि काल कल्प तरौ  
 शब्दाणि भिरपाण नाम पंचम प्रकारां ५  
 दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधम र त्रिविध कवि-

त पहिचानि ॥ तिन के लहा उदा हरन देत  
 लेहु मन आनि ॥ १ ॥ वाक अर्थते कहत मनि  
 व्यंग अर्थक जह होइ ॥ सो जन उत्तम क-  
 वित यह जानत वाचिकोइ ॥ २ ॥ उत्तम व्यंग  
 प्रधान गन अप्रधान गन व्यंग ॥ सो मध्यम  
 पुनि अधम गन त्रिविध चित्र अव्यंग ॥ ३ ॥  
 वाच्य लक्षणे भिन्न जे कवितु सुनोते अर्थ  
 भासेते सब व्यंग कहि वरनत सुकवि समर्थ  
 ॥ ४ ॥ उत्तम काव्य को उदा हरन ॥ दोहा ॥ सखि  
 निसि ते पतसों जितो रति रन मदन प्रसाद ॥  
 सुंदरि जय दुंदुभि सज्यो कल किंकिनी निनाद  
 ॥ ५ ॥ कविता ॥ कीन्हो मधु पान सुधि कथु नैन  
 रही मन भाई को अवर स्याम बोल्यो चित वा-  
 न के ॥ चिंता मनि कोहे लाल लोचन ललित  
 सोहे लाल भाप कोहे रत्न जेहो अल साइके  
 हमसों घरी कोमे राखते कहि आवन सो दी-  
 न्हो मन भावन दरस भोर आइके ॥ रहो नक-  
 ल नायक रास कनिसि चांदनी की देखे हा-  
 ल आस खाल बाल को सुवायके ॥ ६ ॥ \* ॥  
 दोहा ॥ एक विरचित वाच्य ध्वनि सकु विव-  
 क्षित वाच्य ॥ दोहा ॥ उत्तम काव्य यह मत क-

वि पंडित राच्य ॥ ७ ॥ वक्ता की वृद्धा न जहं  
 वाच्य अर्थमें होइ ॥ सो अवि वक्षित वाच्य है  
 कहत सकल कविलेइ ॥ ८ ॥ अत्यंतति रस क  
 त वाच्य अनर्थ संक्रमित वाच्य द्विविध मू  
 ल ध्वनि वरनते आदि वक्षित वाच्य ॥ अत्यं  
 त तिरस कृत वाच्य को उदाहरन ॥ दोहा ॥  
 सज्जनता प्रगटिन करी कियो बहुत उप  
 कार ॥ ऐसे काजु वारो सदा जीवो वर्य न जा  
 र ॥ ९ ॥ अन्यार्थ संक्रमित वाच्य ॥ दोहा ॥ तो  
 सो पद हम कहत हैं रक्त संगति मति जा  
 हि ॥ कीजे काम विचारि के भले आपनी  
 चाहि ॥ १० ॥ वाच्य अर्थ सुवि वर्तिता वाच्य  
 द्विविध पहिचानि ॥ लब्ध अलब्ध क्रमानि  
 सों व्यंग्य समन में अनि ॥ ११ ॥ प्रति शब्द  
 कृत लब्ध क्रम व्यंग्य सुद्विविध वखानि ॥  
 शब्द अर्थ जुग सक्ति भव इमि ध्वनि भेद  
 सुजानि ॥ १२ ॥ शब्द सक्ति उदभव व्यंग ॥ \* ॥  
 दोहा ॥ अलंकार की वस्तु जहं व्यक्त शब्द  
 ते होइ ॥ शब्द सक्ति उदभव सु वह वरनत  
 हैं कवि कोइ ॥ १३ ॥ शब्द सक्ति मूल व्यंज  
 ना कार को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मधु मोदित

अलि मंजरी मंजु मौलिछवि जाल ॥ पद्म  
 गग पल्लव ललित राज तल्लालरसाल ॥ १४ ॥  
 इहां नायक अरु ग्रामकों उपमा नोपमे  
 यते उपमा लंकार व्यंग्य है ॥ शब्द सक्ति मू  
 ल व्यंग्य वस्तु को उदाहरन ॥ दोहा ॥ चौपर  
 खेलत है कहा जुग है जीति सुभाय ॥ ला  
 ल जानें हाथते अरी चुंको यह दाय ॥ १५ ॥  
 इहां शब्द सक्ति सों नायक अनु न योक्ति  
 है है जातन चलियत व्यंग्य ॥ दोहा ॥ दोऊ  
 पद गत वाक्य गत जो गनि चारि प्रकार ॥  
 अर्थ सक्ति भव भेद के कारत विदुध विस्ता  
 र ॥ १७ ॥ अर्थ सक्ति उदभव ध्वनि भेद ॥ \* ॥  
 दोहा ॥ स्वत संभवी सुकवि की पौढ उक्ति  
 पर सिद्धि ॥ कविनि वद वक्ता हुकी पौढ उ  
 क्ति पर सिद्धि ॥ १८ ॥ विविध अर्थ व्यंजक  
 छविधि वस्तु अस कृत रूप ॥ लोको व्यं  
 ग्य छ भेद सों द्वादस भेद अनूप ॥ १९ ॥ मेरी  
 बातनि आजु उन दियो कान छविखानि ॥  
 सुनत तिहारो नाम के मुस कानी मृदुयानि  
 ॥ २० ॥ इहां नाम अवनांतर मुस कानि रूप व  
 स्तु करि दुमै वह चहति है मिलेगी वह वस्तु ॥

व्याप होति है काहू देखे कान्हू काहू कहौ का-  
 न्हू कौसो कान्हू कान्हू कान्हू कौरे यों लगन  
 अधि काई सों ॥ बाही के विकल तमें कछु  
 पर बाहि नाही भले हो गुपाल ज निपट नि-  
 दुर्द सों ॥ चिंता मति कहै तुम कौंहो निह  
 चित वैं कहां जाइ कहौगी विरह ताप तई-  
 सों ॥ बाकी यह दशा भई तुम तौ न सुधि लई  
 जानि कौरे दई कोऊ नेहु निरदई सों ॥ २१ ॥  
 यह ऐसी अनुराग वती निरुर जे तुम तिनमें  
 असक्त भई यास विषमालंकार व्यर्थ है ॥  
 कविता ही धन तई प्रान तोही मैं हरिको मनुते  
 रेही रिभाइये की रीति में प्रवीन हैं ॥ चिंता  
 मनि चिंतानित तेरी रहै तेरिही विरह पिन  
 पिन होत घीने हैं ॥ टीका चुनकी जै रकु रास  
 निवृत्त कह छोड़ दीजै तेरे दृज ठाकुर आधीन  
 हैं ॥ तहै पीकेनेन अरविंदन की वृंदिता ओपी-  
 केनेन तेरे तनु पानिषके मीने हैं ॥ २२ ॥ इहां प-  
 रं परित रूपक करि और नायका की और अव-  
 लेखि वी नाही ताते और अलंकार नाही वस्तु  
 व्यंग्य है ॥ आवति दिग दृष्टि तिन तनु हंसति दृगं  
 त निहारि छर कायल मनि रूप मद छकी छवी-

ली नारि ॥ २३ ॥ इहां स्वभाव उक्ति करि सोपर स-  
 काम है इह वस्तु यो नित होति है ॥ स्वभाव की अ-  
 लंकार करि अलंकार को उदाहरता है ॥ कोव सौं उज-  
 हुन को कौन थरावै थीर ॥ दोऊ प्यास जै रके  
 दोऊ सीरे नीर ॥ २४ ॥ इहां नायका अरु नाय-  
 क को अस्यसे जै र मास पिपा सित अरु जै र  
 मास को सीतल जल इन सोम्य भेदन रूप  
 न निरूप अनंकार करि दोऊ परस पर निर-  
 वधि प्रेम पावैं नाते समालंकार यो नित होत  
 है ॥ कविता ॥ कर वास गिरि को मल कामल  
 करते उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलात  
 है जीवै गो से जीवै जो मरे गो बहु मरे मोसो  
 कैसे निरुज वालक कौ झेस देख्यो जात है  
 मेरी कही कामना तो निकसि तारो गी कहि-  
 चली जहां करिका सिलान कौ निपात है ॥  
 जहां कौंटे गोपी गोप गन संग नंद राजी तहां  
 रस की वकौ अचल अधिकात है ॥ २५ ॥ \*  
 कविता ॥ दोऊ जन दुहू को अनूप रूप निर-  
 खत पावत कह छवि सागर को छोड़ें ॥ चिं-  
 ता मनि केलि के कलानि के विलासनि होति  
 ऊ जाने दोहन के चितन के चोर हैं ॥ दोऊ ज-

ने मंद मुसक्यानि सुधावरसत होऊ जनेछ  
के मोद मंद दुह दोरेहैं ॥ सीता जके नैन राम  
चंद्रके चकोर राम चंद्र नैन सीता मुख चंद्र  
के चकोरहैं ॥ २६ ॥ राम चंद्र के नेत्र चकोर  
सीता को मुख चंद्र राम चंद्र मुख सीता के ने  
त्र चकोर यह पर रूप करि दोऊ सम प्रेम  
जुक्तहैं ताते समा कार व्यंग्यहै ॥ इहां कवि प्रो  
क्त वस्तु करि अचल को अस्थि काटू दो को  
जो वरनन सो श्री हनुम की दुष्टा में सब सा  
मर्थ्य है यह अर्थ द्योतितहै ॥ कवित ॥ वाजेज  
व वाजे महा मधुर नगर की चनागरि निनि सिद्ध लल  
ल कानि अबु लाईहै ॥ चिंता मनि कहै अति  
परम ललित रूप अष्टा पर दूलह विलोकन  
को आईहै फैली महलनि मनि मेखला मान  
का महा मनि नूपुरन की निनादन की भाईहै  
पहिले उज्यारी तन भूषन मयूषन की पोथ  
ते मयंक मुखी भारोखन आईहै ॥ २७ ॥ वहां  
चंद्र प्रद प्रदीपा दिवा जे लहादक तेजस पादा  
र्थ तिनके आगमनिते पहिले ही जैसे दीप प्रो  
लतिहै तैसे उनके मुखादि अंगन की असुर  
तन की दीप्ति फैलतिहै पहिले उज्यारी तन

भयन मयूर के पीछे ते मयंक मुरखी भारो तव  
नि आई है ॥ यह कवि प्रौढोक्ति शब्द वस्तु क  
रि इनहों चंद प्रदीपा दिक तिनसौ उपमान  
ए पमेय आवे है याते उपमा लंकार व्याप्य है  
[२४] कविता ॥ परम अपार भवसागर उतावौ एक  
एक नाम श्री वादीति उन्नत निंद ॥ चिंतामनि  
कोते राम अर्जुन अर्जुनि तैरौ कोटि कोटि मह  
पाप दुर्गति रह्यो है ॥ यवन अगोन्वर तोम  
रि सारि हावी साहि बहि कोसक सहाहि श्रुतौ  
ना कह्यो ॥ आपली साहिनी सब देते निज से  
बकन नु सेरवानि लखि नु ज्वंत है सो वै सि  
ने रह्यो है ॥ [२५] इहां कवि प्रौढोक्ति ॥ सिद्धिद  
ता और पावतौ प्रौढार्थ न थिका वरनन में  
मनेर का लंकार परम परम संयन्त्र राससे रा  
म प्रौढादी याते अन्तर का लंकार व्याप्य है ॥ कि  
रासकी वादीति अंतर का अर्थ मोक्ष जो प्र  
पति ये दिक्कम की स्वना विष्णु लक्ष्मी ॥ चिंताम  
नि को देख्यो परस रंज वर को ल छिति मरीच  
नन अपागम रन लासनी ॥ कस किं धनुप न  
दुरंग नर अनाजि न निवारी रह्यो ॥ अरे तं न  
आमि जलनाली यावत नन रंजने काटी सर

पांति प्रलै चंड कर मंडलते चंड कर माल सी।  
 २८॥ इहां कवि प्रौढोक्ति उपमा लंकार क प्रलै  
 कालिक सूर्य मंडल ताते निकारि कि रनि  
 मंडल जैसे जगति को संहार करत है ऐसे  
 मंडलित श्रीकृष्ण के धनुषते सर चंदनिकारि  
 करि जरा सिंधु की सेना को प्रलै कीन्हो यह  
 वस्तु द्योतित हेति है कविनि वद्व वक्ता प्रौढो  
 क्ति सिद्धि वस्तु करि ॥ वस्तु व्यंग्य धुनि को उदा  
 हरन ॥ दोहा ॥ मै समुद्रौ यह आजु ही है अंत  
 क बल वंत ॥ मो सुत माखौ दूंदू जित जिति व  
 ल भरन अनंत ॥ २९॥ अंत क बल वंत है यह  
 कथन रूप वस्तु करि रावन के अंत कह को  
 भय नाही यह वस्तु द्योतित हेति है ॥ कविनि  
 वद्व प्रौढोक्ति सिद्ध वस्तु करि ॥ अलंकार व्यंग्य  
 धुनि को उदा हरन ॥ कवि त ॥ जबते आपुन  
 ल्याये जानु की लंका बीच भये ताही दिन ते भ  
 यंकर निमित्त हैं ॥ परी सेना समुद्र के तट मे अ  
 संख्य कपि रीछन के काटक बढत उत नित  
 है ॥ जौ लौं राम लखन तेरे तेज बानन सों  
 भये लंका पुरी के न भट भित्त भित्त हैं ॥  
 तौ लौं रघुनाथ दिग जानु की पटाइ दीजे सैं

मेरे उत्तम विचार होत चित्त है ॥ ३१ ॥ इहां क  
 वि प्रौढोक्ति सिद्ध जो अलंकार असंख्य सेना को  
 बढिबो सो तुम्हारे विनाश को उपस्थित भ  
 यो है जो सीता राम के निकट पटाइ देउ नो वं  
 श का विनाश न होइ ॥ कवि त ॥ बारिबो रिबे को वृ  
 त्त बोले वृज धर प्रलय बारिद पटाइ वृष्ट ता  
 समुभाइ हो ॥ चिंता मनि आगुनी के वरी  
 पराषि गोपी गोप गंधन को गन को वृष्टा  
 हो ॥ \* ॥ दूर के गुमान वरषा को महा मेघ  
 न को आलो महा मधुवा को रोदन काइ हो  
 वाही के हजार रक लोचन के आसुन सों  
 दर पुरंदर के मंदिर बहाइ हो ॥ ३२ ॥ इहां प  
 स पर कार्य करि बोसो अन्योन्या लंकार क  
 होवे कार्य वह सनी होइ के ॥ असत होइ इ  
 द असत कार्य कीन्हो वृज के धरन को विना  
 स करिबो प्रलै कालीन मेघन को वरषा को गु  
 मान जैसे दूर होइ ये सो चंद्र के सहस्र नेत्र  
 न के आस वरसाइ की मंदिर दहाइ ता बाल  
 को बदलो हो कविनि वद्व वक्ता प्रौढोक्ति र  
 सिद्ध अन्योन्या लंकार करि आपनो परिदृ  
 शो स्वयं अरु वृज को लस धान यह विधि



वस्तु अभि व्यक्त होति है ॥३३॥ कवि निबद्ध  
वक्ता प्रोढोक्ति सिद्धि अलंकार अग्नि को उ  
दाहरन ॥ कविता ॥ अमल अमोल मुक्ता  
हल को हारतें सौहं सनि अमोल मुक्ता हल  
के हारसी ॥ चिंता मनि चारु चीर खुल्यो छी  
र फेन सम सरद जुंहे या सुख सुखमा को  
सारसी ॥ जगत हमारी पर रीभिंहे हमारी प्य  
री राधा रिभा वार सारदा को अवतारसी ॥  
धवल पुलिन मध्य जमुना की धार थ  
सी दुरद रदन धर पर जनु आरसी ॥३३॥ इ  
हां गन पर वृत्त श्री कृष्ण को देखि प्रनय को  
प करि अप्रसन्न हृदय श्री राधा को समु  
भि श्री कृष्ण उनके मन उदास को स्तुति  
कीन्ही सर स्वती अवतार को साम्य दे सा  
भि प्राय विशेषन काहे की प्यारी हमारी रा  
धा रिभा वारि रीभिंहे सवातें सुनि रीभा  
बेकी उन मुख भई सोई उन जूति कही  
धवल पुलिन पर यमुना की धार थसी  
दुरद रदन धर पर मानो आरसी ॥ यह उल्ले  
ख लंकार कह्यो प्रसाद को और हेतु कह्यो  
ताने सामासिक सुकार काव्य करन ना जो वान

यह समाध को लक्षन है ताते ॥ श्री राधा प्र  
सन्न भई अधर सुधार सुधा प्रसाद दीन्हो  
ताते अलंकार व्यंग्य है ॥ यह स्वतः संभवी  
के उदाहरन मैं जानिबो ॥ दूसरो कविता ॥ उम  
डि थुमडि यन अंबर अडंबर लौकाहं लग प्रले  
धन धरा धोर धिरि है ॥ चिंता मनि कोहे चि  
त चिंता जिनि वारो कोऊ काहा लों विचा  
रो ओं विचारो दूंद चिरि है ॥ एक की काहा है  
कोटि प्यार धर धर रहो जो लों कोटि विधि  
की उपज पियारि फिरि है ॥ जानो जानि वडे  
परमान भारी गिरि है सो मेरे कर पर परमान है  
न गिरि है ॥३४॥ इहां परत द्रव्य परमान  
कारि दिखायो यह विरोधा लंकार करि नंद  
पुत्र जे आपु तिन काहा अघटन घटना प  
टी यत्न साधारन धर्म कारि आपनो गरो  
क्त नारायण साम्य व्यक्ति कारत भये हैं ॥ दो  
अर्थ शांति उदभव अर्थ वारह भेद विवा  
द ॥ सो यह काव्य पदार्थ गत छंते समंति  
निहारि ॥३५॥ सिद्ध कहत सब सकल पा  
रत तुरंत ज्यो नम ॥ आपका अरु गुन जू  
नस धवल विद्यो श्री कृष्ण ॥३६॥ इहां व्या

क निर्गुन आत्म स्वरूप सों व्यापक अखल  
जसुकीन्हो निर्गुनते सर्गुन कीन्हो यह वि  
रोध करिये सो कार्य करिबो सामर्थ्य रामही  
मेहै और मे नाही लाते रामसे राम यह क  
वि निबंध वक्ता प्रोदोक्ति सिद्ध अलंकार  
रि अलंकार व्यंग्यहै ॥ पद गत संभवी वस्तु  
करि वस्तु को उदाहरन ॥ दोहा ॥ लोग ज  
गत है वाज पर धरत नाम को नेम ॥ त  
व करि हरि साहजिक दीन बंधु सों प्रेम  
॥ ३७ ॥ साहजिक दीन बंधु पदकों अर्थ विना  
प्रयोजन दीन बंधु हैं यह स्वतः संभवी व  
स्तु करि परमेश्वर परम दयालु हैं स्वतः संभवी  
वस्तु द्योतित होत है ॥ प्रबंध सक्ति उद भव  
को उदाहरन ॥ सवैया ॥ व्याकुल दौरि कैं  
दोऊ जने उठलैं उत आइन जानकी देखी  
दिव्य अमोलक लाल गँयो गिरि आश्रय  
भूमि अग्र ठिकें लेखी ॥ दुख पयोधि अ  
गाध बह्यो गति दीन कछूरघुनाथ की प  
खी ॥ मानो अरन्य भई अमरावति सेसी  
अरन्य की भांति विशेषी ॥ ३८ ॥ ॥ राम  
काह्यो सुनु मीत कहवजु तैर तैर संग मे

है वली ॥ तैले फूल रची जिन मान गलै मान मे  
रिये कंठ मे मेली ॥ माल देहें भुभुं पुलकी जिन की  
यह हास विलास की केली ॥ मोहि बताइ अ  
केली किंतै वह पूरन दंदु मुखी अलवेली  
॥ ३९ ॥ सवैया ॥ बेल से चाह उरोजन वेली केल  
खी कह जाकी लंगै रति चेटी ॥ मीत असोक  
विलो की कहं जिन है जग रूप की रासि सम  
टी ॥ पीत दुकूल लसे पट भूषन श्री मिथिल  
महि पाल की बेटी ॥ सुंदर रूप धरे जनु दामि  
नि राजत दामिनि दाम लपेटी ॥ ४० ॥ तें मृग  
देखी कहं मृग लोचनी बोलि किंतै अव जा  
इ छपी है ॥ छाडि छवीली धने परि हासन  
छाती विछोह के ताप तपी है ॥ तें नहि जान  
त तेरे छुटे पलु तेरी जीव न मोह तपी है ॥ दो  
लितै हरि को याको गुमान जो को किल कुंजन  
में जल पी है ॥ ४१ ॥ से से सवै वन के दूम जं  
गुन प्रहृत जानकी जी को पुकारै ॥ व्याकु  
ल है मुरभाइ गिरे उछलै मनि नैन न नीर  
की धारै ॥ दुख सहो दधिकी लहरें जनु मूर  
छा आवति जाति अपारै ॥ लहरा के उपचा  
र जगै मुख भाई को दीन निहारि सम्हारै ॥ ४२

२०

मेरी भई यह भांति दसा दूत रैन छपी जो  
जो नहि आई ॥ राम जू से से कह्यो कवल  
न सीता जू से सी करी निठुराई ॥ वाचन वीच  
मृगीसी भई सु कहा मृग लोचनी आपदा  
पाई ॥ मैं जिनको अपराध कियो तिनका  
कस हृदन धरि कै खाई ॥ ४३ ॥ इहां दूसरे क  
विजते अंत को कविता छंदों प्रबंध को उ  
न माद व्यंग्य है ॥ उभय समुद्र को उदाहर  
न ॥ दोहा ॥ लसे हार के मध्य सरित सो मो  
रे विसाल ॥ हिये गारिवो योग्य है यह न नि  
नायक लाल ॥ ४४ ॥ इहां वाच्य अर्थ व्यंग्य  
अर्थ के उपमानों प मेय ॥ भावते उपमा  
लंकार व्यंग्य है सलक्ष्य भेद यों कहे एक चा  
लीस ॥ दोहा ॥ असं लक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि  
आनिरसा दिका चित्त ॥ दुते आदि पद लभ्य  
जे तिनै गनावत मित्त ॥ ४५ ॥ प्रथम हिरस पु  
नि भाव गनि तिनको पुनि आभास ॥ भाव सं  
ति अन भाव को उदै बखानि प्रकास ॥ ४६ ॥ भा  
व संधि पुनि सवलता भावन की भन आनि ॥  
असं लक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि तिनको भेद बख  
नि ॥ ४७ ॥ अर्थी तर रस स्वर रस निरूपण ॥

गनि विभाव अनु भाव अरु संचारी नामिला  
दू ॥ जित थार्द है भाव जो सौरस सय गनाइ  
४८ ॥ कछुक यथा क्रम अधिक यह तीन  
हु को क्रम कोइ ॥ व्यंजन कोन लख्यो परे  
तो अलक्ष क्रम होइ ॥ ४९ ॥ भाव लक्षन ॥  
दोहा ॥ मन विकार कहि भाव संत रस वास  
नारुपा ॥ विविध संथ वारता यमल साविता रु  
प अनूप ॥ ५० ॥ जो नहि जाति विजाति सं  
होइ निरस कृत रूप ॥ जव लखे रस तव ल  
जा सुखिद थार्द भाव अनूप ॥ ५१ ॥ कालं  
दित रामादि सुख दुखा थन शब्द जात ॥ अन  
विकार संचारि तजि यह थार्द विर भास ॥  
पावे ल्यावे आपने रूपहि आन ॥ अने दोहा  
विरुद्ध भाव ननि रहि विद्वेषक नेह ॥ ५२ ॥  
५३ ॥ सो थार्द है समुद्र सो जव लखे रस अ  
खाद ॥ तव लागि यह वह रहत है जो थार्द अ  
वि वाद ॥ ५४ ॥ प्रथम हिरस पु  
नि वहु र सोक गन जोथ ॥ पुनि उत्त राह  
र गुण पुनि विस्मय सम बर बोध ॥ ५५ ॥  
यह थार्द नव भेद जो ताको जुंहे निदान ॥  
कार ज सहकारी जगत कवि तामे दाहि आन

५७॥मनि विभाव अनुभाव पुनि संचारीय  
ह नाम॥विभाव नादि अवलोकिके व्यापा  
रन अभिराम॥५८॥निन निरुके अवलो  
किके करि व्यापार गनाइ॥विभावना अनु  
भावना संचार ना बनाइ॥५९॥सर्वज्ञान सा  
धारन त्रिविध व्यापारन को तीन॥सुहृद  
या द्विध विर भावको व्यंजन व्यंग्य मर्जीना  
इ॥साधारन व्यापार वल सब साधारन है  
इ॥नियत प्रसारहि मै यदपि तहो अपर नि  
त होइ॥६०॥महा नंद उल्लास वह मुहूर्त  
संवल कोइ॥सज्जन सरवद जु मंथनै बरु  
नि रूपना सोइ॥६१॥रत्या दिव्य कोइ तु जे  
ज ओर सह चारि॥जगो मै तेई तफत में अ  
न नाम निर आदि॥६२॥विभाव नादि को  
लोकिक व्यापार निरुमिना ते विभाव अनुभाव  
संचारी धरि चित्त॥६३॥साधारन व्यापार  
सों जग साधारन जानि॥ते विभाव अनुभा  
व अह पुनि संचारि वरवानि॥६४॥याई सा  
मायह कहिय वसत वासना रूप॥व्यक्त वि  
भवादि कनि मिलि रसहै लसत अनूप ६५  
प्रथम कहत शृंगार को विभा वादि दूत आ

नि॥अपारे सिंगरे सबन के कहिहों सिंगरे जा  
नि॥६६॥याइ हेतु जग मध्य जो कादित म  
अ सुदि साव॥आलखन रुहीप नो द्विध  
थ प्रसिद्ध गनाव॥६७॥नायका ल॥दोहा  
आलखन शृंगार को लिय नायका वरधाति  
कालानि प्रदीप बिला सिनी सुंदरता की खा  
नि॥६८॥कादित॥बहव मै विधि कांति दो  
रीको मजानी जाति सोरे गात वेरी नारी के  
सुरि के रंगवी॥चितामनि कोहे चारु चंद्रिका  
सी हासो खेले मिसि भावता बली मुवात फा  
ति संग की॥मनोओस खुद लाल विव पर वि  
ल सतु अपर की आभा मुवाता हल को सं  
गकी॥यग परको सरंग अंगन अनूपयोय  
अंगन मै टाही सानो अंगना अनंग की॥७०  
दोहा॥दिव्य अदिव्य कोहे सुकावि दिव्या दि  
व्य विचारि॥विधेय नायका जगत मै मं  
थन वह निहाये॥७१॥दिव्य देव नित्य वाने  
ये नारि अदिव्य वरधानि॥अमर नारि सुव  
अव तरी दिव्या दिव्य सुजानि॥७२॥नखते  
दिव्य तिथा वरन सिखते विबुध अदिव्य ॥  
नखते सिखते वानिये जोलिय दिव्या दिव्य॥७३॥

इहांनख सिख वर्ननं जानवी ॥ दोहा ॥ प्रथम २  
सुकीया नायका पुनि परकीया जानि ॥ पुनि  
सामान्या समुभिंये यों कवि लसत बखानि ॥  
७४ ॥ स्वकीया लहन ॥ दोहा ॥ जो अनेही पुर  
षमें प्रीत वंत निर धारि ॥ कहत स्वकीया ना  
यका सज्जन सुकवि विचारि ॥ ७५ ॥ सील सु  
थार्द लाज जुत गुरजन सुकवि विचारि ॥ प्री  
तम के चित हनि सो कही स्वकीया नारि ॥ ७६  
कवि ॥ चिंता मनि सरखी कोऊ सीख देति  
कहै जय सतता के जानि हो ॥ पीतम सो जायसों  
जीवको बरने बाहि वरज्यो चहै तज्जाइ बाहि  
पेन सखी कहू सह चरी लिया सों ॥ गुरजन २  
संमत सकल आचरन बाको वरनत होत २  
नाह चाहिय सों ॥ पीउ जानै गुरजन हूँ मैं नवा  
ल जानै गुरजन जानै कहा बोलि जानै पिय-  
सों ॥ स्वीया भेद ॥ दोहा ॥ मुग्धा मथ्या प्रगलभ  
तीन भेद निर धारि ॥ सुभा स्वकीया नारिके  
तत कवि संघ विचारि ॥ ७७ ॥ जाके जीवन अं-  
कु रिन सो सुग्धा वर नारि ॥ दुहु वहि कस सं-  
धिमें तव बय संधिनिहारि ॥ ७८ ॥ उवन चह  
त जीवन सखी सुंदरि काला निकेत ॥ मंद मधु

र मुसकनि मुख कियो जुहेया खेत ॥ ७९ ॥ +  
कवि ॥ राधाजूके संग संग रुचि त्यों रुचि  
र वासु गुलावलके रंग रुचि सौर भाजि सों  
भिरि ॥ चितहि चुगवति सुको किल कीक  
नी लखी वानन चितौनि प्रेम मदकी मनो  
भिरि ॥ चिंता मनि सोही है रसाल सोरेकुं  
जनि मे अलिन के पुंजन सुमानो मुनि आ  
धिरि ॥ तातन के तीच तरुनाई आदि सिस्ति  
रमें नाथ सुदी पंचमी में ज्यो वसंत कीसि  
री ॥ ८० ॥ दोहा ॥ मुग्धा अवि दित जो वना  
अविदित कामा पौरि ॥ विदित मनो भव जो वना  
बहु भिन बाढ़ा लेखि ॥ ८१ ॥ पुनि विप्र ध्वन  
गंद गान कोमल कोषा जानि ॥ चिंता मनि  
कवि कहत हैं बर विधि मुग्धा मानि ॥ ८२ ॥  
अवि दित जो वना ॥ संवेया ॥ वांकी भई  
भकुटी विन कारन लोचन कानन आनि  
रहैं ॥ छाती कहु उचकी विन ठौर वंकी  
चितवै नूक भाउ लहैं ॥ पाइ उठाइ धरे  
गारु मनि वैन सकोच न जात कोहैं ॥  
मानहि मोन विचारि कोरे मेरे अर्गनि को  
न सुभाज गंहेहैं ॥ ८३ ॥ अविदित कामा ॥ को







थुकर अकुलाने मानों छल की शरीर जन  
के ऊपर है लहरे ॥ ८५ ॥ विन अ न दोहा ॥  
सबैया ॥ लाल की दीठ बचाव के चाल कि  
यो चंदे हरि प्रदीप की वार्ता ॥ पीके हिये स  
ख पुंज बढौ सुतौ प्रहृत ही कछु बात  
सुहाती ॥ लागत ही तल में पतिको कर चं  
द मुखी चित चौक सकाती ॥ सोई है आ-  
ई के पीतम साथ पें सुंदर हाथ छयाइ के  
छाती ॥ ८६ ॥ सोई के मेरी प्रतीति लै देखो-  
हो भाजिन जांडगी योही बुरे जिन ॥ नेकु  
दया करी काहे खिभावत रातिकी भाति  
सो अंग भरी जिन साथ तिहारे हों पोरि  
रहो पर छाती के ऊपर हाथ धरो जिन ॥  
जो कछु की कसो बालि परो पिय दाय प  
रो कछु आज करी जिन ॥ ८७ ॥ को भल के  
पा ॥ सबैया ॥ और तिया की छुई छतिया  
पिय नौल बधू सो कहं लखि पार्द ॥ भां-  
कि भरोखे हें अचल बोट हंग चल ताकि  
के भौंह चढ़ाई ॥ अंदर दोन छपाई के अं  
गन पोरि रही पलका रिसवाई ॥ मेरी लया  
रो है प्रानहते मुंह चूवि लडाइयो कां ललगा ॥

८५ ॥ मध्या ललन ॥ दोहा ॥ जातिय के हिय  
होतुं है लाज मनोज समान ॥ ताको मध्या क  
हत हें सिंगर सुकावि सुजान ॥ ८५ ॥ सबैया ॥  
पेलो चोह पिय की विन बोट वनेन कछु वि  
न घुघट खोलै ॥ भावेन संग छुटो पतिको  
सकु चैन कोरे कछु काम दालोलै ॥ चाहति  
वात बाहोन कहो पर जातरहोन रहे अन  
बोलै ॥ भूलतु है मन प्रान पियारी को लाज स  
नोज के बीच हिडोलै ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ कहि आ  
रुहो जोवना आरुदे मदना जानि ॥ पुनि विचि  
त्र सुरता कछु प्रगलभा वचना मानि ॥ ८७ ॥  
अरुद जोवना मद उदा हरन ॥ सबैया ॥ मन  
नेन विमाल रसाल चितोन पैलाज सुभाव  
लए अपनो ॥ कचलावेलचे कुच भार सों लं  
क सैव तन कंचन रंगानो ॥ पग पें जन ओ वि  
छिया भल के कल किंकिनि नेवना दयनो  
यह पूरन जोवन चंद मुखी चली आवति मं  
द गयंद मनो ॥ ८८ ॥ अरुद मदना मध्या ॥  
काविज ॥ अवलोकिनि में पलकों लगे पल-  
कों अवलोकि विना ललकों ॥ पतिको परिपूर  
न प्रेम पगी मनि और सुभाउ लगेन लदे ॥ ति

यकी विहसो ही विलोकनि में मनि आनंद आव  
 नियों भल के ॥ रसवंत कवि जन को रसु ज्यों का  
 ख रान के ऊपर है छले के ॥ १०६ ॥ कावत ॥  
 चेतकी चांदनी के रों चंद अवले का न वे रों र-  
 नीथ छीर के पूरन पूर उमंगे ॥ चिंता सनि ॥  
 कहै मन आनंद मगज है के विहरनि दंपती ॥  
 रस प्रेम सो पगे ॥ अथ खली करि दया सुखति  
 सुख रसवस माने भोर अथ खली कामला-  
 नि में खगे ॥ प्यारी के सकल तन यम जल  
 बिंद सोहे कानक लता में मुकता फल मरी ॥  
 लगे ॥ १०७ ॥ प्रगल भा जोवना मध्या ॥ सवैया ॥  
 रंहे प्रीति महा सिगरी परि हास के ललन ल-  
 हागुने सी ॥ मोसों सदा रिहि बोलन को चतराई  
 के वैन विचारि चुनेगी ॥ नेक रहै मति वालो  
 आवै जानि पावन पैजनि भान उनेगी ॥ जानती  
 हैं सगरी सखियां मेरे नेवर की भाज कार सुने-  
 गो ॥ प्रौढ़ा को ल ॥ दोहा ॥ कोलिकाला में चतुर  
 अति प्रीतम सों अति प्रीति ॥ लाजत जेहें मद-  
 न वस प्रौढ़ा की यह रति ॥ \* ॥ प्रौढ़ा भेद ॥  
 दोहा ॥ प्रौढ़ा जोवन प्रगल भा मदन मत्त पुनि  
 जानि ॥ केहि पति प्रीति मती सुरति मोद परदास

मानि ॥ १०८ ॥ प्रौढ़ जोवना प्रगल भा ॥ सवैया ॥  
 कोटि विलास कटाह काला बड़ावे हुलास  
 न प्रीतम ही नर ॥ यों मनि यामे अनूप मरूप  
 जो मेनका मेन वधू काहि ईतर ॥ सुंदरि सारी  
 सुपेद में सोहत यों छति उंचे उरो जन की तर ॥  
 जोवन मत्त गयंद के कंभल से जनु रंग तरंगि  
 भीतर ॥ १०९ ॥ अंगिनि सुदि दे के भिमि अनि  
 अचानक पीठ उरो ज लगावे ॥ कोंह कट्टे मुस  
 कषाद चिते अगारत अनूप जंग दिखवे ॥  
 नाह छुड़ छल से कृतिया होम भोंह चढाद  
 अनंद बड़ावे ॥ जोवन के मद मत्त तिया हित-  
 सों पति को नित चित चुगवे ॥ ११० ॥ रति प्री-  
 ति मती को उदाहरन ॥ सवैया ॥ लीन सी है त-  
 न प्रीतम के सभरे अति आनन सों जिय को ॥  
 मनि आपुहि ते मुख चुवन के सुहरे मन मोह  
 न के हिय को ॥ छन मान बितावति है छन दे  
 सुछना छन दे सुख यों पिय को ॥ रति कोल वि-  
 लासिनि छेडि के और न भावे कछू तरुनी ति-  
 यको ॥ १११ ॥ रत्ना नंद परवसा ॥ सवैया ॥ प्रीतम  
 को रति रंग समै सुमनों रस को वरसा उनई है ॥  
 ऐसे भुजा भरि भोंट रही जनु दे तन की करि ए-

कलक है ॥ सुंदर मोहन के मुखों मुख लाद अ-  
नंद में लीन भई है ॥ ऊंचे उरोज लगाद हिये जन  
अंगन बीच विलाद गढ़ है ॥ १०७ ॥ दोहा ॥ मध्या  
प्रोढा मान में कवि मनि त्रिविध वरवानि ॥ थी  
रा ओर अधीर तिय धारी थीरा मानि ॥ १०८ ॥ व्य-  
प कोष प्रगटे जु तिय मध्या थीरा होदू ॥ को-  
प वचन बोलत प्रगट मध्य अधीरा होदू ॥  
१०९ ॥ मध्या थीरा ॥ संवेया ॥ सांभते चंद्र का-  
लंक उचो मन मेरो लै साथ रहे तुम न्योरा ॥ वैदि  
वची मनि मंदिर वीच खेग ॥ सब दीप प्रकास  
अध्यास ॥ प्रातहि पाद सुधा मय पार नानेन  
चको रन मोहन प्यारि ॥ कैंपान अनूप कला प्रग-  
टो अकलंक कलानिधि मोहन प्यारि ॥ ११० ॥ म  
ध्या थीरा ॥ कविन ॥ कहां जागे रेन आस निपट  
उनी देहो जू सोदूर हो प्यारि विधो आँखो पर  
जंको है ॥ खिलत हैं चांदनी में ग्वालन के संग कादू  
ग्वालन को नाम लीजो कहा कछु संको है ॥ योही भले  
मान सैल गावती कलंक हो कैं देखो कहं चिंताम  
निरतिहू के अंको हैं ॥ पीत रंग अंबर सुनील रंग भयो  
लाल भूठी हो गुपाल तुम्हें कोहे को कलंक हो ॥ १११ ॥  
दोहा ॥ वचन रुदित के संग कहि कोप प्रकासै नारि

मध्या थीर अधीर तिय वनि जन कल विचारि  
११२ ॥ उदाहरन ॥ संवेया ॥ गति नंदे मनि लाल कहं  
रमि इहां दुखदाल विधोगल हो ॥ आस थोर अरु नो  
द्वय होत सरोस तिया दू मय के बांहे हैं ॥ लाल  
भये दग को रनि आनि को को अंशु बान के वू  
हर रहे हैं ॥ चोचन चोप मने लीपिले विचरव  
जन हाडिम बीज गहे हैं ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ प्रोढा  
थीरा नेकु नहि कोपे को प्रकास ॥ पति को  
अति आदर को रनि ते रने उदास ॥ ११४ ॥ सा  
वहि आको उदाहरन ॥ संवेया ॥ बोलति बाहे  
न बोल मुने मधुरी बलि का मन मोहन भारे  
बोलै बाहा कछु चित्त में है दुख पित बड़े कदु  
लागती हारें ॥ पाले हैं लाल बिलो को नवाल  
क्यों तेरी बिलो कनि को आभ लावें ॥ लाल भ  
ई विन काजहि आजु संहरी कहा मेरी दूरव  
ती आरें ॥ ११५ ॥ सादर थीरा ॥ संवेया ॥ आज  
क्यों पलकाते थोरो पुहरी पर साथे हमारे न  
पाव थोरो ॥ काह बोलो सखीन सों संभ्रम सों हं  
सि बोलि हमारे न ताव हरो ॥ कित जान हो पान  
न आन को मान लो आन मुजा भदि अंक भरो  
दुख देत सभै वित बाहर रें वहु आदर प्राप

नौ दूर को ॥ ११६ ॥ रतु दास थीरा ॥ संवेया ॥  
 वोलौगी वैनतो बानन चैनन वोलौगी वैन अ-  
 नंद भईहौ अंचल सों मुख मंदि रहों तब ध-  
 नमै जो धरि चित्त लईहौ ॥ वैठति काहे न  
 हो दिग सुंदरि मोको दई सुख रास दईहौ ॥  
 मोहि गनौ निजु दास मनो तुमको बिन काज  
 उदास भईहौ ॥ ११७ ॥ जावक रंजित भाल  
 किये मन भावन भावती गेह सिधार ॥ दूरि  
 भौह कामान चढ़ाई के सुंदर नैन काटाह ते ध-  
 रे ॥ आइ के बालम वाह गही दिग चंद्र मुखी  
 भुकि के भाभ कारे ॥ चंपक मालसी को म-  
 ल बाल सुलाल चमेली की माल सों मारे  
 ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ पौढ़ा थीरा थीर तिय बोलै थी-  
 र अथीर ॥ चिंता मनि कवि कहत है समु भा-  
 त बुद्धि गंभीर ॥ ११९ ॥ कविता ॥ मेरी कहा च-  
 लीहोन आपनी कहति बात वही भली करौ कथ-  
 काहू सौ निवाहिजो ॥ मोहि अजिगरा जाइ वामों  
 सुकरम कियो यह कौन धर्म तजत अवाहिजो ॥  
 चिंता मनि कहै कौन वाकी सुधिलेत जाइ जाकी  
 मन को व्याकुल करिताहिजो ॥ जांपै रति मानि  
 प्यारे अपार हो हमारे घर सको धरी करौ बाकी

प्रीति को मुलाहिजो ॥ १२० ॥ दोहा ॥ जहां हेति  
 है हेति या नहीं रीति वह जानि ॥ पुरुष अ-  
 धिक चट प्यार ते जेय कनिष्ठा जानि ॥ १२१ ॥  
 कविता ॥ ॥ गवा पलका पे वैठी सुंदरि मलेनि  
 होइ चाहिये ठुकीली लाल आयो रतिकेलि  
 अर ॥ चिंता मनि कहै दिग बढो आनि पीतम  
 पे काहू सों कसू न कहि सकत दुह के डर ॥  
 मुद के मजा दुख को रुका को दिखायो नाह  
 विपरीति रतिको सुख लखि चित्र पर ॥ जो  
 तों सकाचन वद ओखें मंदि रही तौलों पान  
 प्यारे प्यारी के कुचन पर रख्यो कर ॥ १२३ ॥  
 परकीया को लहरा ॥ दोहा ॥ प्रीति को पर पुरु-  
 ष सों पर कीया हो नारि ॥ उंठु और अनुर-  
 गति सों हे भांति विचारि ॥ १२४ ॥ उहा होइ वि-  
 वाहिता अविवाहिता अनुर ॥ परकीया दो-  
 ति की जानत जगत अनुर ॥ १२५ ॥ ऊल को उ-  
 दाहरन ॥ संवेया ॥ अति सासु भको ननदी स-  
 त रात लखे कुल कानदी दानपरी ॥ घर बाहि-  
 र सों बलि वैर बढो सु अजो तुमको नहि जा-  
 नपरी ॥ मनि भांभ गली तुम वाह गाही सु-  
 तो कौन अहो यह दान परी ॥ वह बात कही

हुती कानन में सुनी कानन कानन आनपरी  
 १२५॥ दोहा ॥ सुरत गोपना चतुर कहि कुल-  
 टा बहुरि बखाना ॥ कहत ललितता सुकवि जन  
 अनुसेना उर आन ॥ १२६॥ सुरत गोपना को  
 उदाहरन ॥ कविज ॥ गीखम में वाणी कूप स-  
 रवर सरवे सब जल नदी भिन्न नाते आवत  
 नगर में ॥ तहां जात आवत लगत कांटे भर  
 न के होन जैहों हों ही पानी पीवति हों घर में  
 अति दूर हीते भारी गागरि लिआ एकै सो  
 छूट पसीना अंग कां पे थर थर में ॥ कहति  
 हों पुनि सासु ननद भुवै न मोपै जाऊंगी  
 तो आऊं में भर दुपहर में ॥ १२७॥ दोहा ॥ वर-  
 नत सुकवि जू नायका द्विविध चतुर सिरमौ-  
 रा वचन चतुर कहि एक पुनि क्रिया चतुर  
 पुनि और ॥ १२८॥ वचन चतुर को उदाहरन ॥  
 कविज ॥ एहो तुम कोहो नेकु थरै क्यों न रहौ दे-  
 खो चिंता मनि वागन में को पै लहलही है ॥ तु-  
 मको थरम है है देव अरचन काज सुंदर चमे-  
 ली की कली कछूक चही है ॥ वाग में अध्या-  
 री डरु लागतु है जात उत ताते हों कहति इहां  
 जो लोग और नहीं है ॥ कैसे करि जाउं फूल लें

नहों अकेली इहां तो आछि आछि फूलन की  
 वेली फूल रही हैं ॥ १२९॥ क्रिया चतुर को उ-  
 दाहरन ॥ संवेया ॥ कैसे देव बधू नसे कोऊ  
 होइ तो ताको बरावरि वाछे ॥ सो कहति है जखने  
 सिरखलों मनि अंग अनूप सिंहासन को ॥  
 सील बहादुर जनादु विने चहै मानु ओनंद  
 जिहानी के पाछे ॥ नेन को सेना में सोहन की  
 मुरावे मुसबयादु विलो कानि आछि ॥  
 १३०॥ दोहा ॥ जहां प्रीति पर पुरुष की आ-  
 दित जग में होइ ॥ ताहि ललितता कहत है  
 चिंता मनि कवि लोइ ॥ १३१॥ संवेया ॥ सोन  
 की लाज से काज कहा मन मोहन तें कल  
 कानि दुगी हैं ॥ वोलें कहा हम बावरी है वह  
 सावरी सरति देखि ठगी हैं ॥ जानति नंद जि-  
 हानी ओ सासु चहूं दिसि मेरे दवर जगी है  
 जाने सो कोऊ हजार कहो हम नंद कुमार  
 के प्रेम पगी हैं ॥ १३२॥ दोहा ॥ बहु पुरखान  
 की केलि को जाके मन अभिलाख ॥ कुलटा  
 तासों कहत हैं सब सज्जन कविलाख ॥ १३३॥  
 संवेया ॥ छेलनि गेल में आवत देखि के भां  
 कि भारोखनि रीभि रिभावे ॥ चंचल अंचल



डारे रहे अगाराद अनूपम रूप दिखावै ॥ ला-  
दू की गति नैनन की निरखे निरखे विन  
चैनन पावे ॥ जोवन के मद मत्त तिया तजि  
काम की केलि सु ओरन भावे ॥ १३४ ॥ अ-  
नु सेना ॥ दोहा ॥ संकेत स्थल के नमत भावि  
स्थान अभाव ॥ मीत गयो हों ना गर्द जो पोछ  
पछिताव ॥ १३५ ॥ हेतु अनु सेना त्रिविध  
विधि वरनत सब क वि राट ॥ क्रमते देत उ-  
दाहरन सब सज्जनन सुनाइ ॥ १३६ ॥ प्रथम  
कावित ॥ गेहै सजीव को उ कछे गोद न केहे  
त अधर मलेत कौन ठाट स ठाट तेहें ॥ सिंगरे  
काम हई हे इनके कहा सुभाइ ओरन के तो हाइ  
हाइ हियरा फाट तेहें ॥ चिंतामनि सज्जन दुहाई  
तिहें पूछे दरबो आगे न्याउ बहे वैतौ इनको डाट-  
तेहें ॥ देखे इहि देस आलीखे निरदई लोग हरे  
हरे रुख अहर के काट तेहें ॥ १३७ ॥ दूसरी सेवैया  
आली अगरी चौवारे त्यों मंदिर वैट्कासन सुहावन  
जीके ॥ खेलन को तुमको थन ठौर है जैसे उ-  
तैं सुख पावे गी नीके ॥ हैमनि सुंदर लोग उ-  
जागर नागर नेह पगे परतीके ॥ ज्यों दुहा  
त्यों ससुरारि तिहारी में वाग बडे दिग हैं

खिरकी के ॥ १३८ ॥ तीसरी ॥ सेवैया ॥ अपने भी  
त परोसी सों सुंदरि सने चौवारे सहेत वखा-  
नी ॥ दू उन बोलि कपोत की बान अगार  
आनि दूसारत ठानी ॥ जागत है भरता यह जा-  
नि मनोज के बान लगे यह शनी ॥ आइ ग-  
यो तने से परसे दपरी पति संगारि खरी अकु-  
लानी ॥ १३९ ॥ मुदिता ॥ सेवैया ॥ द्वे दिन को  
पय तीरथ न्हा न को लोग चलेयो सिनि के  
सिग रोई ॥ सासु वह सों कह्यो यों रहे ख-  
ओर रहे नहि राखिय कोई ॥ सुंदरि अनंद  
सों उमगी यह चाहनि ही जु भयो अब रोई ॥ १४० ॥  
सों पूरन दोऊ जने धर आपु रही को वतौ  
नन दोई ॥ १४१ ॥ दोहा ॥ परकीया ॥ अ-  
ता सुते अनूटा नारि ॥ सब संजन को नै सों  
कवि मन कहत विचारि ॥ १४२ ॥ सेवैया ॥  
जामे कछू मनि सोचु स कोवन आश्रये  
सो तो कछू लरकाई ॥ आवत ही इन नैन के  
रस मोहन के बसिको लल चार्ई ॥ देखे वि-  
ना कल नेकु नहीं अरु देखे तो गोकुल गांव  
च वार्ई ॥ जामे हंसे हू कलंक लगे यह कौन  
थों वैस विस्वा सिनि आई ॥ १४३ ॥ दोहा ॥

प्रेम

अनि व दि



कहि स्वाधीन प्रिया बहुरि वासक सज्जाजा  
 नि॥ बहुरि विरह उन्न कांठता विपुलब्ध पु  
 निमानि॥ १४४॥ पुनि रंजिता वरवानि ये  
 कलहं तरिता नाम॥ पुनि कहि प्रोषित  
 भर्तृका अभिसारिका सुवाम॥ १४५॥ सोस  
 व भेद तिहून के भेदन हू के होत॥ जे जैसे  
 संभवतते तेसे लहत उहोत॥ १४६॥ सो स्वाधी  
 न प्रिया कही जाके नाह अधीन॥ सुतो सदा  
 आनंद मय वरनत सुकावि प्रवीन॥ १४७॥  
 मुग्धा स्वाधीन पतिका उदा हरन॥ संवेया॥  
 जोसो छवि मोहि दिखाइ भारोखेह सोध  
 वि पाइ कही सुर अंगनि॥ चलि नोलवधू  
 मनि नैन चकोर से ज्याये कहा है सुधारस  
 सींचनि॥ अंबर लाल मै यों मुख ज्यों प्रतिविं  
 वत चंद्र हारस्वति बीचनि॥ मानो उदै गिरिकं  
 दग अंबर इंद्रज्यो कुर विंद मरीचनि॥ \*  
 १४८॥ मुग्धा स्वाधीन पतिका॥ संवेया॥ पु  
 ल्यो कलौ मृदुवाग वन्यो मनि मंदिर की ग  
 ति त्यों चरकीली॥ प्यारे यों प्रेम की खानि ख  
 ली अखियां विलसैं मुसकयानि रसीली॥ कं  
 चन के रंग अंगलसैं पिय ते रेही रंग रगी

हैं रगीली॥ मे रेही संग बिहा करिदे अव  
 लाज सों काजु कछून छवीली॥ १४९॥ २  
 पौढ़ा स्वाधीन पतिका॥ संवेया॥ आपुही पा  
 इन देत महा उर वेनी सुहे अरु वेनी डुलावे  
 आपुही वीरी बनाइ खवावे अनैक दिला  
 सनि रीभा रिभावे॥ तेरी सखी सनि आपने  
 मित्र सों ते रेही प्रेम की बातें चलावे॥ तोते  
 विलोकैं को १४ नागिन को विष को पिड  
 को बस पावे॥ १५०॥ इखेन वेनी रास मान  
 धनो सनि जावुव मान को लेर भये है॥  
 सांवरो सुंदर जोसिगरी हज्ज लारिन को वि  
 त चोरिलये है॥ आपने आप जटामे भइ  
 घन चोरि चटान की सोर भये है॥ नंद कि  
 सोर भारो खेकी दोर सुतो चारु चंद चकोर  
 भये है॥ सामान्य स्वाधीन पतिका॥ दोहा॥  
 या पर नेह निपाइ न है यह निपट सकार  
 लन चन गगन लहै है सुही वारी खद वास  
 १५२॥ पिय की आभा बागिनी के अंग सिंगा  
 रे वाम॥ सोध सेज सुंदरि रचे वासक सज्जा  
 नास॥ १५३॥ मुग्धा वासक सज्जा॥ संवेया॥  
 मंदिर सुंदर पुनै सदा मय जो नु की जोति

जहाँ अधिकानी ॥ प्यारी सिंगारी प्रवीन स  
खी मनि मोतिन की सुखमा सर सानी ॥ से  
ज रची पय फेन सीखा पिय आगम वेरी  
जंवे निय रानी ॥ हेरी अली सों चली हंसि  
नोल बधू मुख की लन वादूल जानी ॥ १५४ ॥  
मध्यावाः ॥ सवेया ॥ मंदिर थूप करे से से म  
दिर दंदिरा देवी प्रसन्न निहारति ॥ सेज सं  
वारे दुकांत में आपु सकांतहि आपुन अंग  
सिंगारति ॥ फूलानि हार सुगंध रच्यो जन  
मेरे से और सरवी की सुधारति ॥ दंडु मुखी  
पिय आगम ओसर योंरति कौलि की राज  
संवारीत ॥ १५५ ॥ पोटावाः ॥ सवेया ॥ चंदन  
लीप्यो मनोहर मोन सों थूप्यो भले अगरो  
झव थूपनि ॥ दंडु कला सित सेज रची पिय  
आगम सुंदरि सेइ सरूपनि ॥ अंग सिंगार  
धरे गहने जेवने मुकता मनि दंद अन्न पति  
वास में ऐसो रव्यो वह मंदिर मंदिर मा  
नी रव्यो रस कूपनि ॥ १५६ ॥ पर कीया वा  
सक सजा ॥ सवेया ॥ सेज रची मनि मंजु प्र  
सूननि आवत ही सुख पावहै जोपी ॥ देवत  
सों भगवाम बनी जिन काम बधू हकी दीपति

तिलोपी ॥ बाहिर चंदकी चंदिका आनर ल्यों ह  
ख चंदकी चंद्रिका वोपी ॥ देखे पहा फूल के पुं  
ज कुलाइ असो कके कुंज विराजत गोपी  
॥ १५७ ॥ सामान्या वा ॥ सवेया ॥ सांभ ममै न  
खते सिरवलों मनि दंदनि मंजाल अंग हिं  
गारे ॥ नेकु चितै मुसक्याइ कटाह सुगंधना  
रूप गुमान निकारे ॥ कोसकती आको बार  
बधू मुकता फल दंदन बार संवारे ॥ सीम  
धरे तम तोर तमी पति आनन मानो अमी  
के दुलारे ॥ १५८ ॥ दोहा ॥ नायक के आगम  
समे सुंदरि अंग सिंगार ॥ दो लावति है आ  
भरन पहिरि मुदित वर नारे ॥ १५९ ॥ भु  
ग्धा विर होल्कांठिता ॥ सवेया ॥ बाल भली  
पहिले पति सों उर छट्यो त्यों लाज कट  
न घटाई ॥ नेकु उर्दु मील मेम कला दुति  
दुलह की यह लागी सुहाई ॥ दूसरे दोस  
त्रिजाम लौ बाहिर वात में बालम बार दिताई  
बोलि सकैन सहै लिह सौ चित चंद मुखी  
के भई दुचितार्द ॥ १६० ॥ खंडि को उद हरन  
सवेया ॥ जामिनि की पहिलो जव जाम वि  
तीत भयो पिय गेदन अथो ॥ साजन बोलि

सकै नसरवी नसों वामको कामहिो अकुला  
 यो जो मन बीच विचार करै उनके हन मोहि  
 वियोग दिखायो ॥ जानति हों न कहा गति है  
 मेरे प्रानन को पति को विल भायो ॥ १६१ ॥  
 प्रोढा विःउ॥ सवैया ॥ आजु विलंब भई  
 काहु काज में ओरे पै प्यारे को चितन जैह  
 को कपटी यह जाति बड़ी तुम पीउ तुम्ह  
 रो प्रभात में रहै ॥ आनंद दें है रीकोफा  
 जन नैन सरोजन सों सुख पैहै ॥ तेरो क  
 ह्यो सब दें है सरवी यह पूरन चंद जो जीव  
 न दें है ॥ १६२ ॥ जीवति क्यों अव भारत मा  
 र बड़े दुख जा मिनि जाम विताई ॥ देखे वि  
 ना जग सों पल जातु सुजानि के प्यारे  
 हों त्यों तल फाई ॥ हों लखि हों मुस कयात  
 मनो हर श्री सुख चंद कों सख दाई ॥ अ  
 द पर्यो धौ कहा गुर काज जो बालम आ  
 ज विलंब लगाई ॥ १६३ ॥ परकीया विःउ  
 सवैया ॥ इंदु उदै पहिले ही संकेत में आ  
 गेही दूती यह ठह रायो ॥ नागरि आइनि  
 कुंज के भीतर नागर नेकु विलंब लगायो ॥  
 तौ लगवाके हजार विचार भस अतिवाही

को मै न जगायो ॥ चंद्रिका लीक चढ़ी नभ में  
 प्रभु गोबुल चंद किंते विल भायो ॥ १६४ ॥  
 समान्य विःउ॥ सवैया ॥ जाइ रखी चल  
 ल्याइ उन्हें यह बालवो ताहि उलै तजि दाप  
 हि ॥ आगम तेरो सुमेर है मेरो हों चाहति  
 एक तिहारे मिला पहि ॥ लाजवो मोहि उ  
 ताल मिलाउ कहा त रंचे उपचार अमाप  
 हि ॥ मोतिन हार मनोहर ह्यो बहु मेढे गो  
 मेरे वियोग सता पहि ॥ १६५ ॥ विप्रलः ॥ ल  
 क्षणा ॥ दोहा ॥ जाहि बोलि संकेत पिय जा  
 य आन तिय पास ॥ ताहि विप्रलब्धा वधू  
 कहि कवि करहि प्रकाम ॥ १६६ ॥ मुग्धा  
 विप्रलब्धा ॥ सवैया ॥ पीतम भीतर जानि स  
 रवी निजपेलिके मंदिर केलि पठाई ॥ पीउ  
 गयो गढ़ मध्य छपे मग ओर पै इंदु सुखी  
 इत आई ॥ जोवन चंदकी चांदनि में मग पे  
 म को चाहि हिये अकुलाई ॥ सेज निहारि  
 के सुनी सरूप गुमान के भंगकी भीति दवाई  
 ॥ १६७ ॥ मध्या विप्रलब्धा को लक्षणा  
 ॥ सवैया ॥  
 इंदु मुखी मनि इंदुकी रैनिकरु गुर सेवनहीं

मे विताई ॥ पादनि देशनि वासीहि अपादु सखी  
सुखदै यहु नेह पठाई ॥ सोधके ऊपर खंड ॥  
सिधाइ जहां रति मंदिर सेज सुहाई ॥ नाह  
निहा रौन देखिगरी सुख दायक सेज भ  
दु दुख हाई ॥ १६८ ॥ पोटो विप्र लब्धा ॥ संवे-  
या ॥ कांति कपूरन चंदकि चंदनि पूरन छी  
रथकी छवि छीनी ॥ सलो विलोकि विहार  
को मंदिर क्यों करि जीवैगी प्रेम प्रवीनी ॥ वा  
हि बुलाइ हों औरपे जात सुकैसे बने यह व  
त प्रवीनी ॥ वंचन मेरे कियो सजनी यह  
रंचन प्यारे दया मन कीनी ॥ १६९ ॥ परकी  
या विप्रलब्धा ॥ संवेया ॥ अपादु मनोरथ मे च  
दिके दूत वाके धके सुकुमार थकी है ॥ १  
कीन सके रहि और नि कुंजन खोजन ह  
कौन जाइ सकी है ॥ फूल प्रसूनके खान हजा  
रन मारन कारन मारतकी है ॥ गोन भुलानी  
मृगीसी विलोकि रत्ननि कुंजको चाहि चकी  
है ॥ १७० ॥ सामान्या विप्रलब्धा ॥ कावित ॥ सं  
दौर थनिक नवचोवन निरखि वीर  
सुंदरी सुगंधले गावन को लगी है ॥ बोली म  
सखाइ नेकु वैठिये हमारे गेह दून कही स

नमुख छवि जगमगी है ॥ चमेलिनकी  
कली सों रचना अनूप रची मंदिर मे चंद  
की उदोत जोति जगी है ॥ यह तो अध फूल  
फूल हंसत हैं याहि जानु जग की ठगनी  
काह भले ठग ठगी है ॥ १७१ ॥ खंडिता लल  
न ॥ दोहा ॥ आन वधू रति चिन्ह धरि आ  
यो जाको पीउ ॥ पात चंदे सो खंडिता यह  
रसिकान को जीव ॥ १७२ ॥ सुधा खंडिता ॥  
संवेया ॥ आन वधू रति चिन्ह धरि पात  
हि पीतम आगम कीन्हो ॥ आन के हाथ मे  
आरसीदे मनि नोल वधू मनि नीतर ली  
न्हो ॥ बोली सखी यह रूपकी रस कहें व  
ह वैषा उप दूव कीन्हो ॥ यादु मनेनी पत्मा  
नी मृगी को कहा चित्त लाल को काइ न  
कीन्हो ॥ १७३ ॥ उत्तमा ॥ कावित ॥ जोये प्रान  
प्यारे चित्तवाहन तिहारे कहो तुमही थों  
कहा गति मेरी तो विहारी है ॥ नेह रस भरे  
डीठि राखिये अधीन हों मे स्याम रुचि प  
र जात काम रुचि दारी है ॥ चिंता मनि तों  
लों लह लहे जो लों सींचि यत अनसीची  
कुम्हिलानी मालती निहारी है ॥ ऐसी पा

रुषाई मरजां उगी बारने जाउजी वनि हमारी  
 हंसि वोलीनि तिहारी है ॥१७४॥ मध्याखंडि  
 ता ॥ कुंकम लेपसों कीन्हो सवै तनु लाल हो  
 दीपति पुंज उज्यारे ॥ दुकव हरे हम सींचक  
 ईन के फूले एलोचन बोल विचारे ॥ वाहि  
 र आइते नारिनि की खुली नीविन वेहो बंधा  
 वन वारे ॥ आइ प्रभात दिखाई दई तुमली  
 जिय मित्र रा प्रान हमारे ॥१७५॥ पौढाखं  
 कविता ॥ आन अंगना के अंग संग चिन्ह  
 धरे आयौ पीउ जीउ दूरित जो अराध हो  
 यमै ॥ कोप सुंद राई पर बोपसी चढ़ाई भ  
 यो मोहन को मनु प्रेम कोरी भितो समै ॥ रै  
 नि मग देखि जगी पीतम पे आइ परी नीर  
 भरी अरिवयां अरुन अति रोसमै ॥ ऊपर दै  
 आई जल लहरि आइ कलमले अलि मानौ  
 कोकानद को समै ॥१७६॥ पर कीया रंजिता  
 दोहा ॥ ए सपने को रंक निधि समुभि आ  
 जू पछिताहि भली करति इनसों सरवी जो  
 तू चितवति नाहि ॥ सामान्या रं ॥ दोहा ॥  
 आन चिन्ह लखि कंठते लीन्हो हार उतारि  
 लाल नैन करि हाथ सों गमन बताये नारि

॥१७८॥ रिसते पिय अपमान करि पुनि पी  
 दे पछिताइ कलहं तरिता कहत हैं ताही  
 सों कवि राइ ॥१७९॥ मध्या कलः ॥ सवैया ॥  
 लाजन मै पहिचानि कै भै पुनि हों पहिले  
 पिय को न पत्यानी ॥ पेच सों आलिन दी  
 हो मिलाइ भई मन प्यारे के प्रेम विका  
 नी ॥ कालि अकेलिये सेज में सोई दे आये  
 न याते वाइ मे सकानी ॥ प्रात पिये है अ  
 जी हो वहांत सुराटि गयो उठिही पछितानी  
 ॥१८०॥ मध्या कलहं तरिता ॥ सवैया ॥ काल  
 र रेख लखी अथरा पर प्यारे के प्रात मै प्रात  
 वरखानी ॥ काहु विलोक्यो विभाति बधू कहै  
 सो सुनि के सजनी मुखयानी ॥ नाथ के हा  
 थ दई उन आरसी वैतौ लजाने सुमै यह  
 जानी ॥ पीउ गर उठि के जवते तनु तापनि  
 ते अति ही अकुलानी ॥१८१॥ पौढाकाः ॥ कविता  
 मृग बद चंदन सुरभि अंग आवै कियो प्रा  
 न प्यारे तेरे सोन गोन मेरे आगेरी ॥ ताको  
 आन बधू अंगारा परम लजानित कियो  
 कहल सब सहो बड भागेरी ॥ तोहि रुसी  
 जानि अगमन उठि गयो पीउ कहा खों कर



तजो आये कहूँ जागेरी ॥ अब वैंत भैंत  
नि मानि करि बैठी कात लागी ॥ पछितान  
मन भैंत वान लागेरी ॥ १८२ ॥ परकी याक  
दोहा ॥ प्रेम कियो कुल कानि तजि पठयो  
रिसन रुसाइ ॥ गयो लाल मो हाथते कहा  
लेउं पछिताइ ॥ १८३ ॥ समान्या कलहंती  
ता ॥ दोहा ॥ भई विपुल धन वंत हों जाके  
पाइन सेइ ॥ तसों रिसि अनृताप यह  
मोहि महा दुख होइ ॥ १८४ ॥ पोषित भर्त  
का कोलहरा ॥ रंगार मंजरी यथा ॥ पोषि  
त यह भावर्थ या निततिहं काल प्रवासहि  
कहत आज ॥ सो जामे सो पोषित विचार  
यह प्रिया पोषित भर्तका जान ॥ १८५ ॥  
\* ॥ \* प्रवस्यत भर्तका और जानि ॥ प्र  
स्यत प्रिया पुनि और मानि ॥ पोषित भ  
का और रुक ॥ योतीनि भांति याको विवेक  
॥ १८६ ॥ बडे साहिव अपने गंध माह ॥ निर्नय  
कीन्हो कवि बुदि नाह ॥ १८७ ॥ दोहा ॥ प्रिया  
वासके हेतु कहि ताप धरे यों होइ ॥ कही  
सो पोषित भर्तका समुभालेहु सय कोइ  
॥ १८८ ॥ याके भेद कहत ॥ दोहा ॥ प्रथम प्रव

स्य प्रिया पुनि प्रवस्यत पति का जानि ॥ पुनि  
पोषित पति का कहीतीनि भांति यों ॥ नि  
॥ १८९ ॥ प्रवस्यत पति का कोलहरा ॥ \* ॥  
दोहा ॥ प्रिय विदेस को रोजको उद्यम ल  
रेव दुख पाइ ॥ होति प्रवस्यत प्रिया लिय  
या कुल चित वनाइ ॥ १९० ॥ सु प्र उदा ॥  
सदैया ॥ जानि अजो दुल हीन कहूँ यह  
जाज सिखापते राति है सातें ॥ दूल्ह की दु  
लही वान भूलै कहा जर ही है सको चि स  
सातें ॥ हों दुख सागर में सखि बूडति आ  
नि कही कातते चरचातें ॥ दंपति के पहि  
चानि समै कछु नीकी राणी के पयान की वा  
तें ॥ १९१ ॥ मध्य प्रः उदाहरन ॥ सदैया ॥ \*  
॥ प्रतिम सारयो विदेस नि दे स सुने तिय  
के विरहा गानि जागी ॥ नैन नि सै असुवा  
भालवें तिय के हिय ते सिगरी सुधि भागी  
सुंदर सीस नवाइ रही सुभई माति है अति  
ही दुख पागी ॥ यों निरख्यो मनो जीव सो  
पीव के संग सिधारि वो वृभान लागी ॥ १९२ ॥  
पुलभा प्रवस्यत पति का ॥ सदैया ॥ नाह विदे  
स की चाह सुनी वह साहस काज विचार



कसो है ॥ चित्रलिखी सी हली न चली वपुमा  
नो कलेसन सों अकरी है ॥ जेदे को लाल  
अलिंगन कीन्हो सुवाल दुह भुजसों जक  
सो है ॥ सुदत दुक्वपयो निधिसे पियको  
लियमानो गो पवसो है ॥ १८३ ॥ परवीया  
प्रवस्यत पतिका ॥ दोहा ॥ लोगन वृभाति  
लाल वह पुरीकिती धौं दूरि ॥ लिया कह्यो  
सरिव आइहें चंद आनुही पुरि ॥ १८४ ॥  
सामान्या प्रवः ॥ दोहा ॥ सरवी कारन तमको  
उचित सुवरन हीके पत्र ॥ सुंदरि बहुत म  
दाइके पुनि लैहै सवान्न ॥ १८५ ॥ कदत पी  
उ पर देसको अपने आखिन देखि ॥ प्रव  
स्यत पतिका नाम कहिनयो भेद यह ले  
खि ॥ १८६ ॥ मध्या प्रवः ॥ दोहा ॥ यह मध्या  
अन समुझ को राखै अंजलि जोरि ॥ नि  
दुर होत सवार यह नई दुलहि याछोर ॥  
१८७ ॥ मध्या प्रवः ॥ सवैया ॥ लाल विदेस  
की साज सजी सब सुंदरिहैं हियोर अकु  
लानी ॥ चाहै कह्यो अहो प्यारे रहो तव ला  
जन तेन कदी मुख बानी ॥ तौ लगि यों अस  
वार भयो गुर काज भयो गुरता अधिका

नी ॥ नैननिहै जल पूर बह्यो दृग सोचनी  
दुक्ख समुद्र समानी ॥ १८८ ॥ प्रगल्भा प्रव-  
स्यत ॥ सवैया ॥ मंगल साज प्रधान को रो  
हते प्यारे दियो पहिलो पग भूपर ॥ देखत  
लाल अलज्ज अयो निकटै सह आनन  
को जैसे कूपर ॥ ता सम व्याकुल सुंदरिहै  
असुवां परे दृदि उरोज दुह पर ॥ प्यो अरु  
ओट चढावै सनो दृग मोतिन लाल अह  
रोके ऊपर ॥ १८९ ॥ परवीया प्रवत्प ॥ सवै  
या ॥ सुंदरि मंदिर के दिग मंदिर सुंदर दो-  
प्रगल्भा बनायो ॥ भांकि भारेदेव है नारिक  
देस पहायो बही यह देत पहायो ॥ बाकी  
लगी ते चिरीनु लई उन बांछि प्रयास उदोत  
जो पायो ॥ आपनो आनन चंद मुरवी वह  
योसको आनन चंद दिरवायो ॥ १९० ॥ स  
मान्या प्रवस्यत पतिका ॥ दोहा ॥ लाल न  
लत लखि लाल उर बोली लिय सति नेह  
अपनी प्रतिभा लाल वह लाल निलानी  
देह ॥ १९१ ॥ जाको पति परदेस को बाह्यो-  
सु दुरित नारी ॥ प्यो वत पतिका जोनि है  
पंडित कहत विचारि ॥ १९२ ॥ मध्या प्रवः

त पतिका ॥ सवैया ॥ जाके उरोज कंदे उ  
रमे तजि लाजनि बाल मसों अनुरागी  
ऐसे मै पीउ विदेस गयो यह जानि नही  
तौ महा दुख पागी ॥ पूनो को चंद काला  
सी मनोज कालान बढैगी जु जोवन जा  
गी ॥ \* ॥ पूनो लौ यावे जो आवै धरे  
पति दंपति तौ गानिये वड भागी ॥ २०५ ॥  
मध्या प्रोः ॥ कविता ॥ मोसों वृक्षमली भा  
ति समा धान कसौ तैरी कितनो वियोग  
ताहि स्रुत जगुन है ॥ सुनु सरखी सपनो  
मै लख्यो आजु नीको आप चित्र रूप दो  
ख्यो भगवान जो छगुन है ॥ तिहारी सरखी  
को कंत या वसंत पंचमी को आवत वसंत  
तयाको भयो सुभगुन है ॥ पूजैगे कवै थों  
मेरे मन अभि लख यह छपिके छवी-  
ली कहा पृथुत सगुन है ॥ २०६ ॥ प्रौढा प्रो  
धित पतिका ॥ सवैया ॥ जीवित नाथ वि  
देस गयो हम जीवति हैं विरहा गानि  
दागी ॥ तेरति यां कल पंत भई पिय के संग  
जे निमिरै सम जागी ॥ मोपर आपने  
प्यारे को प्यारे कही जे अनूप कथा रस पागी

जो छतियां लगीं वतियां सुनिते छति-  
यां अव सालन लागीं ॥ २०७ ॥ परकीया ॥  
प्रोषित पतिका ॥ दोहा ॥ दुसह होत पति  
को कछु ललित दिखा वतिवात ॥ कव-  
रै हे प्यारो सरखी मोहि कछु न सोहात ॥ २०८ ॥  
सामान्या प्रोषित पतिका को उदाहरन ॥  
दोहा ॥ रोद कहति है आई है मेरो धन सोपा  
स ॥ सुंदरि पिय मग लखन को कीन्हो द्वा  
निवास ॥ २०९ ॥ अभिसारिका लखन ॥ दोहा  
सुभ वेख धरि जोन्ह मे वरै जति या अभि  
सार ॥ सो जो तना अभि सारिका सकल र  
सिक रुचि साव ॥ २१० ॥ कविता ॥ तन सब  
सुवरन दरपन समता मैमैन अधि काई  
जो गुराई महि गई है ॥ तामह पू चंदिका  
लक सोंदी सारी सेत सुखमा समूह ल  
साई है ॥ आभरन जोडे मुकुता पाल विमल  
दुति अंग अंग तारागन तेई जनु आई है  
चली इंद्रु मुखी उत इंद्रु अधि देवता री  
सुकती तिहारो कोऊ दरसन पाई है ॥ २११ ॥  
तमो भिसा स्या भदेव धरि तम समय चलै जु प  
य धेनारि ॥ वह कहियतु अभि सारिका स-

ज्ञान लेहु विचारि ॥ १२२ ॥ सदैवा ॥ मेचकरंग  
 के अंगकोरा कुंग मर दूवटां कि उज्यारी ॥  
 चोवके रंग रंगी पगिया पहिरे तन नील  
 अनूप सारी ॥ हे दिवरी मग है निवारी  
 सु अंधारी अंग हलसी अतिकारी ॥ वागमे  
 अनि रसी मन मोहन प्योके संग मनोह  
 र नारी ॥ १२३ ॥ दिवा भि सारिका ॥ दोहा ॥ व्या  
 ज पुराट अभि सार जो चौस कोरे वर नारि ॥  
 सो काहि दिवा भि सारिका सज्जन लेहु विचा  
 रि ॥ १२४ ॥ तन सिंगार आर्द्र जु करि वागवि  
 लोकन काज ॥ पिय मिलाप लहि आपयह  
 सफल भयो सब काज ॥ १२५ ॥ दिवा भि सारि  
 का ॥ सदैवा ॥ कातिक पुन्य महा नदी न्हान  
 कटी तिय संग सखी मन भाई ॥ नहाइ कैनी  
 के सिंगारि के अंगनि वाग विलोकन काज  
 सिधार्थ ॥ कुंजद वंतमें मित्र मिल्यो धनि मा  
 नि उते दिन राति वढाई ॥ लोग मिले भेरे नैह  
 रके घर पातमें आर्द्र यों वात वताई ॥ १२६ ॥  
 उत्तम मध्यम नीच म तीनि भांति करि जा  
 नि ॥ इलके लक्षणा उदाहरण कहत लेहु मन  
 अनि ॥ १२७ ॥ जोपे प्राणप्योरे कछु चाहिन ति

हारे कविज पीछे लिखेये ॥ १२८ ॥ कृत हि  
 त अरु अहित में कोरे हिसा हित नारि ॥ क  
 वि चिंता मति कहत है को मध्यमा विचारि  
 ॥ १२९ ॥ सदैवा ॥ पाछे जो पीति वारी नारि  
 जो अरु अंगनि पटी लुटे अंगन की रू ॥ हे  
 नारीति नई सो लुटे तुरंग रसी वरि अधि  
 काई कहौ काव ॥ कोविन पाछे कोरे वना  
 वाद हो जैसी हुती सुतो नैली दुली नारि ॥ अजु  
 रानु कारो वलि जाइ सो वाग कहत ॥ हासं भरो  
 अव ॥ १३० ॥ दोहा ॥ हितो करत लोचन नाइ को अ  
 हित कोरे जो नारि सो अंधा मोहै नाइ को सज्ज  
 न कहत विचारि ॥ १३१ ॥ कविज ॥ चिंता म  
 नि होइ कोऊ नीकी की अनेसी सोभा सोइ  
 पावे जामे पीति पति की उदोति है ॥ तूही यों  
 विचारि दूर करि मोती हार कोरे पहिरे तो  
 कहा छवि पावति योलि है ॥ कहा की जे न  
 कु तहै पीके उर वसी नलो दोली है ॥ जिने  
 उर वसी कैसी जोति है ॥ कोनि है निवाइ है  
 ठ वैठी मुख नाथ को री नाथ रिभाइ तें  
 निवाइ नीकी होति है ॥ १३२ ॥ कविज ॥ रया  
 म सर सिज अंग रजे सर रिजो लाने रा

रख्यो। सिरपर थनस्थाम रंग थनेरग॥ चिंताम  
निकोहे मानो वदन कामल पर मधुकर पुंजमा  
नौ जगदत परभाग॥ पीठपर वैठी तन सहज  
सुगंधलोभमालो अलि अवलि विमारिको  
चमेली वाग॥ वेनी चुरनेनी की यों मंडित सु  
मनिरूपनिधि की रची है मनो दत्तामनिध  
रनाग॥ २२२॥ स्यामाजूके सनेह की स्यामता  
मेरी भो स्यामता मे सवरी भर दो जगु है॥ चिं  
तामनि कोहे जू और वचन की दौर मेन से सौ  
कछू सुखभा को समूह अदगु है॥ पाटी द्वि  
गार थन घटन के बीच मे मयूष सी सफूल  
बाल रविलाल नगु है॥ सेंदुर सुभग तिय माग  
राग भरे अति मानो पियमनु के गामागम को  
मगु है॥ २२३॥ स्यामाजूके सुंदर सकल अंग  
पीख स्यामनि पायो समि सैन मेन को अतंका  
है॥ वृषभान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि म  
हा दुख जन सुरंग अथो रंको है॥ चिंतामनि कोहे  
लालमनि वेदी भाल लथोन अलंकृत की लो  
पर जंको है॥ दीपति हितान महा संगल निधान म  
नो मंग मिलत वगार अंठो को मयंको है॥ २२४॥  
काकुकात १३५

सरवर अर विंद जो अनि दुहे॥ यों कछू है  
वाते अलि मधुर अधिक अवि कावि चिं  
तामनि ज्यों नरन रिंदु है॥ सरद की पूनो  
की निमाको महा नीको कहा पीको सौ  
लगात याके आगे यह दुंदु है॥ सुंदरी जस  
हरिके सुंदर वदन आगे सुंदर लगत हमे  
दुंद नार विंदु है॥ २२५॥ याही की ली सुभदेस  
करत है गंध वंध रेसो वामे साह जिंदो हो  
रम चमेली को॥ अंग मनो नाना रंग फूल  
नि की रासि उन अंगन मे विमल विला  
स अलवेली को॥ चिंतामनि चंपका कु  
सुम दोय अभि राम दिव्य रूप काम काल  
आनंद के कलीको॥ जाके अवलोके सब  
हरि होत दुख वसो है नैननि को सुख सुख  
कामल नवेली को॥ २२६॥ मोहन मोहन  
भेन देवता विराजे राधा दासों देव वधु हंद  
कोसे अक सतु है॥ सुख विधु विंव पर रच  
ना रची विरंचि जाये वडो सुखभा समूह  
सर सतु है॥ चिंतामनि सुललित अलक  
काला कै लसे भाल पर मृग मद विंदु विलस  
तु है॥ वृषभान नंदनी की भौहें अति मोह

ऐसी अरु गुविंद जाके वस मैं वसत है ॥  
 २२७॥ जाकी नासिका मैं तिल फूल भाव  
 प्रकासक तिलख्यो विधियों जोतिलो  
 तमाभा सोभा घर ॥ तेरी छवि देखि बाकी  
 ऐसी छवि छीन होति सुख दुति दीन जे  
 सो प्रभात को सुधा कर ॥ चिंता मनि कहै  
 कहा चंपक सुमन वन लं लाल कीन्हो सु-  
 कती हल प्रभानि भर ॥ कहा अति रिजु  
 नौल नायक रिभायो रीभी नाक नाय-  
 की है तेरी नाक की निकार पर ॥ २२८॥ अम-  
 ल कपोल प्रति विंदन सहित मनि जटित  
 लाटंक चारि चार छवि धाम है ॥ चिंता म-  
 नि वदन मयंक रथ रचि रुचि मीन नहे-  
 मंजुल है महा रथी काम है ॥ सारी जरत-  
 गी हेम पंजर मैं खंजत मुख सुखमा सरोव-  
 र के सरसिज स्याम है ॥ चाहे नैन नैन जाने  
 जैसे जैन होन जैन कहाँ लौं कहैगे जैसे  
 जैन अभि रस है ॥ २२९॥ चिंता मनि का-  
 है तारा इंद्र नील आसननि सदा विलस-  
 ति प्रति विंदित विहारी है ॥ सो है नैन में न-  
 वान खंजन सपट्ट जालो मंजुल अंजन गु-

नरुंफित निहारी है ॥ मोद मंदिरन विर-  
 नावली की छजन की छवि अवलो क-  
 नि रुचिर रुचि हारी है ॥ दुरान मैलागी म-  
 न मृग की दावरि मनो धनी बाकी वरुनी रा-  
 तरुनी निहारी है ॥ २३०॥ सो है अंग चिंता म-  
 नि नगन जटित दिव्य वांचन की वेली के  
 से सुंदर नवेली के ॥ सकल जागत पर एक  
 सुकती है तुम नायकानवल ऐसी नाथ  
 का नवेली के ॥ एक ठोर देखो छवि आप-  
 नी नहू की प्रति विंदित है आस रस आन-  
 द के वेली के ॥ सुवरन आरसी से अमल  
 अमोल कटि गोर गोर गोल है कपोल अ-  
 ल वेली के ॥ २३१॥ अह निसि चरचा सखि  
 न संग स्यामा जकी स्याम सुभिरन और  
 काज सब नाखि है ॥ वृष भान नंदनी वान-  
 ह नद नंदन पै चिंता मनि नेह कहा लो मो-  
 जान भारे है ॥ गोविंद के चरित अहार हो  
 पुरा नन में सनि हियो भरि प्रति अभिल-  
 खें है ॥ सुवरन रेख नव अंक दुहु दानन में  
 दुगु नित दुग्ध निधि मानो लिख खदे है  
 २३२॥ केसरी सो अंग नाश वेसरि की छवि



यह हरति छुवीली अप सरन को चेतु है ॥  
 चिंता मनि कहै अल वेली अकलंक सु-  
 खी सरद मयंक अरिख यन सुखु देतु है ॥  
 ललित कनक मय कालप लतामेल गयो  
 सुधा मय विंव फल सुख मा निकेतु है ॥  
 लाल यों कहत धन्य जीवन मुकतये ध-  
 न्य जो मथुर ऐसे अधर को लेतु है ॥ २३३ ॥ द-  
 ष भान नंदनी की दन्तन की वांति कवि  
 चिंता मनि कहै ऐसे कहंते पवीनो है ॥  
 सुंदर श्री जूको वासरचना रची विरंच या  
 ते उन विरंच वधू संग लीनो है ॥ हरि गुन  
 सुनिवाको आपने समीप जी भज पाकोरु  
 मन सुललित थल दीन्हो है ॥ सुललित दू-  
 दिग के मंदिर के द्वार करतार कुविंद राज आ-  
 वरन कीनो है ॥ २३४ ॥ सवैया ॥ ज्ञानु भयो ज-  
 वते तवते तिय एक लखी मनि आजु अल-  
 लमै ॥ दामिनि ज्यों जमुना प्रतिविंवित यों भ-  
 लकै तनु नील दू कूलमै ॥ देवत ही सुख देखे  
 विना दुख जाइ परी कितते उत भूलमै ॥ ठो-  
 ढी मै स्यामल विंदु गुपाल मनो अलि वा-  
 ल गुलाब के फूलमै ॥ २३५ ॥ सारी सुपेत प

वाह मनो सित फेल रह्यो तनु सोने के भूष-  
 २ ॥ जोरी जुरे चकई चकवा मनो यों रुचिर  
 जत है कुच ऊपर ॥ कांटे ऊपर आनन की  
 छवि यों वरने वारिोक कहं पर ॥ दिव्य धुनी  
 मधुनी मीध कंवन कंवु लसै जनु कंचु-  
 के ऊपर ॥ २३६ ॥ \* ॥ श्री नंद नंदन की जे-  
 तिया गर लाज पहार हजारन पेलिकी ॥ का-  
 न्ह कांसेटी के सोने की रेखसी मेचक अंग-  
 न ऊपर मेलिकी ॥ मै न महा धन साधन सो-  
 हाति स्याम तमाल अलिंगन केलिकी ॥ पी-  
 न विलासिनि बाहु लसै मृदु सारवा मनो मु-  
 ज कंचन बेलिकी ॥ २३७ ॥ दूरते दीपति देख-  
 त ही प्रति पद्म वधून के होत रुजा हैं ॥ चारु प-  
 योद घटान के बीच मनो विजु रीकी जरी अ-  
 नु जा हैं ॥ यों छ विमों अधि काति मनो हरि  
 राधिका की अग राति भुजा हैं ॥ काय के को-  
 न अलंकृत अंकित मै न की मानो विजे की  
 थुजा है ॥ मेरु के अंगतें गंग की धार थंसी उर  
 है सुभ हार धसे हैं ॥ चंद की चंद्रिका मे सिव  
 है जनु यो सित कंचु की बीच वसे हैं ॥ बीच न-  
 हीं विंव नारि के तार को यों मति पीन उतंग



लसेहैं ॥ तो उर सों उर नाह धसे वैध मे कुच  
 आपु समाह धसेहैं ॥ २३९ ॥ बाल पन की  
 निकासी भई बल वाके अयान है आदि  
 भुटार ॥ जोवन को विधराजु दियो उन  
 ज्ञान किये सब काज सुटार ॥ चंचक मे  
 चक वै मनि छत्रन के काल सा करि कात  
 नुटार ॥ देवता है रति मै न के द्वे कुच सोने  
 के है मट माने उटार ॥ २४० ॥ काविता ॥ दृ  
 ष भान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि  
 कहा सब सुनारि हृदजन के ॥ चिंता मनि लाल  
 दरसन हेत लल कात सुवरन संभु जुग  
 सोहत सुलज्ज के ॥ मै न रति मंगल के सुव  
 रन कुंभ के थौं के थौं कुंभ कुच जगुल जोवन म  
 द गज्ज के ॥ खग के थौं कुंभ के थौं श्रीपाल सु  
 दार के थौं श्यामज के मोहन के सोभन गुच्छ कंज  
 के चिंता मनि सौं है कुच वंचन कलस चारु  
 नव गन पति कुंभ रोचन के रंग को ॥ विम  
 ल वदन दुज राज रुचि गुर कीन्हो सेवत  
 विमद जाहि जगन दुसंग को ॥ हरि जूकी  
 प्रीति हेत जग उल हायो पायो जोवन नरे  
 स राज राधा लो अंग को ॥ २४१ ॥ संवैया

और तिलोक मे कौन त्रिया अति रूपवती दृ  
 ष भान ललीते ॥ चोर भये को भयोन चले  
 उत जोवन राज प्रताप थलीते ॥ मै न महा  
 बली सों पि दियो मनु छूटन पावतु कों नि  
 वलीते ॥ श्री नंद नन्दन मोहन हेत विधाता  
 की मनो वाज्ज कलीते ॥ २४२ ॥ को महा मूढ दृष्टी ले  
 के अंगन जाय पग्यो ज्यो ससागे बहीर में ॥ २४३ ॥  
 ने अनखान अथीन जो आपते ताहि को आ  
 नि सके पुनि तीर में ॥ जोवन पूर विलासत  
 रंग उठे मन मोद उमंग समीर में ॥ सैल उरो  
 ज ते कूदि पग्यो मनु जाडू प्रभानदी भौरंग  
 भीरंगे ॥ २४४ ॥ जोवन को आगमन समुक्त  
 के पद छोडि चंचलता चारु चारु पद चा  
 हि धाई है ॥ जयन पुलिन लसि आई धिर  
 ताई चरव छोडि पग चारि के उर जतट  
 आई है ॥ पानि पमै त्रिवली तरंग नामि भौरंग  
 रूप नदी मध्या नगने प्रकासी यों निकाई  
 है ॥ चंचलता धिरता उना रन कारण रोम  
 रज्जी नील मनि सेत रेख उल हाई है ॥ २४५ ॥  
 कोट कटाछ तुरंगम है पुतरी अम वादन की  
 छवि छाजे ॥ मज गंधर्व के सुख लोचन

कतमानस थीरज भांजे ॥ श्रीमनि चारु र-  
थंग नितंब है पतिविलासन ते जनु सांजे ॥  
सुंदरि के चतुरंग चमू नृप मंजुल मध्य अन-  
ग विराजे ॥ २४६ ॥ कावित ॥ सोहत छवीले  
अंग की रति नंदनी को देखि मंद मुसवर्धानि ।  
चारु चंद्रहु ललन है ॥ चिंता मनि इंदिरा के मं-  
दिर अनूप अर विंदतो प्रभात हूं मैं सकात ख-  
लन है ॥ सेत सारी दारी सेनिहारी नेकु मन मु-  
ख सुख निराधि मन सकात डुलन है ॥ सरद ।  
मैं प्रगटत नीर निद्यत मेरु मही पर माने  
मंदाकिनी को पुलिन है ॥ २४७ ॥ अभिनव उ-  
दित मदन रवि रथ चक्र पर पंथी वाल द-  
शा निशामय वेली को याही को सुख दसन स-  
मभात घन स्याम खंडन विरह वैर सेना घे-  
रि मेली को ॥ चिंता मनियाते कहावै चक्र चि-  
त चक्रित भयो है लखि चक्रपानि मेली को  
\* कुं कुम के माने कुच कुंभ है भवाद थरे  
जोवन कुलाल चक्र नि तंबन वेली को ॥ २४८ ॥  
सोभा के सदन अवतरे हौ मदन तुम देखिये  
ललित रूप रीति रतिकेली की ॥ \* ॥ चिंता  
मनि कहत गुंजरत भौर आस पास अंगन-

मैं साह जिक वासुं है चमेली की ॥ दीपनि की  
दीपति सी दीप जव वसन बोट कादली के म-  
ल सी रमंजुल नवेली की ॥ सुख पति सुख  
हुंते सुख सरसै गौ उर परसै गौ लाल ऊर  
अल वेली की ॥ २४९ ॥ चिंता मनि सोहत  
सुभग हेम खंभ चारु जोवन सदन मंद पुं-  
डरी कुल लसी ॥ सोने की तरकसी द्वै काम की  
चरन गरव चंद फूली अंगुली बंधु का कली  
वानसी ॥ जेही रतन जोति चित्र रंग अंग  
अवर सो वह सित गोपन निदान सी ॥ राधा  
जकी जंघा मकर ध्वज प्रधान वैद्यों सिरी  
वो निधान राजे गर्भति निधान सी ॥ २५० ॥  
संवेया ॥ यों मनि मेन मही प पुता प तिया  
तन वैर सुभाउ मिले हैं ॥ आनन पूर निशा  
कर के दिग वार घने तम आदू हिले हैं ॥ वै  
सुख मा के समूह कछू अंगुरी परवुरी न प्र-  
कास विले हैं ॥ छोडि सदा को विरोध कहा  
कर कंजन सों नख चंद मिले हैं ॥ २५१ ॥ का-  
वित ॥ वसनत इन को सदा ही मुक्ति चिंता म-  
नि की न्हो जो मुदित मन महा मोद मदतें ॥  
नाह मनु मज मोद उल हावै नी के अभिन-

वृत्तलित कल पलता छदते ॥ स्यामकोहें  
 सं जीवनि बेलको पल्लव ए ज्यादु लियेजो  
 वचादु विरहा गिति हृदते ॥ महा उर रंग रं  
 गे रंगत है लाल उर राधिका के चरन अधि  
 क कोक नदते ॥ चिंता मनि तेदु कहो चंद  
 मुखी याकी वडी वडी छवि छाती जिनि  
 सौतनकी दही हैं ॥ चंद मुखी ज्योरे को  
 कहि सकत याके आगे अर्थ रान चंद  
 हू पात रुचि चानी हैं ॥ विमल वदन देखि  
 याको लुभहू तो चंद मुखी कहि कान्ह सोह  
 नदी अवगाही हैं ॥ निरमल दसनन चारु  
 सुंदरि के चरन अंगुरियन सेवत सदा ही  
 हैं ॥ २५३ ॥ इति श्री चिंता मनि विरचिते का  
 विकुल कल्यतरो श्री राधा वर्णन पंचमं प्र  
 कार राम

॥ अथ नायकी वर्णन

दोहा ॥ सकल धरम जुत नियुत धनविक्रम  
 पूरे होइ ॥ ताको नायक कहत हैं कवि पंडि  
 त सब कोइ ॥ १ ॥ प्रथम थीर पद दै गनो नाय  
 क ए निरधारि ॥ काहि उदोत उदुत बहुरिल  
 लित संत ए चारि ॥ २ ॥ महा संत गंभीर अ

रुनि सा सिद्ध जो होइ ॥ अवि कामन थीर दि  
 मन चो उदात कहि सोइ ॥ ३ ॥ थीर उदात  
 लहरा ॥ कावित ॥ पिता राम राज अति धे  
 क को बलाए पुनि वन को पदांय नहीं वद  
 ल्यो वदन रंग ॥ पवल बेरी को भैया हर न  
 हि आयो तासो करुना निकेत आपु रहे मि  
 नि एक संग ॥ हन्यो इंद्र जीत कुंभ वरुन जो  
 रावन रा एक एक तिहें रावन के जेना अ  
 भंग ॥ इंद्रा दिका रेवती वरनी वडाई आ  
 इ नेकु जव लानी कहु प्रगटो गजद जंग  
 ॥ दोहा ॥ पवल गर्व सुख सहित चंडाई  
 कायन होइ ॥ मायावी जो जगत में धोरो  
 द्रुत है सोइ ॥ ५ ॥ सबै दन याहि चो उमर  
 भाउ पर्यो सब छवि न बार दूके संचोरे ॥  
 गर्भ लगे दून छनिन के कुल रंजित को  
 ने भयंकर भारे ॥ तैं जाके गुर संकार को  
 धनु लोखो कहामन मोइ विचारे ॥ राज दुसा  
 र चो तीरवन धार पर्यो होन कान दुखति हो  
 दि ॥ थीरल लित लहरा ॥ दोहा ॥ सुंदर अ  
 ति मन हरन गन सुरवी कान्ह सो होइ ॥ क  
 ला सकु निहि चिंत मृदु थीर ललित है

सोद ॥ ७ ॥ सवैया ॥ मोर किरिट लसे चप-  
ला पट नील वला हक रंग हरे हैं ॥ गोप को  
कांध धरे भुज दंड अनूप विलास प्रभा-  
नि भरे हैं ॥ कान्ह लिये नव मंजरी मंजुल  
वंजुल कुंजन ते निकारे हैं ॥ सुंदर मार हूं  
ते सुकुमार सों वै लखि नंद कुमार खरे हैं

॥ ८ ॥ धीर प्रसांत को लक्षणा

दोहा ॥ विप्र सरवा गोविंद को धरम ज्ञान  
निविष्ट ॥ इंद्रिय विषय न ते विरत सो प्रथा  
न प्रति शिष्ट ॥ ८ ॥ शृंगारी नायक बहु  
रिचारि भांतिके जानि ॥ प्रथम कह्यो अन-  
कूल पुनि दक्षिणा नाम वखानि ॥ ९ ॥ बहु  
रिधृष्ट पुनि सठ कह्यो लक्षणा फिरि अ-  
नुरूप ॥ वरनत ए शृंगार के अलंवन मृ-  
दुरूप ॥ ११ ॥ एक स्वकीया मेरमे सो अनु-  
कूल वखानि ॥ सवमै सम बहु नारि रत सो  
दक्षिणा मन आनि ॥ १२ ॥ अनुकूल को उदा-  
हरन ॥ सवैया ॥ पीतम और वधु सो मिल्यो  
मनिजाने सवै गुन दोख विसेखै ॥ मै सब  
के ते उपाय रचे पिय के सहं और तिया मु-  
ख पेरेवै ॥ मेरो विचार अचा विचक्षण

मोपेजु ऊतरु दे हसि देखै ॥ पावै कहौ कि-  
त दूसरी बात चकोर जो चंद्रमा के समले-  
खै ॥ १३ ॥ दक्षिणा को उदाहरन ॥ दोहा ॥ स-  
व अपने सन मुख लखत होत सकल सा-  
नंद ॥ कलनि कलित मनि अतिललित  
प्यारो पूरन चंद ॥ १४ ॥ धृष्ट लक्षणा ॥ दोहा  
पुरुष प्रगट अपराध जो निरभै आवै गह  
कहै धृष्टति य धन्यते तासों कोरे सुने  
ह ॥ १५ ॥ रिसनि निकारी गेहते निषद नि-  
दुर कारि जीउ ॥ कर बटलै देखै कहा सं-  
ग सोवतु है पीउ ॥ १६ ॥ सठ लक्षणा ॥ दोहा  
\* ॥ छपि तिय को विषिय कोरे बाहिर प्री-  
ति दिखवाइ येसों नायक होइ जो सठकारे  
वरन्यो जोइ ॥ सठको उदाहरन ॥ सवैया ॥ \*  
प्यारी कहौ हमसों निमि वासर यों काइ  
प्रीतिकी रीति निहारी ॥ केहं कपा करे  
मोहि चहौ मनि हैं तो उपाइ धने कारि हा-  
री ॥ कैसे छपे हमसों जो छपाइ भयो नि-  
त और के संग विहारी ॥ और कहं हिय  
अंतर की हमसों सुख की प्रिय प्रीति तिहा-  
री ॥ १८ ॥ अथ शृंगार लंवन ॥ कस्तूर प्रत्यंग-

वर्गानं॥सवेया॥पैली उज्या रीननेसु  
 रह्यो तम माया निसाके सहायनके॥कु  
 रंद सुधा भर दंद भरे अकलंका अर  
 प सुभायनके॥अंगुरी मनि नीलके पा  
 सिनके मनो अक परे सुभ दायनके॥उ  
 र अंतर सुंदर आनि उंय नख दंदु गुविंद  
 के पायनके॥१४॥लेरे महोद संतो पल  
 ऊ जो रहे तिहुं लोका की संपति को गिरि  
 दी धिति वै मकरंद सुधा भर बेलि संतो  
 ष की रासन में खिलि॥तोहि सुहादेह  
 ग धनो मनि राग लसे जिनि ये तिनिमें  
 हिलि॥चाहें जो सीतल ताहियरे हरिके  
 पग मंजुल कांजन सों मिलि॥१५॥कान्ह  
 की ऊरु लखे जग के कदलीन के मूल  
 न की छवि लाजै॥यों बल खानि उदंड  
 लसे लखि दिगाज सुंदन के मर भाजै  
 जो हरिके हर रोमके कूप अखंड वनी व  
 र भंड समाजै॥ता गुर भार के धारन को  
 मनो नील महा मनि खंभ विराजै॥१६॥  
 खेलमें सैल उठाइ लियो बल की अधि  
 काई सुयों दरसै॥कर ऊपर मोहत अंग

मनो महि पाइ दवाइ सुभाउ हंसै॥मानि मेच  
 क संजु महा गिरि की सुखमा हीर अंगनि  
 नचु लोसै॥मनो नील पयोधर वीच मनोह  
 र मिनि की प्रतिमा दरसै॥लोचन मीन होसै प  
 य करम कोल थरा थर की छवि हंसै॥१७॥  
 बल मोहन सावरे राम हैं दुर्जन रात को  
 नि काजै॥हैं बल में बल ध्यान में पुनः लखे  
 काल की विपदा सब भाजै॥मध्य दरिद्र हैं  
 कान्हू जैसे सिंगरे अवतारन के राज भाजै॥  
 १८॥कान्हू की देह कलिंद सुता विदकी मोत  
 हा की पति नचीहै॥नामि रांभीरु हारन  
 जारिके रीति समान समान सचीहै॥लाल  
 महा मानि माल के वीच रोमावलि रूप की  
 गमि र चीहै॥दिव्य दिये दुख तीर नहीय  
 सुमध्य मनो तम रासि वचीहै॥१९॥अनी  
 रिके उर ऊपर चारु खले मुकता हल हाल  
 खरैंहैं॥कै प्रतिविंबित ऊहां नग दुखुदे सुख  
 के समूह थरैंहैं स्याम महा मनि प्रौल सिला  
 नखता बलिके प्रति विंव परैंहैं॥आपने वंधु  
 समाज को साज को वंधुन मानो निलाय को  
 हैं॥२०॥एई उधारत हैं तिन्हें जे परे मोहम



हो दधिके जल फेरे ॥ जेइ नको पल ध्यान थ  
 रें मन तेन पैं कावहं जम घेरे ॥ राजै रमार  
 मनी उप ध्यान अमे वर दानि रहै जन नेरे ॥  
 हैं बल भार उदंड भरे हरिके भुज दंड महा  
 क मेरे ॥ २६ ॥ कान्ह को कंवुज कुंकुम रं  
 जित भागन तें मनहं मन आनौ ॥ श्री काम  
 ला बल यावलि अंकित सुंदरता जग ऊपर  
 जानौ ॥ हैं रम नीय त्रिरेख मनौ अव तामै ल  
 सी मुकतालि बरवानौ ॥ एक निवास के नेह  
 मिले सुभ संख सों सुतिन के सुत मानौ ॥  
 २७ ॥ लखि लोचन नील सरोज मिलै हैं पका  
 सत प्रेम प्रभोद धनौ ॥ मनि कानन मै मुकु  
 ता भल कैं उठि हैं परिवार मनौ अपनौ ॥ मुस  
 कात सदा नद नंदन को मुख यों सुख मा  
 को समूह गनौ ॥ यह सांवरी स्वच्छ पसारत  
 चांदनी सांवरी सुंदर चंद मनौ ॥ २८ ॥ कान्ह  
 के अंगन की छवि देखत नीकीन अंग लगे  
 आरसी को ॥ ऐसी मनो हर मूरति मै मन  
 लागत है मनु धन्य जसी को ॥ सो है सुभाव  
 कपोलनि मै नद नंदन को मृदु मंद हसी  
 को ॥ नील महा मनि आरसी माहं मनौ भा

लंके प्रति विंव ससी को ॥ २९ ॥ लहि यावो तें  
 स्वादु अचेतन हं मुरली कियो नाद त्रिलोका  
 वधौ ॥ पुनि याही के स्वाद मिरी भई पूजित  
 जे वसकै काठि कानन वधौ ॥ दूत वाके तो स्वा  
 द लिये कवहं सब लोग सदा विन बुद्धि त  
 वधौ ॥ मनि संजुलता हरिके अधरे वह वधौ  
 करि पावत विंव पवधौ ॥ ३० ॥ जाहि लखे द  
 जकी वनिता नित जी कुल वानि लिये सदा  
 लाजे ॥ भूलि गयो गुर लोगनि को डर छो  
 डि दियो सिंगरो रह काजें ॥ पूरन चंद ते  
 जो अधिके मन आनन चंद वडी छवि  
 छाजे ॥ ऐसी अनूपम औथकी नाक मुन  
 द कुमार की नाक विराजे ॥ ३१ ॥ कान्ह जका  
 म स्वरूप थरौ पटये मनौ हैं सब अंगन हो  
 ने ॥ मोही सदैव वृज की वनिता धरनी तरनी  
 नई आइ जे गौने ॥ भौ हैं कामान सों अंकुज  
 वान चलाइ लगाइ के कानन कोने ॥ कौ  
 नि कोरे मन यों हिय रामै लगे नंद लाल को  
 लोयन लोने ॥ ३२ ॥ आपने को सदा सील  
 भरी कौऊ वृभौ तो तासों कोरे मन सौ हैं ॥  
 सज्जन को सुख रास पका सही दुर्जन दा



नव दाहक जोहैं ॥ मानिनि के मन को थों ज  
री सर नैननि में न कमान मनोहैं ॥ वेदनि के  
च विचार यहै सदा मेदये नंद कुमार की  
मोहैं ॥ ३२ ॥ पैटे जवे सुख मा जल नहान  
को व्याकुल है विरहा नलडादे ॥ जोराव  
री जिन रेंचलिर मनिहै वृज नारिन के  
मन गादे ॥ श्रीनंद नंदनजू के मनोहर का  
नन कुंडल यों छवि वादे ॥ वैध्वज वाह  
नो मकर ध्वज राखि सुधारस कुंडल गा  
३३ ॥ कान्ह की मूरति देखी सुती निनते  
सिगरे वृज ऊपर जानौ ॥ काहेन ध्यान  
रो निसि वासर भागनतें मनहें मन आन  
ऐसी लसी नंद लाल के भाल में कुंकुम  
की असु नाइ वखानौ ॥ दिव्य उदै के समे  
लकौ विध भागमें राग विराजत मानौ ॥  
३४ ॥ लाग निरंतर जाहि वरवानत हैं सिग  
रे निगमो पचि हारे ॥ स्याम की सोभन  
पकला कह पावत कोटि अनंग विचारे ॥  
आनन ऊपर मोर विरीट सुवार विराजत  
चूधुर वारे ॥ इंदू के चाप समेत मनो विधु  
मंडल ऊपर वादर वारे ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ जे

रस उहै पित कोरे तेउही पन जाति ॥ चंद्रधना  
दिका लालित ॥ ३६ ॥ चित्त में आनि ॥ ३७ ॥ कवि  
न ॥ प्रफुलित बाग कुंज नालि वन ॥ ३८ ॥  
जु लयाई जे नह वोपसी चढ़ावे उज राहें  
चिंता भनि कहैं रोसी सोध सख्य भरि लखै राम  
चल सारकी सख्य न भग नहि में ॥ ३९ ॥ ॥ ॥  
कोती धारा धौरी धरामे पसारी चंको जल द्यो  
कराय कटिल कासा दे मे ॥ ४० ॥ ॥ ॥  
को कोयों मेरे संद भागिनि को काल है बिदे  
स या वसंत को सुहावे मे ॥ ४१ ॥ ॥ ॥  
वा मान मंदिर की छवि हृद कथा कर को  
छादि कुंज न पावै ॥ ४२ ॥ ॥ ॥  
चादनी चापुहे मेन महा बल सोखे सुद  
रि के मुख चंद्र को छादि चंदोरत चंद्र म  
दूरवन कोखे ॥ ४३ ॥ ॥ ॥  
सो संखे सिखे विरहा निनि सोखे ॥ ४४ ॥ ॥ ॥  
कवि ॥ लालन की मिलनि को लालित  
पहाड लाल जटित दिवा लन की चौकी  
चंद्र दोर की ॥ लाल वद भूमि ॥ ४५ ॥ ॥ ॥  
खंड लाल खंड ल खंड ल खंड ल खंड ल  
रकी ॥ चिंता भनि माने सख भनि सख को

वैठकनि गान मृदु यूथु मृदंग धन थोरकी  
सुंदर रतन मय मंदिर मंदिरिनि संग खेल  
नि ललित लाल ललित किमोरकी ॥४७॥ पा  
तीप उद्दीपन की यो उद्दीपन विभावको वि  
वेक कियोहै ॥४८॥ आलंवन गुन इति  
अलंकार रतीन ॥ पुनि तदर्थ ज्योयो कहे  
उद्दीपन रवीन ॥४९॥ आलंवन गुन रूप अ  
रु जोनादिक चित अनि ॥ बहुरि हाव भाव  
दिये चेष्टा ताकी जानि ॥५०॥ नूपुर अंगरत्ना  
रदन आदि अलंकार देखि ॥ मलया निन  
चंद्रादि ए सब तटस्थ अव रेखि ॥५१॥ यापर  
हम यों कहत हैं ॥ \* ॥ देखा ॥ उद्दीपन जे भाव  
ए सुने कहं हम नाहि ॥ चंदो द्याना दिक्क  
हे समुझे नीके जाहि ॥५२॥ आलंवन के गु  
न समे आलंवन के बीच ॥ ते उद्दीपन को कह  
है कथन लगे यह नीच ॥५३॥ सोंदर्यो दिक्क  
गुन रहित आलंवन न होइ ॥ आलंवन गुन र  
हिन जो वरनि सबो नहि कोइ ॥५४॥ चेष्टा ता  
की आपुही वरनेगे अरु भाव ॥ अव उद्दीपन  
कहत हैं कोसो बुद्धि प्रभाय ॥५५॥ आलंवन  
की अलं द्यार है आलंवन माइ ॥ सो उद्दीपन

होत है जो वरनत कथि नाह ॥५६॥ राम उद्दीप  
न क्यो कहै रस प्रथाव वैजानि ॥ जो आलंवन  
न मध्य है ते आलंवन मानि ॥५७॥ जे तट  
स्थ उन कहें चंद्र वाग दून आदि ॥ ते उद्दीप  
न कहि सबो है यह बात जानादि ॥५८॥ उ  
द्दीपन उद्दीपन ॥ कथित ॥ सब सह माते मंजु  
मती रसाल ॥ देखा मय मयुध मयुध को वरन  
चिंता मनि कहै फूल फूल निशाल तउत दे  
खी महा राज आनि ललित लली बली ॥ कुं  
जनि मै छाह थलि कहली बरन की विम  
ल सुगंध जल नालिन तली चली ॥ राख अ  
भि वेक समे आयनी संपति सबलै रसा  
ल कीन्हो रित राज हं महा बली ॥५९॥ आ  
स पास मंदिर वने है दिव्य मध्य वेदी चदि  
राम चंद्र देवो सुखमा सुखार्द है ॥ चिंता म  
नि निरामंदिर पारि जातन को सकल दिस  
नि मै सुगंध सर सार्द है ॥ महि पर सत मं  
जु मोरन ए आमन मै गत काल को किल  
न मथु कुर गाई है ॥ आगम जलु राज को  
निरखि मानो वन्दी जन ललित सुरन सह  
नाई वजाई है ॥६०॥ इति श्री चिंता मनि क

ते कवि कुल कला तरो पञ्चम प्रवारण ॥  
 ॥ दोहा ॥  
 इति काव्ये अन् भाव गानि एकटा छंदे अ  
 दि ॥ मधुर संग देहा कोहे सहृदय सुखद  
 अनादि ॥ १ ॥ जे पुनि थारु भाव को प्रगटका  
 रे अनयास ॥ ताहि कहत अन् भाव है स  
 व कवि पुदि बिलास ॥ २ ॥ कविता ॥ जोवन  
 सिंघासन में सुंदरि को रूप भूष पीतम  
 नैन जाके उप सर पनोम ॥ चिंता मनि का  
 वि विलोकनि मुख कपाड पाड होत है मु  
 दित जैसे पित्त तरपन में ॥ मोहत वदन वा  
 ल घृथद की ओर पिय कीन्हो तन मन  
 धन जाके अरु मों ॥ बिलसत मनो प्रति विवि  
 ल सरह चंद विमल पदुम राग मनि दरप  
 न में ॥ ३ ॥ लाल रंग कंचन किनारी दार सा  
 री तैसी नाक के नखत मुकतान की उजरी  
 है ॥ वीद्युत की छटासी छवीली की काद  
 नितैसी चिंता मनि नील यन चटन को च  
 रोहै ॥ मोह देखि मुरकि मधुर मुसकपाड  
 चाड कीन्हो चित चपल कटा छन को च  
 रोहै वांछे थर थुमर ललित पदुलहगा

की मनोहर धूमन नै भूमत मन मोहि ॥ ४ ॥ दोहा ॥  
 विरतं मरो सांच कहि पुनि सर अंग वनाड  
 बहुरि कप विवराणि आस अदलीना  
 ॥ ५ ॥ आठ सावित्रा काहत सज्जन वान  
 नन आनि ॥ इन को देत उदा हरन एक वादि  
 न में सानि ॥ ६ ॥ कविता ॥ लोचन निभाल  
 को प्रमोद जान कप लेद सलिल अचल  
 तन पुलक पल कोहि ॥ पील रंग मये सुख  
 प्रिय निकरैन मेन दू बात हरन करि खेला  
 में अयाही है ॥ देखत परस पर यहै गति म  
 री अनदेखता स्वरूप धेन आपनो विचार को  
 तन अंगोचर जो परन आनंद नंद नंदन  
 ना दृष भान ॥ बंदनी निहा कोहि ॥ ७ ॥  
 चारी भाव लक्ष्मी दोहा ॥ जे विशेषते का  
 र को अभिसुख नहि वनाड ॥ ते संजारी च  
 रोये कहत बड़े कवि राड ॥ ८ ॥ रहत सदा  
 धिर साव में प्रगट होत डूहि आंति ॥ ज्यों  
 फलाल समुद्र में यो संचारी जाति ॥ ९ ॥  
 मोनि वेद विभ्रम जह जड ता थीरज दुर्ध  
 र उगता चितन सावरी है अमर ॥ १० ॥  
 मोरख सुमिरन भरत मद मुपनीह अस

ध॥ वीडा पर मार मोह मत आलास वेगो बोध  
 ११॥ कहि वितर्क अव हित्य पुनि निर्मित  
 नाद विषाद ॥ उत कंठा अतः प्रकटा लो  
 स बोहे निर्वाद ॥ १२॥ सितारे सब रंग  
 ल को दूहे सुभाउ ॥ जग सों मोदों जे  
 को दूहां वनाव ॥ १३॥ तत्व ज्ञान दुख वै  
 दिवा निः फालता ज्ञान ॥ जेन आपनि हस  
 मै सो निर्वेद वखान ॥ १४॥ निर्वेद लक्षण ॥  
 साहित्य दर्पन मत ॥ दोहा ॥ तत्व ज्ञान विषय  
 पा विरहा दिक् अपम ॥ जहां कीर्ति  
 यतु ज्ञान सो तह निर्वेद वखानिर्वेद को उ  
 हरन ॥ १६॥ कविता ॥ मिहिर सरी चिन्मय  
 जल के सौ भ्रम सुखन मै तो यके तरंग को  
 गेहै ॥ छोडि सदा शुद्ध ज्ञान आनंद परम प  
 वोर कछू कहू विसराम कोन अंगुहै ॥ चिन्ता  
 मन कहै कहै कौन सो सनेह कीजे सवह  
 सो घाट वाट हाट के सो संगुहै ॥ नीको है तो  
 कहा परनाम सब फीको होत लन धन जाव  
 न कुसुम के सो रंगुहै ॥ १७॥ मन जो परमा  
 य चातुरी की चरचा ही भयो चितु चैन चह  
 जगदी विना काज की वातन को विन काज

को कहै को कीजे हाहा ॥ परमेश्वर के पद पं  
 कज सों परतीति सों प्रीति भई जु महा ॥  
 अव ता परविद्या जो ओर कछू जु सिखी  
 तो सिखीन सिखीलो कहा ॥ १८॥ आज्ञा क  
 रानि खोजी वैदी होवों अति ऊंचे उ  
 सासन लीला ॥ सो सों कछू अपराध प  
 तो जल अंचल लोचन के जल भीजतु  
 ॥ १९॥ \* ॥ वों सो अपराध परे पियवों  
 नुम ऊपर देखे वी जतु ॥ फेर हमारे ही  
 या मन को मन मोहन जू लमे हो सुनरी  
 जतु ॥ २०॥ दोहा ॥ रस्य दिक्ते होतु क  
 जो निर्वालिता जानि ॥ वे वर्ना दिक्  
 कछू बहुरि सुखला ने वखानि ॥ २१॥ म  
 त पना मंद रायंद राति धरति तरुनि कुच  
 मार ॥ छवि अभंग राति रंग के यकित अं  
 ग सुकुमार ॥ २२॥ कोनो के अवनी तिके  
 रूयनि कुराई हेत ॥ जो मन मै संकोच सो  
 गिया कहै सचेत ॥ २३॥ शंका को उदाहर  
 न ॥ सवैया ॥ जाने विनाह म जानत है य  
 ह जानि रहै मूढ़ नाटु लजानी ॥ कोऊ का  
 ह कछू वात बोहै समुझै सब आपनियै

जुम

निर्वनता

उ अपादि

शंका

ये कहानी कोइ हरे जो सखा जनता गाहि  
 जाति सकोचन दास अघानी ॥ स्याम ति  
 हारे सनेह रहे सुख लोचनी सान्च संकोच  
 समानी ॥ १२३ ॥ अमनी उदा हरन ॥ सवेया  
 रति अमनी सु अमनी सादु उदा तांका याने  
 लिया वारि सको दिव ॥ सनिचिनी हे पारि  
 री विपरी अमनी करहरी वामलिये ॥ भालके  
 भ्रम विदु सुदो अमनी विहसोहिं से गान  
 कपोल किये ॥ अमनी वे उप जावत सोचा  
 को सकोचोहिं सलोचन आनहिं ॥ १२४ ॥  
 अमनी लोचनी ॥ दोहा ॥ ज्ञान सेवा  
 कनते जोसता पधृत मनि ॥ निज अह  
 परि पाक मो व्यन चित पदि चानि ॥ १२५ ॥  
 धैर्यको उदा हरन ॥ कविन ॥ पूरव कारम  
 भुमतेहे भूलत मै पूरव जनम जो दियो  
 है सोई प्रायहे ॥ तिलसो महीप कोरुकाहि  
 को गुमान वारे चिता मनि जिनको साहज  
 चित चानेहे ॥ कोस दसवीस के नरेस नि  
 साया कहा होत विरा राये परमावर मह  
 यहे ॥ सयको सदाही साध अनायन को ग  
 थ हमे वाहा दीन वंधु निरा नाथ विनय

येह ॥ १२६ ॥ दोहा ॥ सकल आचरन ज्ञानको  
 अमनी जित होइ ॥ प्रिय अप्रिय देखे सु  
 ने जडता कहिये सोइ ॥ १२७ ॥ जडता को उ  
 दा हरन ॥ दोहा ॥ अन मिरव लोचन देखे सु  
 चुप रहि दो इत्यादि ॥ होत वाज वरन  
 रहत यो सब सुखद अनादि ॥ १२८ ॥ अन  
 मिरव लोचन के रही हली चली नहि वा  
 ल ॥ चित पुनरी करीहे सरी अप सुताला  
 ल ॥ १२९ ॥ इष्ट वस्तु पारु हरन मन प्रसा  
 द जो होइ ॥ आसु खेद नाह गद अचन वरन  
 तिहे सब कोइ ॥ १३० ॥ सवेया ॥ यो मन वैदी  
 विर रति हो मधुमे अवहान वचोगी अन  
 वसी ॥ पीठ अचानक आइ गयो सुपरीप  
 गयो सिंगो दुख गंगसो ॥ काहि र भीतर  
 पूरन ऐसो भयो थट मेरो अनंद उमंग लो  
 पूर उमंग भगी रथके तप जैसे विरचिदम  
 डल गंगसो ॥ १३१ ॥ दोहा ॥ जो दारिद विरहा  
 दिते होइ मलिनता कोइ ॥ चिता मनि स्या  
 सादि करि होत दीनता सोइ ॥ १३२ ॥ ताप तो  
 नहीं तपत हो जग मै पाप प्रदीत ॥ अकली  
 दया लुदीन पे कीजतु दया नदीन ॥ १३३ ॥



रागे उदाहरन ॥ मवेया ॥ मोहके दोसन नाह  
विदेसन चाहि सदन पासी पठाई ॥ सोचति रा  
ति सोच पलको पलको नभरे सुत हाई ॥  
वेढनि नारि जहां मुकुमारी हे लोचन वारि  
न आंखि लगाई ॥ सांई मिले मनो याथा  
लको मनि वेढहि आंसुन की जल साई ॥  
३३॥ दोहा ॥ वायु अपराध लोवे जहां रोम  
चंद्र उत हेतु ॥ तर्ज नाहि कारन जहां होइ  
उमता सोइ ॥ ३४॥ राम सील जगता पद  
र सीतल सुखर अपार ॥ एक संन के संहा  
र को अनल भयो इक वार ॥ ३५॥ चिनाक  
हि पत आनहै लख तादि जित होइ ॥ आ  
खर स्वमिता पतित वरनत है तव कोइ ॥ ३६॥  
विनाको उदाहरन ॥ कविता ॥ गंधानि हे माने  
मुकता हलको हार वह चाखनीर नेनान २  
की आर पो दुरति ॥ अरान अथर कहिक  
दे को दुरित को कोन देत आजु कुंभी साह  
न अरति है ॥ अचल के रही बालि मंदिर में  
चिना मनि राखन वदन चंद्र चंद्रिका पर  
निहे ॥ वेढी कत आजु कर कमल कपोल  
धरि व्यानत कमल नेनी कौन को करति है

३७॥ दोहा ॥ कछु उपाइ वंयादिकर उपाहन  
अप जो चित्त ॥ ताही सों खंडित बाहल वा  
न जगनि ये मित ॥ ३८॥ सवेया ॥ मानव को  
को मनाइ रह्यो वह चंद्रमुखी तय केहन म  
नी ॥ रने से पाइ गई पुरवाई लगी वर को  
गन दोलनि बानी ॥ ये तेम आइ उपाइ २  
अचानक कारी यदा धनकी यह रानी ॥  
थोकि परी चपला चमके चलि को पति  
को छुतिया लपटानी ॥ ३९॥ दोहा ॥ जोस  
सुद्धि पर गुनन की उत्तम सही न जाइ ॥  
भंगा दिक् ईर पा वरनी बुद्धि बलाइ ॥ ४०॥  
कान्ह कह्यो देखी न काहु राधा की चमक  
रि ॥ कह्यो सत्यभासा सुनी राधा गोरी क  
रि ॥ ४१॥ अस रख अपमानादि ते चित्त ॥  
ज्वलित जानि ॥ नेन जग शिर कंठ अल  
ज नादि कर सानि ॥ ४२॥ कविता ॥ जोस  
हन मान रावम सो सकल मरु सर सिद्ध  
आगे ॥ जंगम अनय रहसरस सत कंचर  
कहो कहां वापिकुलें साभागे ॥ भुज साध  
न चदि सुडपक फल तोरत प्रखर सख  
अति जागे ॥ पाइ राधिर वल देउ भैरवनि



भर भाव भरसो अनुगणे ॥ १३ ॥ गर्व लक्ष  
 रा ॥ दोहा ॥ विद्या दृष्ट प्रभाव कुल रूप  
 अहं कृत गर्व ॥ होत अन्य अप मान कर  
 नो मे चेष्टा सर्व ॥ १४ ॥ कथा मेरी आरंभ देखे  
 मृग जामे जाना गर कहा को मृग लेनी क  
 है ताको वाहा वाहनी ॥ फिर जलि कहो क  
 द्यु पार चुप रहो हमे चंद मुखी कह दे  
 री चंदना को लहनी ॥ जानु डून जात क  
 हूँ और लोने गान पर मोहि पिय सेने को  
 गढ़ को जिना गहनी ॥ १५ ॥ दोहा ॥ सहस  
 रान चित्तादि भू विला सादि जित होत  
 लीखन पुरव अर्थ को स्मृत वाहियत है  
 सोइ ॥ १६ ॥ चिंता मनि चन स्याम मे यों  
 विद्यता उमंग ॥ सुमिरन वास वादं व को स  
 लका भुक्त सब अंग ॥ १७ ॥ संवेष्टा ॥ सोही  
 है कान्त गुणाल लखे सजवाल कछु कान मे  
 दन पावे ॥ यो लेन बोल दगी सी लखे मनि  
 मेन के जानहि यों अकुल वि ॥ रोमन अंग  
 कंद्य कली ललने यन स्याम की यों छवि  
 छावे ॥ सारति मंद कापोल हंसी उमंगी अ  
 रुवा अति दया भरि आवे ॥ १८ ॥ सरल ल

क्षरा ॥ दोहा ॥ पान त्याग वाहियत मरन सु  
 तौ प्रगट जग साहि ॥ संगमास दिक् छोट  
 के और जान वेनाहि ॥ १९ ॥ जो वह कान  
 ह वनि यों तो ताको उदेत ॥ अंगरादि पद  
 धमे सर नन वर नन जगा ॥ २० ॥ कविता ॥  
 दुर धर पुल विरम लल जप अति और  
 भास कर ले के अंग यों दल है ॥ एक सर  
 दुर धर भासो कापे नर अंग मे जाइ सर  
 अवर चंचल है ॥ और जान लगान न पास ह  
 न मान तन फूल के प्रदल भए गिगरी अ  
 चल है ॥ अमनि स यरे सुन म्यहन तुला  
 मेना साथ दुर धर लीला सही नन है  
 ॥ २१ ॥ मरल क्षरा ॥ दोहा ॥ धन विद्या रूपो  
 व आसव जीवन जान ॥ २२ ॥ उष गत है  
 मर भाव लित कादति आरत वान दान ॥  
 २३ ॥ मर को उदा करन ॥ दोहा ॥ रूप छकी  
 जीवन छकी सहन छकी मृदु दानि ॥ प्रेम  
 छकी आसव छकी भई छविनि की खा  
 नि ॥ २४ ॥ आन नैन गति लटकि लखि हो  
 त लट वलि हार ॥ छकी छकी नारि ह  
 रि आसव छकी निहारि ॥ २५ ॥ स्वप्रलक्ष

प्रसंग

तल

गा॥ देहा॥ स्वप्न नींद आन अर्थको अनुभ  
व जो कह्यु होइ ॥ सुखदुख दिक्कहेतुय  
ह स्वप्न कह्यु होइ ॥ ५५ ॥ यो आये पण्ड  
सतेहानि सपने कीवान ॥ पति आनम प्रति  
विष सखि साधु भयो बह पान ॥ ५६ ॥ स  
पन संग जागि दुख उठि विष आनमन नि  
हारि ॥ सखी कलप लह जागि हो सपन आ  
न उजारि ॥ ५७ ॥ मन में सीता सखी कहि  
अभा दिक्कनि होइ ॥ जागि दिक्कनि होइ  
रिदये स्वप्न दिक्क स्वप्न होइ ॥ ५८ ॥ संवेया  
मांगते छूटी ललाट लहै लहै लहै सोनिन  
की लटकी चट कीली ॥ वेसारी की मुकता  
हल डोलत यों मानि ॥ सन लोति रगी की  
दीली भुजा करि पीठि छुंवे लपटाइ रकी  
रनि अंतर् सीली ॥ सोइ अजो छतिवोहेल  
गी सुइ ज्यो छतिया मन साह छविली ॥  
५९ ॥ देहा॥ निंद को अवसान जो सोचिवा  
थ मन आनि ॥ दृग मरदन अग राइ अरु  
जंभा दिक्क दूत जान ॥ ६० ॥ उधरत तियट  
ग जगल छवि निरखत नंद कुमार ॥ खुल  
त जलज जुग जागि जनु खुल बुलात अ

लिचार ॥ ६१ ॥ लज्जा को लहरा ॥ देहा निदि  
दार्द की जुहे सोलज्जा मनि अति ॥ मय  
ना वलि आदिक वाछु होतिहोइ का  
नि ॥ ६२ ॥ वेदी पिय पर मे लगीलीहो ॥ अ  
नी उजारि ॥ दूडि गर्द अरु लोकिह त सव  
च सिंधु सुकु भारि ॥ ६३ ॥ जो कृपादि आ  
ये समव दुख दिक्क होन ॥ अप मय  
भूषात तिन फेल सोन अधिकान ॥ ६४ ॥  
मोह लहरा ॥ देहा ॥ योह वाक्य हो ताहि  
को जहा जानि सिद्धि जात ॥ विन दुख  
चिंताने जह अति विह वल्लभत ॥ ६५ ॥  
खान पान परधान सब जानि लखो वा  
ल ॥ वां ताही तुम को निरारिखु मनिसेह  
लाल ॥ ६६ ॥ सति लहरा ॥ देहा ॥ नीद पं  
थ अणु भारदे आदि अरुय सिधारि ॥  
मतिन के कछु हाख रस अहं सतो पण  
चार ॥ ६७ ॥ विन प्रयो जन मित्र जो मोहमे  
व दावानि ॥ मित्र प्रयो जन तेहै सुतो मि  
त्र जिय मानि ॥ ६८ ॥ विन मलव को  
यासो तासो कीज्यो प्यार ॥ मतलब लेंया रीक  
रै कहा मतलबी प्यार ॥ ६९ ॥ निदा दिक्क

मवल्लो  
उत

नंद  
जा

अहं  
सतो

मतेन

ते होतहैं उत आलस संग राहु ॥ नैन अध  
 खुले भांति यह आलस सब कवि राहु ॥ ७० ॥  
 आलस को अंग अंग ॥ कविता ॥ दूरे हारमि  
 दौरे सिंगार सब अंगानि ये कोटिज सिंगार  
 रत्न की अंग आलस कान की ॥ चिंता मनि  
 कहैं अहो काये काहे आलस मोरे वंदु सोव  
 दन पर आभा आलस कान की ॥ गुरजनि  
 लखि हैं अंगो छले सलोनी यह लागी पी  
 की ललित कपोल पल कान की ॥ रतिर  
 ति रंग पनि रंग ललत गुली दोरी मुरी  
 छवि आनतु अध मुरी पल कान की ॥ ७१ ॥  
 दोहा ॥ काज आह उद्योग जो मंदरु आलस  
 स जानि ॥ यह आलस लहान गय विद्या  
 नाथ बरवानि ॥ ७२ ॥ और कौर को कामत  
 नु कामहु सिथिल जुवाम ॥ जो कारिदे पि  
 य संग सो प्रबल कागवत काम ॥ ७३ ॥ दृष्ट  
 निष्टा दिक्कनते संभ्रम अस्मिक होव ॥ ता  
 ही सो आवे सकवि वरनत मथन लौव ॥  
 ७४ ॥ असेको उदा हरन ॥ सवेया ॥ श्री दस भा  
 न कुमरि के संगमें कोलि रखी हरिज जसु  
 ता तट ॥ दंपति कुंज के मंदिर में बहलीव

नमाल बनी मुकता छुट ॥ भूखनस नि  
 र रति रंगमें पायो न्यों काहु के के को  
 आहत ॥ आकुल है हरि मंचक प्रवर  
 राधिका बोदि लियो पियरो पत्र ॥ ७५ ॥  
 चिंता को उदा हरन ॥ दोहा ॥ मिक राहु  
 कुल कान वन मिले मुई यह वन ॥ लि  
 खि तुम्हें नंदलाल जो सो चिति कहवा  
 जा ॥ ७६ ॥ चित्त कल लहरा ॥ दोहा ॥ जो  
 विचार संदेहते सो चित्त क यदु चनि ॥ मि  
 अंगुन तेन है जही चिंता मनि न अपा  
 नि ॥ ७७ ॥ संगी पन आकार कोरो अव  
 हित्य वधानि ॥ प्रकृति तजि वह और  
 को कवि को कथन सवानि ॥ ७८ ॥ जान  
 लो का अलि न लागी कोन लहर को  
 न ॥ दोहा ॥ रवो है गय काहा मोदी मोन  
 ७९ ॥ व्याधि विदोरा दिक्कन देह सता  
 दिक्क निरधारि ॥ कंप लाप भूषा दूत २  
 आदिक यों जनिहारि ॥ ८० ॥ सैया ॥  
 काहु की वात हूँ नैन काहु न कहै कहा  
 चित्त के बीच विचार ॥ नैन निरीर भा  
 रासे भिरे कछु अंगन हं को नानि सं-

जित न

जाल

जो

जो

जुयल

नी

मारे ॥ गान लगे विरहा नल सुखन भोज  
 न भुवन भोज विमारे ॥ संहर रोसे भजन  
 नंदन वाक्वाता मुख चंद निहारि ॥ ६१ ॥  
 दोहा ॥ भनके भम उनमाद काहि कोम  
 या दिव जात ॥ विन कारन रोदन हल  
 कार्य अनर्थक बात ॥ ६२ ॥ उच्छ्रान्ति  
 वनि लखि रहति दमान कहति कोपन  
 या ऊपर अद और वाद होत दोह  
 लाल ॥ ६३ ॥ जहां उपाय अभाव से  
 चित्त को भंग ॥ सो विधाद नाना सु  
 बहत तापके संग ॥ ६४ ॥ संवया ॥ सो  
 कहू नहि मूमि परे दग देखत ह दिन  
 होति अंगारी ॥ केसे वचें इहि आगि  
 नौ चहु और लगे निमि चंद उज्यारी ॥  
 सोरे उपाद चलेन काधू विरहा गिनि  
 व्याधि बंदे अति न्यारी ॥ होव हों कौन  
 उपाद रचें यह जाने को प्रेम की पीर  
 पियारी ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ तरुनि वदन विधु  
 सांचु निमि आगम राच अधिकात ॥  
 पात होत पति संगे छूत छवि छुटि  
 जात ॥ ६६ ॥ उत्कंठा ललना ॥ दोहा ॥ अ

भिलखिता रथ लामें नहि बलव सहि  
 जादू ॥ उत्कंठा जामें काधू अकलना अ  
 धिकाद ॥ ६७ ॥ दुल दिन के किधिया वज  
 न थरमें इत उन जान ॥ ज्यों बं होव वि  
 लव अति त्यो ल्यों अति अवनत ॥ ६८ ॥  
 रोना दिवाले होत हें विरता ॥ जहान ॥  
 स्वच्छंद रचनादि को हें चाप निदान ॥  
 आनि दिग छूति ससन हसत दगन निहारि  
 खका पल अति मर दूकी छुं छुं वीली नारि  
 इति श्री चिंतामनि विरचिते कविवर्य तरेषु प्रकर  
 दोहा ॥ भाव हाव साधु ये कुहेला धर्म  
 वद्वानि ॥ नीना और विलम काहि पुनि  
 विच्छिन्न भेमानि ॥ ६९ ॥ विभ्रम किल किंचि  
 त काह्यो मुहा यत पुनि आनि वदुरि कु  
 दुं वित वरीये पुनि विंदो वदवानि ॥ ७० ॥  
 ललित कुत हल चकित कन समुभि  
 विहृत अरु हास ॥ चेष्टा अरु दस गानी  
 या शृंगार प्रकास ॥ ७१ ॥ जो इतीप केन्द्री  
 यके साहित्य दर्पन माह ॥ दूर रूपक मह  
 काम कहे विश्व नाथ कवि बह ॥ ७२ ॥ जो  
 वनमें सन्यस कहत अलं कर र वीस ॥

विमल

अनुमति

विमल

विमल

आदि

॥ २ ॥

दस रूपक में तिन काँह सुनहु सुकवि सग  
 देस ॥ ५ ॥ साहित्य दर्पण में कोहे आठ और  
 र अधिक काहु विस्त नाथ सत कवि कह  
 त ते अब सुनहु बनाहु ॥ ६ ॥ भाव हाव  
 हेला प्रथम तीनों सूके जानि ॥ सोभा कां  
 ति कही वहु रि होपति और वखानि ॥ ७ ॥  
 पुनि साधु र्य प्रगल्भता ओहा रजगति  
 और ॥ धीरे सात अज नाम यह कहत  
 सुकवि सिर भौर ॥ ८ ॥ लीला और वि  
 लास कहि पुनि विदिति बयानि ॥ वि  
 भ्रम किल किंचित वहु रि सुहायत पुनि  
 जानि ॥ ९ ॥ वहु रि कुट मित वरनिये पु  
 नि विवोक्त विचारि ॥ चिता मनि कवि क  
 हत यो सज्जन लेहु विचारि ॥ १० ॥ ललि  
 त विहृत दस स कोहे स दस रूपक माहु ॥  
 आठ और वरने उतै विश्व नाथ कवि ना  
 हु ॥ ११ ॥ तपन मुग्ध विक्षेप पुनि वहु रि कु  
 त हल मान ॥ हसित चकित अरु काल  
 पुनि अष्टा दस स जानि ॥ १२ ॥ इत प्रता  
 प सटीप के कोहे अठा रह भेद ॥ तिन को  
 लखन उदा हरन वरनत सवे अखेद ॥ १३ ॥

है सब जोवन मंथि में मेन के दोषिका  
 र ॥ भाव वरन यों कहत हैं विधानाथ प  
 कार ॥ १४ ॥ कोकिल कूक सुने ओ म  
 न स पीछे लिप्यो है ॥ दोहा ॥ भूवेनादि  
 वि कार जो कछु उपजै मन माहि काछु  
 सलस्य वि कार वह भाव हाव है नाहि ॥  
 १५ ॥ हों निकारो दिग है सुयो अंगन पु  
 लक जानाहु ॥ \* ॥ हेरि विहारे दान सो  
 चली बाल सुन क्याहु ॥ १६ ॥ जहं देह  
 दग भौंह मुख दुगित अति अश्रु कात ॥  
 अधिक प्रगट मन भावते हेला सो क  
 हि जात ॥ १७ ॥ शब्देया ॥ कर सो कर जोरि के  
 आनन बंदु को वहु लता पर वख कर ॥  
 अगिरा इके अंग दिखाइ दूर मम मोहन  
 को मुसक्याइ हरे ॥ मृग लोचनी नैन वि  
 लासनि सों पिय के हिय भीतर मोद भरे  
 मन मोहन मोहन भाव नही सी कुलावे वि  
 ला सिनि कुंज चरे ॥ १८ ॥ दोहा ॥ विना वि  
 भ्र खन मधुरता सो साधु र्य वखनि ॥ स  
 कल अवस्था में सदा लोच विन की खा  
 नि ॥ १९ ॥ कवित ॥ ओठ मनो रधि विंय प

सांघि

श्रु

तिहारे



क्यों मनो शर्मिनि दीपति अंग निहारे ॥  
 वार वडे वडे नैन लमें मनो अंगुलि पातनि  
 भोर सुधारे ॥ पून्यो निमाके काहानखता वलि  
 में मन में यों विचार विचारे ॥ १७॥ अकलंक  
 मयंक मुखी तरे अंग दिना ही निगार सिं  
 गारे ॥ १८॥ धर्म लहरा ॥ दोहा ॥ काला मिला  
 दिक भाववन सोधीरज मन आनि ॥ पिय  
 को जो अनु कारन हो लीला नाम वाकनि  
 ॥ १९॥ कविता ॥ पीरी पीरी होति लागे मरु  
 मित्र थारि सीरी पीरी चंदाकाहुं पे अन्व  
 चिन राखे ज ॥ चिंता मति कहै मोहि जान  
 मात व्याहि देव देवतानि सेद एही वात अ  
 भिलारै ज ॥ खान पान छोड़े निज देह न  
 म्हारे वह काहं सो वात निज मन की न  
 भारै ज ॥ २०॥ से सो हाल करि वह विरह वि  
 हाल लाल केह काल वाल काल कान पे  
 न नाखे ज ॥ २१॥ लीला को उदा हरन ॥ \*  
 कविता ॥ सांखे स्वहृष में मगन मन सुगने  
 नी मरा मद अंग राग अंग में धरति है ॥ २२॥  
 वर मुकुट धरि तन पीत पतकरि ललि  
 त लकट हाथ दिग दगति है ॥ चलि च

मगन

द मुखी मंद समद गयंद गति मोहि वें काहे  
 मन मोदनि भरति है ॥ २३॥ अविनि वीरानि पे  
 म छाया यों छवीली दान्ह राधिक तिहा  
 से जानु कारन करति है ॥ २४॥ दोहा ॥ योरे  
 ही अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग  
 विनि लखानि यों काहन सुखावि स्व कोद  
 ॥ २५॥ अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग  
 २५॥ अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग  
 क अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग अंग  
 दोहा ॥ पिय के दो वन अंग में इंगिज जो क  
 द है ॥ नत कालि को सु विलास लखि वर  
 नत है मय कोद ॥ २६॥ लालिता जके ललि  
 न पर पर अंचा नका नैन ॥ नभ मग है कुव  
 ले अंगलि सरवर से जलु मेन ॥ २७॥ प्रगटी  
 नाम भरा नचल अंचल दूगाना ॥ सुंद  
 रि मनि सो पानि भग उतरो रस उतर ॥ २८॥  
 कविता ॥ आज अंग लोकी एक अंग वेली  
 बाल पुह सी तल में आय उरवसी बिल स  
 ति है ॥ अजों वा छवीली की वदन अंग क  
 वि लोचन चकोरन को सुधा वरसति है ॥ भ  
 ने पद अंग की करनि ताको भेदिकी की



सी चारु चंद्रिका बाहिर निकलति है ॥ सूर  
लोचनी की वह कछू आचानक दंसि है  
कै मरनि मेरे मनमें बसति है ॥ १७६ ॥ विभ  
म अक्षर ॥ दोहा ॥ आनद अंग आभार को  
अंग अंग आवेस ॥ त्वरित समै विभक्त  
हैं वरनत सुकावि सुरस ॥ १७७ ॥ संवेया ॥ देख  
त कौन हमें अवलोकायो आली कहा  
ह वेख कियो है ॥ को करि दे कित जायो  
है मन मोहि गयो ॥ इहि भाति लिख्यो है ॥  
नूपुर हाथन पावन में पहंच्यो पाद कार  
लपेट लियो है ॥ तेरे कहा उर नैन सह उ  
र अंजन ओदन बीच दियो है ॥ १७८ ॥ दोहा  
कोथ आसु अरु हास भय आदिवा नह  
इक वार ॥ कालि किंचित नामों काहत  
व कावि बुद्धि विचार ॥ १७९ ॥ कावित ॥ दंपति  
अनूप वैस सुरति अरंभ समै ते दोऊ रस  
रति में न मर सति है ॥ तरुन चढ़ादू त्यों  
भूँटे भाँझ कोर कंप मनि मन छुटिया  
की छुवानि सुख निहै ॥ वहिया गहत पिय मा  
न तिन प्यारी भारी कोपते निहारि देदे  
नैन न करति है ॥ \* ॥ नहि यां करति नीदी

खोलति नवेली बाल रोवति रिमाति अर  
साति मुसक्याति है ॥ १८० ॥ दोहा ॥ जहं पि  
यकी बातें सुनात भाव प्रका सित होइ ॥  
ताहि कुद मित कहत हैं यों वरनत सब  
कोइ ॥ १८१ ॥ संवेया ॥ कान्हके रूप को पावै  
नवे विधि कोटि अन गन कोप विचारो  
मेरे कदो सुनि कै उत जैसी भई वह वं  
सीज आपु निहारे ॥ रोम उठे दृग मूढे से  
नीर सों कीन्हो बधू मन मोह विहारे ॥ सो  
हि गढ़ मन मोहन न मन मोहन मोहन  
मंत्र लिहारे ॥ १८२ ॥ दोहा ॥ पिय कर तन म  
रदनहु मन सुख पावै वर नारि ॥ फिरि दृ  
ग मिर कंपन कोरे सो कुद मित विचारि  
॥ १८३ ॥ कुद मित को उदा हरन ॥ संवेया ॥ क  
छु देखति चिबहु त्यों जित में तित अन  
अकेलि ये दाढ़ी भई ॥ विहसो हैं से नैनानि  
से ननिमों सनकी सनि पीति भई जु नई  
कुच गाढ़े गह्वो कार ओचक में भाँझ  
कारत हाथ अनूप भई ॥ हिय पीरी वहेति  
य पीर जनाइ कछू सिसकी मुसक्याइ ल  
ई ॥ १८४ ॥ दोहा ॥ ईदहु को अप मान जो क

रे गरवगहि नरि ताही को विवेकतहं वर  
नत सुकायि विचारि ॥ ३८ ॥ सवेया ॥ वर  
उठौ नमो हीट भये लगे जोरन जो अरिख  
यान हठाई ॥ सो सों सुनो दुहु वंसकी पी  
ति सुलालि वंसकी गीति निहाई ॥ सा  
खनकीन निहाई अथो मुखलागे जमो  
गन ओठ निहाई ॥ रे सुनु दोरा जसो म  
तिके अव होइते आजते दोठ दिहाई  
॥ ३९ ॥ दोहा ॥ ललित अंग विन्यास जो  
ललित काह्ये सोइ ॥ चिंता मनि वाये  
कहत्यो सुनो सुकायि सब कोइ ॥ ४० ॥  
कावित ॥ रासको विलास देखि चिंताम  
नि धुनि सुनि मेखला की मानक नूपुर  
विछियानकी ॥ चंद्रमुखी चंद्रिका पला  
री आनि आवानि में देखत जो धन्य दसा  
ताहीके लियनकी ॥ तुम्हें देखि प्यारी ऐ  
सी मगन भई है जाते दरकि गई है त  
नी आशिया लियनकी ॥ देखी लाल ल  
लित छवीली ऐसी नीको चली आव  
ति जू फीकी कोरे दीपति लियनकी ॥ ४१ ॥  
कुत हल लजन ॥ दोहा ॥ रास वल्लो

खन की जो चंचलता होइ ॥ तारा सुंदर  
ल वरिणये यो वरनत सब कोइ ॥ ४२ ॥  
कावित ॥ वाजे जव वाजे महा मधु नगर  
कीच धुनि सुनि नगारे की भललक अकु  
लाइ है ॥ पौली मह लानि मनि मेखला भ  
नका संग महा मनि नूपुर निनहनकी  
भाइ है ॥ मरि मरि लगीन जो वोल लीला मेनी  
तहो सुखत निकसि गंध दूत न छाई  
है ॥ ४३ ॥ पदिवे उजासन जो भूखम पृथ्वी  
को पाइते मयका मुखी देखनको आइ  
है ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ पीतम की आवे काइ भ  
वसंभु मजी है दू ॥ चिंता मनि तमो चका  
त वरनत है सब कोइ ॥ ४५ ॥ न्यि संगरी  
भ अचानका गरुड दाह का गहि ॥ स  
खी चकात अतिही भई अंकलोन्य  
न चाहि ॥ ४६ ॥ वोलन हुके समय में लाज  
न वोलन दू ॥ विहृत काहत है गहि सों  
चिंता मनि गुर सेइ ॥ ४७ ॥ सवेया ॥ परा  
भूमि लखे वह दाठी ही द्वार क्लोकात मो  
ह हिये उलही ॥ विह सों है सेगल कापो  
ल किये सो सुको चन लोचन नाइ रही

मेखला

उधर्यो अथर लगी बोल कहू पर आयो नवी  
ल यों लाज गही ॥ सुधि आवत ही कसकै छ  
तिया जो कहू वतिया वी तिया न कही ॥ ४७ ॥  
दोहा ॥ जोवन को आगम समै विन का जहि  
जो हाम ॥ हंसति नाम सो तियन को लसत अ  
नूप विलास ॥ ४८ ॥ उवन चहत जोवन समी  
प्रगट्यो हाम प्रकास ॥ लो नीके आयो माल  
कि नैननि ललित विलास ॥ ४९ ॥ रूप भो  
गता पुण्यते सोभा अंग सिंगारि ॥ मनमथ  
उत्थापित सुतौ कंति कहति निरधारि ॥ ५० ॥  
कंतिहु को विस्तार वो सो दीपति पहि चा  
नि ॥ चिंता मनि कवि कहत हे रस रंजन को  
जानि ॥ ५१ ॥ सोभा कांति दीप प्रमाधुर्य को  
उदाहरन ॥ कवि ॥ वैसकी उठोन ठोन रूप  
की अनूप कान्ह अंग अंग औरै कछू वो  
प उल हति है ॥ चिंता मनि चंचला विलास  
वो रसाल नैन भदन के मद और आभा उ  
म हति है ॥ कुंदन की वेली सी नवेली अ  
लवेली वाल केतिक गरव की सो गौरता  
गहति है ॥ उमकि भरोषे तुम्है चाहि वे कौंच  
द मुखी द्योसहू मै चंद्रिका पसारति रहति है

५२ ॥ संभ्रम ॥ संभ्रम को साहिजो सापा  
गलभवरवानि ॥ चिंता मनि कवि कहत है  
सुकविलेह पहि चानि ॥ ५३ ॥ अलि गित  
अरु नाह कौ आलि गन कौ ॥ चुवन  
चुवत जो तिया पियहि दास करि लेत ॥ ५४ ॥  
सदा विनै जो नारि मै औदार कहि सोद ॥  
नाको देत उदा हरन सुकावि सो सब को  
द ॥ ५५ ॥ वह मैरी मृग लोचनी अत उठि दे  
वात दोष ॥ परम सरल मति सुंदरी का वह  
करतिन रोष ॥ ५६ ॥ उवरे जो रहित्य दर्पन  
के भेद तिन को उदा हरन ॥ ५७ ॥ पाणोश्व  
र को विरह ते तन संताप जू है ॥ तपनिका  
हत है ताहि सो विश्व नाथ का कोड ॥ ५८ ॥  
सवैया ॥ वामनि मंदिर को छंद छपा  
करकी छवि पुंजन पोख्यो ॥ आदु के स्व  
त मनो हर चांदनी चापुलै मै महा बल रो  
ख्यो ॥ सुंदरि के मुख चंद को छंद चकोर  
न चंद मयूरवन चोख्यो ॥ चंद्रसिलानि ते  
नीर भाख्यो ॥ सवै तिय के विरह गिनि सो  
ख्यो ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ पीतम को ख लोकि को  
रहै जहां नहि जान ॥ उपज छिप तहां व

र नत सुकावि सुजान ॥ ५४ ॥ सवेया ॥ लो  
ग लखै नंद लाल विलोकत बाल कहा  
यह हाल भई है ॥ तोहि विलो कत मोहि  
महा दुख मोहि कहा इहि भांति गई है ॥  
आनि थरी दिग में गगरी अपनी कत  
र यह छोड़ि गई है ॥ ताहि कहा मयो मे  
रो अरी गगरी सिर छूछी उठाव लई है  
॥ ५५ ॥ मद को उदा हरन दे आये है संचारी  
वन में सोई जानने ॥ दोहा ॥ तामो कहियत  
मुग्धता कवि जन मन में आनि ॥ जहां पी  
व सों जानि तिय कहै आपनी बानि ॥ ५६ ॥  
सवेया ॥ हूं इनको विवहार लख्यो भहि  
मंडल और पवीन कहाती ॥ हूं उतै उतर  
दे को सके कहै बात सखी इन्हें कौन स-  
काती ॥ कौन फलै विटपी मुकता फल  
बोलो हहा कहि यों मुसकाती ॥ जावै जेवै  
पियके निकटै तवहीं एषट्जो अज्ञान  
है जाती ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ नायक के संग रे  
लिवो कोलि कहावै सोइ ॥ विश्व नाथ को  
मत कहत समझ लेहु सब कोइ ॥ ५८ ॥  
भूलति नभ दामिनि वधू जलद भय वृज

राज ॥ कान्ह कुवर की वीकी कहा बनी  
छवि आज ॥ ५९ ॥ इति श्री चिंता मनि  
विर चिते कवि कुल कल्प तरो सप्तमं ॥

प्रकार राम

दोहा ॥ जामे थारु रति सुतौ मनकी लगन  
अनूप ॥ चिंता मनि कवि कहत हैं सो भू  
गार सख्य ॥ ६० ॥ सुतौ एक संजोग है विपु  
लभ कहि और ॥ दिविधि होत भृंगार यों  
हर नत कवि सिर मोर ॥ ६१ ॥ जहां दंपती  
पीति सों विलसत रचत विहार ॥ चिंता  
मनि कवि कहत हैं यों संजोग सिंगार ॥ ६२ ॥  
संगालो उदा हरन ॥ कविज ॥ कंचन की सा  
कारन संजुत ललित मंच नग जडित जा  
मे उलहै मरीचवर ॥ वैठी पारा प्यारी सं  
ग राधा सुकुमारी जाके चिंता मनि अं  
गन विलास है अनंग सर ॥ कोरु मृगनै  
नी लिये हाथ में चमर चारु काहू के ज  
रु रजै पानन कोडवा कर ॥ निरमल  
मनि मय महल में खेलै चंद्र ददनी झ  
लावै लाल भूलत हिडोले पर ॥ ६३ ॥  
तीसरो उदा हरन ॥ सवेया ॥ चंदिका सो

थकियो सिंगरो जगसोथके ऊपर दंपति  
 सोहैं ॥ दूथके पोनसी सेजके ऊपर रूप अ  
 नूप प्रभा मन मोहैं ॥ हूं पिय प्यारीके चा  
 रुजुरे दृग दूर दुरेही सखी जन जोहैं ॥ स्याम  
 भयो रसि देखि मनो हिय द्वेप्रति पंद जुर  
 दूत कोहैं ॥ ६ ॥ कविन ॥ चैतकी चाँदनी के  
 थो चंद अव लोकानिते छीरनिधिछिरकं  
 पूरन पूर उमगे चिंता मनि कोहें मन आन  
 द मगन ह्वैको विहरत दंपती परम प्रेम सो  
 पगे ॥ अथ खुली अखियां सुरति सुरवरस  
 वस मानो भोर अथ खुलेकामल समै खरो  
 प्यारीके सकलतन प्रमजल विंदु सोहैं क  
 नक लता मै मुकता पाल मानो लगे ॥ ७ ॥  
 चुवन आ लिंगन हिंदे अदि विविधि विधि  
 भोग ॥ चिंता मनि अंगार मै सो रक्के संजो  
 ग ॥ ८ ॥ जहां मिले नहि नारि अरु पुरुषस  
 वरन वियोग ॥ विप्रलंभ यह नाम कहि  
 वर नत सब कवि लोग ॥ ९ ॥ विप्रलंभको  
 साधारन उदाहरन ॥ ज्यों ज्यों जलु डगरत  
 जलद त्यों त्यों जारात जागि ॥ सम उपाय  
 विरहित विरह यह पानीकी आगि ॥ १० ॥

दोहा ॥ सो पूर्व अनुराग अरु मान प्रवास  
 वखानि ॥ पुनिकहिये कहनामक सुजनले  
 हु मन आनि ॥ ११ ॥ होइ मिलनते प्रथमही  
 सो पूर्व अनुराग ॥ यामे वरनन कारत सब  
 सत कवि दसा विभवा ॥ १२ ॥ पूर्व अनुरा  
 ग को उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखत सखा सी  
 तव लगी सब जारात ज्यों आनि ॥ विसेदि  
 खा सिनि की भई वह मुखे सुखयानि ॥  
 १३ ॥ प्रेम प्रीति अखियान की पुनि मन सं  
 गम जानि ॥ पुनि संकल्प वखानिये पुनि  
 प्रवास उर आनि ॥ १४ ॥ वहुरि काजरन वर  
 निये क्रमता और विचारि ॥ अर्थात् लाज  
 को छोडि दो पुनि सज्जन निर आनि ॥ १५ ॥  
 पुनि उन माद वरवानिये सूदी और वखा  
 नि मरन अंतकी दशा ए वारह संगति सुज  
 नि ॥ १६ ॥ प्रथम वरन अभिलाष पुनि चिं  
 ता चितमे आनि ॥ वहुरि वखानो गुन काथ  
 न वहुरो सुमति वखानि ॥ १७ ॥ पुनि उदे  
 ग पलाप गनि पुनि उन्मादो मानि ॥ व्या  
 धि और जडता कही मरन अंतमें जानि  
 १८ ॥ काहें गंध करता कहे समंधन दश



भेद॥ दूनेके लखन उदाहरन वरनत सुनो  
अरेबद॥१८॥ आनंद सोहरसन जुहे चह  
प्रीति सों जानि॥ मन लगान मन संग रा  
नि चिंता मनि मन आनि॥२०॥ जुहे म  
नोरथ दृष्टमे सो संकल्प वरवानि॥ वातें  
प्रिय संमध्य को सो पलाप मन आनि॥  
२१॥ संवर तनको ताप गन मूर्ती ज्ञान  
अभाव॥ मरन वरन बेनाहिना सोतौ प्रा  
न अभाव॥२२॥ नैन गन को उदाहरन॥  
दोहा॥ रूप परस पर अटन चिदि निरख  
त स्यामा स्याम॥ हिम गिरि कंदर जेठको  
भरि दुपहर को घाम॥२३॥ मन लगान  
को उदाहरन॥ सवेया॥ उलहे नद नंदन  
के तनमे छवि नील घटा घनकी निहरे  
विलमे मनि कुंडल कानन मे मुख चंद  
मथुरा पिपूष भरे॥ अब लोकन कोत  
रानी ललके पहिरे मुकता हल मालगो  
॥२४॥ पियरो पट मोर किरीट लमे नट नाग  
र मो मन ते नटै॥२५॥ दूसरो उदाहरन॥  
सवेया॥ संग सखी नके आदु गली हंसि  
वाल अचा नक को किल वैनी॥ आदु

तेन लगन

गर उत लाल सखी छवि ज्येकछू चंद  
की दीपति रेनी॥ ज्योंही परे खवार भई  
कै करेजे कटाछ की कोरे जु पौ॥ प्रेम सु  
था मति याकि गर्द मनि लागई मनमे  
सुग नैनी॥२५॥ साफल्य को कहा हरन॥  
सवेया॥ जो कवह दृष भान बली कहं  
न्योति जसो मति माई बुलौ॥ चिचनि  
चित्रित गेह विलो कनि सोनि भोन्के  
भीतर आवे॥ मोहि विलो काही हंसि के  
भुज चंपक माल गोर यहि खे॥ लाली  
रही हिपरा मे यही अब जोहियरा हि  
यरा मे लगावे॥२६॥ आनि के कवह  
यो गली कटि वैं निलखे सुलोना स  
को चन॥ ज्यों धरके खरके हियरे ह म  
जा नतिहैं मर जादगी सोचन॥ कुंडल  
लोलह सोहैं कपो लन नंद लाल लखि  
ते दुख मोचन॥ पाऊं कहं सख ठौरदू  
कांत हों देखी जहां हरिको लोचन॥  
२७॥ पलाप को उदाहरन॥ दोहा॥ कहा  
कहत कैसे लखे वैं वोलत नंद लाल॥  
पुनि पुनि वातें रावरी यों वृक्ष हज वा

वैनी

बुलौ

कंदर

गु

मोचन

लाल

तल

बुलौ



ल॥३॥ दूसरी उदा हरन॥ संवेया॥ रूप  
नृप कंदवके कानन कुंजनि केलि कालो  
ल कलाको॥ काम कारो की सरति स्या  
म की धीरज कोन कहा अवला को॥  
भोर किरिद गारे वन माल विसारि सके  
सरिवर कपलाको॥ मंद हरी मुख चंद  
मनो हर नंदके नंद गुविंद ललाको॥३॥  
दोहा॥ चंद मंद अनृत सरनि भारत  
मदन अराति॥ मोहन मो अरिवयां लगी  
अरिवयां लगी नराति॥३॥ कामता को  
उदा हरन॥ दोहा॥ जेकर मूलन मैगड़े  
मनि कंकन हैं पात॥ तुझे देखे जानेन  
उन पराहि जात गिरि जात॥३॥ अर  
ति को उदा हरन॥ संवेया॥ तीनों तिलो  
क संधारन अत्र धरे हर आपने अंगस  
हार्द॥ जामे वडी विष मारु हती त्योंही  
ताको दर्द थल माह उच्चाई॥ कंद लिला  
रुमै सीस मैई सभ ली यह दाहक पां  
ति वसाई॥ तीरे हला हल आगि कला  
नि में जारे सुक्यों कला निधि मारु॥\*  
३॥ वीडा त्याग को उदा हरन॥ कविता॥

चिंता मनि स्याम जके सुंदर वदन परह  
महें विकानी कौन यामे छल छंदुहे॥ क  
हो कुल कानि जाति कौन पै निवाही  
जादू देखतुहे याही ताहि लाग्यो प्रेम  
फंदुहे॥ मधुर कपोलनि मधुर मुख क्य  
नि मारु मधुर विलोकनि मधुर मुख चं  
दुहे॥ जैसे सब कालनि अमृत मय चंद  
ऐसे निभर अनंद मय नंद जूयो मंदुहे  
३॥ मंदर को उदा हरन॥ कविता॥ मंद  
र सराल जल जातन के पातल को है  
जल में बिछे जल जातन के पालदें॥ क  
है कवि चिंता मनि विकल विरहिनी को  
सीतल अपार उपचार अधिकारतें॥  
चंदन अगर ताके जलकी बहार्द नदी  
सिकता बापूर चूर अति अत्र दातें॥ र  
ते पर प्रति पाल विरह वियो गिनि दो  
र पीरे होत येन सीरे होत गातें॥३॥  
दोहा॥\*॥ विमल वदन की अकसते वि  
रह सहा दूक पाद॥ हनी चंद तीर वनि वि  
रनि परी वाल मुरमाद॥३॥ प्रथम दर  
न अभिलाष पुनि चिंता मन में अति॥

वहुरि वरनि ये गुन कथन पुनि उद्देग व  
रवानि ॥ ३६ ॥ पुनि प्रलाप उन माद मि  
लि व्याधि सुजड ता होइ ॥ दसौ दसा स  
गनत हैं सुकावि संथ कार कोइ ॥ ३७ ॥ र  
म्यो वस्तु अरम्य सम दुःखद यह है जाइ  
चिंता मनि कावि कहत है सो उद्देग ग  
नाइ ॥ ३८ ॥ वचन अनर्थ पलाप कहि  
उन्माद वृथा व्यापार ॥ व्याधि कृश त्या  
दिका वरन कवि जन बुद्धि विचार ॥ ३९ ॥  
जडता चेष्टा रहित तनु मरन न वरनो  
जोगा ॥ चिंता मनि कावि कहत यों कह  
त संथ कार लोग ॥ ४० ॥ अभिलारव को  
उदाहरन ॥ कावित ॥ नैननि की सुसक  
नि अनूप सुनैननि बीच सुधारस नाकुं  
या जग ऊपर मैं अपनो यह तो धन  
जीवनि भाग गनाकुं ॥ श्री गण नाथ  
अभीष्ट के दातहि वार अनेक मैं शम्भु भ  
नाकुं ॥ ४१ ॥ वार कहौ जु विलासिन को मु  
ख चंद विलास विलो कान पाकुं ॥ ४२ ॥  
ज्यों निसि वामर चाहतु वाहि सुतौ काव  
हं वह चाह धरे गी ॥ हेरि हसौ हैं काटाह

न सो मृग लोचनी सो दिग आनि हरेगी ॥  
या निरहे निसा नाथ कीं स धनी रातन के  
चन ताप हरेगी ॥ आनन रूप कला कवि  
ता निशा नाथ सो मोहि सनाथ करेगी ॥  
४३ ॥ संवेया ॥ मोहि कछू नहि देखि परे  
दृग देखत हूं दिन होत अंधारी ॥ कैसे व  
चों इहि आगि मनो चहुं और जंगे नि  
मि चंद उज्यारी ॥ सीरे उपाइ चलैं न कछू  
विरहा नल व्याधि चंदे अति न्यारी ॥ हा  
इ मैं कौन उपाइ कौं वह पावे क्यों प्रेम  
की पीर को प्यारी ॥ ४४ ॥ स्मृत का उदाह  
रन ॥ संवेया ॥ मो हियते निसरेन सुखों वि  
सरे छवि अंग अमोलनि की ॥ मुति में विल  
से वर कुराडुल लोल जु मोहत सुन्दर बोलन की  
लगी यों नल है लगी संजुत पंकज कांति  
कलछ कालो लनकी ॥ मुस वयानि मैं दामि  
नि सो दमकै चमकै मुख ओप कपोलन  
की ॥ ४५ ॥ पानीन पीवति पानन खात स  
वै तन के व्यवहार निवैरे ॥ सुंदरि तेरे स्वरू  
प को सोरत बोलैं वार पचासक टैरे ॥ चं  
दिका सी मुख चंद हसी कछू सीरे भये पु

लके तनु हैरे ॥ नैननि नीर भिरानि सरे वि  
सरेन विलास विला सिनि तरे ॥ ४६ ॥ ना  
थक की रसुत ॥ संवेया ॥ मोही है रवालि गु  
पाल लखे दृजकी वनिता कछु भेदन पावे  
वोलैत वोल दगी ॥ सी लखे मन मैन के वा  
न हियो अकुलावैं ॥ रोमनि अंग कंदव वा  
ली मन में धन रथाम की यों छवि छवैं  
सोरति मंदकियो हसिके उमगैं अमुकां अ  
गियां भरि आवैं ॥ ४७ ॥ गुन कायन ॥ पेरवत  
ही प्रगटी मनको मनिवैनी महरा लिषमा  
गिनि गार्ड ॥ ताप चढाई गयो निरखे सुर  
ची तरुनी मुख चंद ठगार्ड ॥ नील सरोवर  
मैनके वानन नैन निहारिके पीर जगार्ड ॥  
अगि अंगारके रंगन अंगनि के सी अनंग  
की अगि लगार्ड ॥ ४८ ॥ उद्देग ॥ संवेया ॥  
मैनके वान गनै विष संजुत वागके फूल  
नि भोर विहारे ॥ चंद उतै निसिमें लखि  
कै कहै जोर जगी जग अगिलि हारे ॥ होत  
नहीं काल व्याकुल होत हित उपचारनि  
कै पचिहारे ॥ ऐसे भये मन मोहन लाल  
विला सिनी बाल वियोग तिहारे ॥ ४९ ॥

ताछिन तोहि विलोकि विलासिनि ताछि  
नते कछु ओरन भावे ॥ तेरिये वात सुहा  
ति सदा पुलकै कोउ तेरो जनाम सुनावैने  
क नहीं कल मोहन लालहि यो सब लंक  
मयंक सतावे ॥ तौ बनि आवै जो अनन  
तेरो अरी अकलंक मयंक जिअवे ॥ ५० ॥  
नायका को उदा दहन ॥ वीछी को डंक म  
यंक किधों आगे लिखेवोहे पलाप ॥ संवे  
या ॥ मूरति तेरी मनोहर में रचि बोलत  
यों कछु मोहन प्यारे ॥ आवै जवै ठोकि तै  
ही किंतै चली भात खूले कछु आचु  
हमारे ॥ बोलत वरी यह संकगार्ड जोक  
है बृदु संजाल नाम तिहारे ॥ बोलत वरी  
हो जू वूमै जवै सब देन कछु के कछु कहि  
डारे ॥ ५१ ॥ उन साद ॥ संवेया ॥ माया म  
नोज की मोहन के बहुचार रचे बहु रू  
पतिहारे ॥ सामुंहे आवति मूरति पैपरि रं  
भनको भुज दंड पसारै ॥ हाहा करै मुख चुं  
वन मागे हसोहे कपोल लसे छवि वारे  
ऐसे विला सिनी राखे प्रेम पै वावरी सी  
है कछु चार हारे ॥ व्याधि ॥ संवेया ॥ जे

मनि कंकन गाढ़े गड़े कार मूलन है छल  
काढ़ु निकाढ़ ॥ तेरी भूमि परे नहि जा  
नत ऐसी भई तनमें दुवराड़े ॥ नीरी नैन  
ननि नीद काढ़ु निमि पीरी कपोलनि में  
परि आढ़े ॥ तेरी बिलो कानि पाढ़ु विला  
सिनि ऐसी दसा भन मोहन पाढ़े ॥ पु३ ॥  
छूटि गये हसिबो सब खेलि बोलिबो को  
भयो आचु निवेरो ॥ जान काढ़ु न रह्यो  
उनको अव ऐसी वियोग की आपदा  
हो ॥ अंग अली सहले नचले अनम  
खे यदयो यह साहस मेरो ॥ ऐसी दसा  
हुनि मोहन लाल की वैध मन होत द  
या लन तेरो ॥ पु४ ॥ दोहा ॥ काढ़ु मरनवर  
निये जीवन काढ़ु होइ ॥ तो पुनि वाकी  
ज्याइये यों कवि मित्रा कोइ ॥ पु५ ॥ दं  
पति की रिस परस पर मानवरवान्यो  
जाइ ॥ पुनय दुर्घा भेद सो है विधि ता  
हि रानाइ ॥ पु६ ॥ पुनय मानलः ॥ दोहा  
होत पुनय की कुटिल गति विन कीन्ह  
जो रोस ॥ दंपति कोइ क सेज से पुनय  
मान विन दास ॥ पु७ ॥ संदेश ॥ न मन

दुखन अह विचित्र भली है जो मेरी कही  
सिख माने ॥ जाहि चहे सो सदा प्रति विं  
वित तो मे कहात रहे अकुलाने ॥ बाहिर  
कीन सरवाइ काइ जये अंतरवाहि भ  
ले पहि चाने ॥ जो मुस क्यानि में लीन  
रहे तो तू आप को ताप काइ नहि आने  
पु८ ॥ वात कही अर्थ मनमें मुख वाहि  
र के हम ह को अनाइ ॥ त कोन उत्तर दी  
जिये आपु तो होति अनाहि की अधि  
काइ ॥ जानि को कोन सो बोलत को जुहे  
काइ के अंतर की गति पाइ ॥ जाकी चु  
भी मुस क्यानि है चाहिय ता सो सुकैसे  
कोरेगी सरवाइ ॥ पु९ ॥ दोहा ॥ पुनय मान  
गत दुहुन को ई धा मानतु होइ ॥ सुतो  
वरनिये तियन में यों वरनत सब कोइ ॥  
द० ॥ और तिया के दोखते कोरे रोख जेना  
रि ॥ लघु मध्यम गुरु भेद य मानस त्रिवि  
धि विचारि ॥ द१ ॥ कोतुक छूटत मान ल  
घु मध्यम कीन्ह सोह ॥ गुरु छूटत पावून  
पर फेर चढ़ति नहि भोह ॥ द२ ॥ लघु माः  
सवेया ॥ मन मान कियो ह ध मान लली

अनते अव लोकात लाल लहे ॥ उत आ  
 दू जुरी सरिवयां सिसरी पिय आयां स  
 रवी दूक वीज काहे ॥ दूग मूंदिर रहे चित  
 रजु पै मान लला हसिते दूग मूंदिर रहे  
 मुस वयादू के राधिका ॥ आनंदसो भुजमा  
 लसों लाल लछेद गहे ॥ ६३ ॥ मध्यममा  
 ना दोहा ॥ प्यारीकी पदवी हमे हीन्ही आ  
 जु गुपाल ॥ तेरीसों लाईन उर समुभि  
 और तू वाल ॥ ६४ ॥ गुस मान ॥ दोहा ॥ हं  
 सति कहा सोपे निरखि लखि लखि दु  
 नके अंग ॥ नेह और लिय नेह सों नेह  
 हमारे संग ॥ ६५ ॥ सवेया चेतको चंद ओ  
 मंद वयारि वहै अति सीत मुगंध भई  
 इन ॥ जाको घनो लल चाति होवाल सो  
 लाल सलीनो पसो मान पाइन ॥ जोवन  
 के दिन पाहुन हैं पछ लाउगी पीछे के  
 मेरी गुसाइन ॥ केलि करौ मिलि मोहन  
 सों कहा ठीक जु ठानती हो टकु राइन ॥  
 ६६ ॥ दोहा ॥ मान हरन के करन को दूर  
 ने छयो उपाइ ॥ छोड़त इन तेरो सति  
 य रोमे सदा सुभाइ ॥ ६७ ॥ माना पुमानो

भेद ॥ दोहा ॥ साम भेद अरु दीन कहि  
 चौही पुनितवरवाहि ॥ वहुनि उपेक्षा कह  
 तहें फिरि रस अंतर मानि ॥ ६८ ॥ १०  
 मधुर वचन सो साम कहि भेद सरवी  
 को बात ॥ दान व्याज भूवादि को पुनि  
 न करन को पात ॥ ६९ ॥ साभा दिवा वी  
 दीनता होत उपेक्षा चित ॥ नारा हरद  
 इन अरिह दे कहि रस अंतर मित ॥ ७०  
 मम्य पाइ ॥ कावित ॥ वेन सुधा तुही सी  
 च विलासिनि मे मन मोद लखानि की  
 वारी ॥ मोहि कहा कल हेन कहं मानि  
 को पल सक रहे जव न्यारी ॥ मेरिये नैन  
 चकोर छके मृग लोचनी तो मुख चंद  
 उज्यारी ॥ जो कछु जानौ रु जाइ कहोत  
 म मेरेहो पाननते अति प्यारी ॥ ७१ ॥ क  
 वित ॥ चिंता मनि जोपे तुम्हें उनसोहें रु  
 सवेतो काहेको उनको मनु वांछ्यो प्रेम  
 फंदसों ॥ वेतोंहें विलखें मुख तुम विनत  
 महं तो दुरित हो विरहित आनंद को  
 कुंदसों ॥ हमतो जानति सही तुम्हें हैं स  
 यान देखौ पूरन अयान मान ठान्यो नद

प्रजाति

ताम  
३५११



नंदसों॥वैतुमसों मिली तुम इनसों मि  
लहीरबुल्यो चंदजेसेचादनीसोचादनीज्यों चंद  
सों॥चिंतामनि होइ कोऊ नीकी अने  
सी कवित आगे लिख्योहै॥दोहा॥सो  
तनके कुच दुरग तजि पिय मन मिल्यो  
निदान॥अब मनि एका पर चढ़ी वार  
री भोंह कमान॥७३॥दानो पाइ॥कवित  
मानसों निहारि छरव भानकी कुमारि  
का हिल्याए नंदलाल गंदि कर माल  
लीकी माल॥आनि अनबोली केगरे में  
पहि राई कह्यो कौ सी नीकी लागी प्यारी  
दुति उलही विसाल॥नेक मुस कपाइ उं  
चे हेरि फेरि नीचे हेरि पुलकित अंग  
चिंता मनि यों लखे गुपाल॥चिबुकाक  
पोल चूमि चूमि गहि कंठ भूम भूमि हं  
सि लाल भुज माल भरि भेटी बाल॥७४॥  
प्रनति को उदा हरन॥दोहा॥छोडि मान  
पाइन पर्यो जो पिय कह्यो अधीन॥नी  
ल कमल से दृगनि में तियके भाल क्यों  
नीर॥७५॥उत्प्रेक्षा उदा हरन॥दोहा॥पीव  
गयो उठि इकि यो सैंसकाछु बहु मान॥

बह नहि देखति चलो सरिव यह क्यों सहे  
गुमान॥७६॥गसांतन॥सदेया॥मान किये  
दृष भान कुमारिन मान्यो गुवा रिना भो  
र मनार्द॥और उपाइ थके सिंगेर मन मोह  
नयों तब बाँते चलाई॥पीछे तिहोरे कहा  
ति या कहि जोवतियां मनमें भर माई॥  
यां भि भाकी उनको लपकी हंमिके नद  
नदन कंठ लगाई॥७७॥कामना तमः॥\*  
दोहा॥जहां पुरुष तिय जगल में मृत्युए  
क की होइ॥पुनि जीवनि की आसमें क  
मना तमगन सोइ॥७८॥जोवरनोका दं  
वरी पुंडरीक वृत्तंत॥मो कफना तम गानत  
हैं सब पंडित बल वंत॥७९॥प्रवास लक्ष  
ण॥दोहा॥तन मन होत तियान को ताम  
नि पास प्रकास॥पीतमको परदेसको वास  
सुवरन प्रवास॥८०॥होनहार अरु भयो  
जो द्वे विधि वरन प्रवास॥ताको देत उदा  
हरन सज्जन सुनौ प्रकास॥८१॥भविष्य  
त प्रवास॥८२॥कौसी करी मनपाएषरी सुर  
तोन थरी द्विय हेरि हरेवन॥सोर कियो  
न कहा सज्जनी उत हादुर मोर पपी हन



के गन ॥ पावस में परदेस गरु पिय सेतेन  
 है कबहु निरंदे मन ॥ आरु नहीं धन स्याम  
 ये कहा देखे नहीं उनर उनर धन ॥ ८३ ॥  
 दोहा ॥ प्रथम हेतु अभिलाख पुनि विरह  
 रूखा मानि ॥ पुनि प्रवास अस साप पुनि वि  
 पलंभ के जानि ॥ ८४ ॥ अभिलाष हेतु ॥  
 सवेया ॥ नैननि की मूम वयानि अनूपम  
 नैननि बीच सुधा रस नाकुं ॥ ओदन की  
 धन राग लखे मन में अनुराग प्रमोद वद  
 कुं ॥ यो जग ऊपर में अपना यह लो धन  
 जीवन भाग गनाकुं ॥ बार कहों नु विला  
 सिनिको मुख चंद विलास विलोलन पा  
 कुं ॥ ८५ ॥ विरह लक्षणा ॥ दोहा ॥ गुर जना  
 दि पर तंत्र जह निकटहु मिलनम होइ ॥  
 दंपति को बुध जन कहत विरह कहा वत  
 सोइ ॥ ८६ ॥ ललित कथा निसि कोलिकी वि  
 रह जलधिको सेतु ॥ होत दुहुन को द्यो  
 समें नख पद पदको हेतु ॥ ८७ ॥ सुंदरि  
 निरमल सौध गढ़ सरद चांदनी गति ॥ २  
 कौं रूरी पिय सों अरी मिहरी मूरख जाति  
 ८८ ॥ प्रवास हेतु ॥ दोहा ॥ मोहि तोहि चानि

क कहा जल धर जीवन देते ॥ पीउ पीउ री  
 रति मौर निरु कहा सुधि लेत ॥ ८९ ॥ सेपहे  
 तु का मेघ दूत मै ॥ दोहा ॥ विनात औदित  
 वचन जो ओग वे च कछु होइ ॥ ताते उप  
 जत हाम्य जो वरनत हैं सब कोइ ॥ ९० ॥  
 वचना दिवो वंदन निरखि वीत ज चित्त  
 विकास ॥ विरह वहे देखि कै वाइत सु का वि  
 जन हाम ॥ ९१ ॥ हारियतु यह भाव जित  
 नतो हाम रस जान ॥ चाते उप जत है नैन  
 आखन पहि चान ॥ ९२ ॥ नैन नैन की  
 कहत बुध दीपन दूत को होइ ॥ अनुराग  
 सम आदि पुनि मंजारी सो होइ ॥ ९३ ॥  
 सांभत आन हसित पुनि काहे ये अंश विच  
 रि ॥ ओह अंगन में उद्ध दिन आरु अंध हसि  
 त निहारि ॥ ९४ ॥ पुनि अति हासित कछु विधु  
 सुख दे है भिन्न गनाइ ॥ उत्तम मध्यम अ  
 थम जन गतर सम भा वनाइ ॥ ९५ ॥ विमत  
 वाहि विना सित दृगन कहत लख पंख ज  
 हंत ॥ कहत सित उत नैन के द्वे वदन त व  
 धवंत ॥ मधुर सुखर विह सित सरः अंश  
 उद्ध सित जानि ॥ मध्यम नैन का कहत को

सुधि ले

विपना

पु नौ

ये हे भेद वखानि ॥ आसुन जुत कहि अपहसि  
त बहुरि अपति हसित जान ॥ तन परसे पुह  
मीत ले ए अधमन के मानि ॥ ६७ ॥ सेतवर  
न यह प्रथम पति देव नहां सब खानि  
याको देत उदाहरन सुकावि लेहु मन  
आनि ॥ ६८ ॥ सदैया ॥ आरसी देखि जमो  
मति जमो कहै सुत रात यों बात कहे  
या ॥ वैठे ते वैठे उठे ते उठे अस कूदे ते कूदे  
चले ते चलेया ॥ बोलें ते बोलें हम ते हमें मार  
जैमो करौ त्योही आपु करेया ॥ दूसरी  
कोत दुलारे कियो यह कोहे जू मोहि  
खिभावत भेया ॥ ६९ ॥ इष्ट ना सकि अप  
निष्ट की आगम ते जो होइ ॥ दुःख सोका  
याई जहां भाव करन कहि सोइ ॥ ७० ॥  
आलंबनिग सोक इत ताकी दाह क्रियादि  
उही पन अनु भाव गति रोदन भूपातादि  
॥ ७१ ॥ निर्वेदा दिक् होत हैं जामे बहु विधि  
चारि ॥ ते सब अपनी बुद्धि बल लीजे विव  
ध विचारि ॥ ७२ ॥ यह कवार रंगरस कहो  
जमै देवत जहं जानि ॥ याको देत उदाहरन  
सुनो सजन मन आनि ॥ ७३ ॥ कविज ॥

सीसी भांति राम सब नीतको प्रभर पूछो  
भरत सुनायो रोइ पिताको मरनहै ॥ विह  
ल अंगन ते अचेत है गिरै हैं भूमिमाइ दु  
नको गन देख भयो अस रन द्यते रही  
वियोग ते तिहारे पिता पान तजेत मको  
धराको अव धीरज धरन है ॥ ७४ ॥ सुनते  
ही राम सुनो सब जग लख्यो की समे  
है गयो वदन विवरन है ॥ ७५ ॥ देही रो  
वै तीनों भाई लगे रोवन त्यो जमी रघुना  
थ ए वचन मुख वादे हैं ॥ रोवो जिन को  
ऊ कहा तुम्हें कौन दोसु राज से काज पा  
न तजे मेर पान गादे हैं ॥ तमह कुते दिग  
जीवें वाहो कौन भांति मैतो सुनन जिन  
आगह नठा दे हैं ॥ ऐसी बातें कहै कहि भ  
रत सो रोइ राम नैन जल जनते विपुल ज  
ल वादे हैं ॥ ७६ ॥ भरत वचन बेलो ए अव  
वह त कहो उठो तीनों जने चलि उदका कि  
या करौ ॥ लखि मन सीताको क्लोकि की  
हो ऐसी भांति अव उठो चले धीरको  
रो ॥ साथमे सुमंत आए भाइ सब मंदा कि  
नी जल क्रिया करे भरे असुख सो गरो

प्रकार ?

यह

५५

पुनि गिरि चदि आए उट जके द्वारमे पुका  
रसल रोसा संसार की दसा जौ ॥ १०६ ॥ \*  
होहा ॥ अरि विरचित अप राधेते चित्त  
प्रजलन जोष ॥ सोपादे जित रौद्र सों व  
रनत निर्मल जोष ॥ १०७ ॥ आलंवन अ  
व वरनि ये उद्यापन मन आनि ॥ ताके जो  
आचार सब बुध जान लावत वरवानि ॥ १०८ ॥  
भृकादि भंग दृग अरान अर अथर दम  
इत्यादि ॥ अर वरनत अनु भाव एवमि  
चारी बुल्यादि ॥ १०९ ॥ अर वरनत अनु  
भाव ॥ होहा ॥ रक्त रंग रुदाधि पति स  
द वरवाने जाइ ॥ ताके देत उदा हरन सु  
कवि सुनौ मन लाइ ॥ ११० ॥ यनादारी ॥  
काह्यो अर अर वाननको गनत छिन स  
कमे त्वत्त तप सीन मां ॥ अरानि पारे  
सरन छेदिन भत्तारिकों समार मे सची प  
तिकों संधारौ ॥ मीचुको गीहू सनिहत  
कार सकात हो भुज नयल पुलक पट्टे ज  
खारौ ॥ भक्त वैमान कुरार ह मारहै उत्तम  
निमित्त तिनको विचारौ ॥ १११ ॥ अत  
अपाव अकास थरि प्रन सत गा करि ।

अह निशि वामर हंड चलिथ उदाहर प  
थरि ॥ दिक्किम पून विपति तकिमन  
के देसहि ॥ चलो रजारे रंकादोरि रौलके  
राहि ॥ वित्त मनि वल गन करत स्ववल उ  
द अद सम ॥ अरि प्रवल हिन का  
धिस न जलनी ॥ पदु न्यो दजिन वनथि  
तय ॥ ११२ ॥ जो भी को नरन जौ थि  
पुनत उदाहर ॥ सोपादे पादे नरकी  
र कहत कवि नाह ॥ ११३ ॥ जेन वनान  
नरन ॥ जो वीत कोहु ॥ उही फलुत्य  
दि पुनि संधारौ दत सोइ ॥ ११४ ॥ अर वर  
आचरन जो सो गानिथे अनु भक्त ॥ दम  
धर्म के रुद्र के दयासु आदि ॥ ११५ ॥  
उंद देवता कतक सम वरन ॥ सुको जानि  
उजम नावक थि अम जइ भाइ सुको व  
न जानि ॥ ११६ ॥ अयावादि नरके कछु  
बुध जत बुध वल जानि ॥ नरके त उदा  
हरन सुकादि सुनौ मन आनि ॥ ११७ ॥ जइ  
दीर को रुद्र हरन ॥ यनादारी ॥ अर गिरि  
दरी वन लखन ले जानि किहि समजू क  
वचनि न अंग कीन्हो ॥ दिव्य नीर से

हैं सुभग अंग मौरुचिर रघुवीर कर चाप  
लीन्हो ॥ कियो धन गरज धन थनुष र्त  
कोर अरु ललित मुख हरष भलक्यो न  
वीनो ॥ आहु भरि व्योम मुनि सिद्ध गंधर्व  
जैबोलि रघुनाथ को विजै दीनो ॥ ११८ ॥  
तवै धरको पकरि आप आयो उतै जितै  
सर चाप धरि राम राजें ॥ संबाले सधन ध  
न संघ समरहगन तिष्य तम शास्त्र वरखा  
नि साजें ॥ परस तिसूल आस पास मुदग  
र विपुल असनि सम राम पर डारि गाजें  
समुद्र ज्यों आप गावेग सहि आपु धनवे  
ग सहि छविन रघुवीर राजें ॥ ११९ ॥ \*  
राम भुज हंड पाछे लिरव्यो है ॥ दानवीर ॥  
कविन ॥ करिये लखन अभिषेक विभीष  
न जूको लखन विभीषन को कीन्हो अ  
भिषेक है ॥ वडो सुख पायो वानरन रीछ  
राकसन भयो मनौ सवनि सुर ससेकु है ॥  
ल्याए राम जूको साध मोदक अछत राज  
मंडलकी साज भयो उदव अनेकु है ॥ रा  
वन संधारौ राजु दियो विभीषन को ज  
गत सरा ह्यो रघुनाथ को विवेकु है ॥ १२० ॥

परम अपार भवसागर उतारि वेको ॥ पीछे  
लिरव्यो है ॥ कविन ॥ अवधानि थट नंद गा  
उकोस स्वक पर निरख्यो कारवाए पटधा  
रीसोग साथको ॥ चिंता मनि कौहे मृग चर  
म जटालि धरे मुनि वे अ जगत अभय क  
र हाथको ॥ वंस अलं हत करि आपने  
चरित्र सत्यकारी भागी रथ आहरन गाथ  
को ॥ जाइ हनुमान देख्यो धरम वृत्तन धरे  
पेख्यो है भरत उत भैया रघुनाथको ॥ १२१ ॥  
दयावीरको उदाहरन ॥ दोहा ॥ इंदु कह्यो म  
न मोद धरियो सुनिये श्रीराम ॥ कौमि-  
ल्यास प्रजा भई पाइ पूत गुल धाम ॥ १२२ ॥  
इंदु कह्यो अव माग वर यों बोलै दूत राम  
वै जीवें कपि रीछजे मरे महा संगनाम ॥  
१२३ ॥ जे फल मूल अकाम हं पावें वानर  
वीर ॥ होइ विमल वैसवनदी विलसैं जिनके  
तीर ॥ १२४ ॥ इंदु कह्यो है है इहै राम तिहा  
रहेत ॥ सने कहू संसार मे जीवत काह परे  
त ॥ १२५ ॥ है है सब जो चाहियत यों कहि  
गयो अकाम ॥ सबके देखत रामर भै वरस्यो  
अमृत प्रकास ॥ १२६ ॥ पसो न राकस लोथ

पर कछुं अमृत को विंदु ॥ मोह गयो मृत क  
 फिन को उयो ज्ञान को विंदु ॥ १२७ ॥ उठे न  
 जिन विन कापि सवै जग दूरवर भगवान  
 दस रथ नंदन रामजी कारे अलौ किको  
 न ॥ १२८ ॥ रौद्र वित्त भव चित्त की विक  
 लता भय जानि ॥ सो यामे आई सुरस भ  
 यान बाहि पहि चानि ॥ १२९ ॥ जाके उप  
 जत हैं सुरे से आलंवन जानि ॥ ताके द  
 शित जे कहू उही पन जानि ॥ १३० ॥ वै  
 र्णा दिक्क वने य जाके वृत्त अनुभाव ॥  
 शंका धांता दिक्क कहै ते संचारी गनाव  
 ॥ १३१ ॥ काल वरन याको वरन काल देवता  
 मानि ॥ याको देत उदा हरन सुकाविलेहु  
 मन जानि ॥ १३२ ॥ भया नक को उदा ह  
 रन ॥ जाति अनीत राकसी मर्यो राम विम  
 रो गात ॥ भजे कलिंगा धिपति के दोर उ  
 तारे दंड ॥ १३३ ॥ दी भस्मिल लहरा ॥ दोहा ॥  
 हेरवे कुस्मित बाल को विनि जुगु सा जा  
 ने ॥ सोहै आई भाव खित सो वी भस्म  
 खानि ॥ १३४ ॥ रुधिर मास दुरगंध अरु अ  
 लंवन मज्जादि ॥ महा बाल पति नील

ग उही पनक्रम आदि ॥ १३५ ॥ अपस मा  
 र आवेग अरु मोहा दिक्क अभि चारि ॥  
 वरनत रस वी भस्म मै सज्जन लेहु वि  
 चारि ॥ \* ॥ १३६ ॥ कवित्त ॥ \* ॥ विपु विपु  
 ल निश्चर वानर वपु विवात ध्यान रन म  
 डल खंडिय ॥ सज्जनत गज उल लतन  
 कजनु निरखि रिक्त पति साहस छे  
 डिय ॥ सगर भीम परतुरत वेगि उठि  
 भिरत रुधिर जल सरित उमंडिय ॥ \*  
 दाल कल भुज खंड मल रस सिक्ता  
 अस्थि मुसल शिल कंडिय ॥ \* ॥ १३७ ॥ \*  
 दोहा ॥ निरखि अलौ किक वस्तु जो  
 होत चित्त विस्तार ॥ सो विस्मै आई जि  
 तै सो अद भुत रस सार ॥ १३८ ॥ वात अ  
 लौ किक जो कहू सो उही पन जानि  
 महिमा जाके गुनन की सो उही पन मा  
 नि ॥ १३९ ॥ आलं वनगनि वस्तु जो वरन  
 अलौ किक सोइ ॥ उही पन ता गुनन  
 की महिमा जो कहू होइ ॥ १४० ॥ नेत्र  
 विकासा दिक्क जहां वर नत हैं अनु भा  
 व ॥ हर्ष वितर्का दिक्क इतै संचारी स



मुभाव ॥१४१॥ पीत वरन सो वरनिये म  
न मय देवत मानि ॥ याके देत उदा हरन  
मुकाविलेहु मन आनि ॥१४२॥ कवित्त ॥  
वाल पन कोसिक के मखके विधनक  
र निसा चर सोरे सिलाप गरज तारी  
है ॥ गरु हर चाप तोरौ वाप सत्त वैन  
कीन्हो कानन सिधारे राज सिरो नानि  
हारी है ॥ वाली मारौ महा वली राक-  
स संधारे पांति रावन के भुज दंडुन  
की मही पर पारी है ॥ दीन्हो निजु था  
मल अवधि दया निधि को अवधन  
रेस राम अवधि उधारी है ॥१४३॥ कवित्त  
कोमल करकमल कर काम गिरि ते  
उतारि धरि लाल भेरी मनु अकुलातु  
है ॥ जीवैगो सो जीवै जो मरेगो वहु मरे  
सोमों कैसे निजु वालक कलेस देख्यो  
जातु है ॥ मेरो कह्यो करन तो निवारिम  
रोगी कहि चली जहां कर का सिलानि  
को निपातु है ॥ जहां कंदे गोपी गोपग  
न संग नंद रानी तहां  
चल अधि कातु है ॥

\*॥ दोहा ॥ \*॥ सम कहियत वैराग्यते नि  
र्विकार मन होइ ॥ सो थार्द जित सां ल  
स वर नत हैं सब कोइ ॥१४५॥ कुंद दूंदु  
सम धवल यह श्री नारायण आप ॥ या  
रसके अधि देवना जे भेदत सब ताप ॥  
॥१४६॥ आलंवन संसार के निश्चित सत्त  
बरवानि ॥ के पर मारथ अरथ जो सो  
लंवन जानि ॥१४७॥ पुन्या प्रम हरि से-  
त्र अरु तीरथ रम्य बनादि ॥ ताके उद्दीप  
न गनत महा पुरुष संगदि ॥१४८॥  
पुलका दिक् अनुभाव गानि संचारी ह  
र यादि ॥ सकल साधु सेवत लसत यह  
अति विमल अनादि ॥१४९॥ कवित्त ॥

परन विमल बर कृपा के प्रभा  
व सब विगरे प्रपंच भय व्याप  
क गंगन है ॥ प्राचीन कर्म सोम  
करति जो देह ताकी सुधिनका  
छू है से से मान्यो जगन है ॥ का  
म क्रोध लोभ मद मत्सर आदि  
महा मोहके विलास ठग सत्त  
ठगन है ॥ धन्य जन कोऊ राम

अभिराम लुम्ह ज्ञान आनंद

आपार धारा वार में मगन हैं ॥१५०॥

॥ दोहा ॥

यह रस पुनि सु अलक्ष्य काम व्यंग आपु  
धनि हारि ॥ परमा रादि विशेष पद वाच  
क कहत विचारि ॥१५१॥ वाचक पद रसुय  
हो जो रस साधारन नाम ॥ चिंता मनि  
कवि कहत है समझौ बुध अभिराम ॥  
॥१५२॥ दूज प्राब्धन तें कहत हू वंधन रस  
को होइ ॥ याते रस सब होइ मैं व्यंग्य क  
हत रस कोइ ॥१५३॥ कछु विभाव अनु  
भाव कछु अधिक बहुत संचारि ॥ व्य  
क्ति जू शब्द भावों रस काम यह निर  
धारि ॥१५४॥ व्यक्ति सुरस को कामजुय  
ह समझौ रस धनि नाम ॥ जो रस या स  
होतु है सज्जन मन अभिराम ॥१५५॥  
त्योंही भाव विचार रस भावन के अभि  
राम ॥ भाव शांत्या दिवौ पुनि अक्रम व  
रन प्रकाश ॥१५६॥ देव पुत्र दुर आदि  
जे तिनमें जो रति भाव ॥ वै संचारी व्य  
क्तिसो शब्द भाव समु भाव ॥१५७॥ देव

विषय करति भाव को उदा हरन ॥ संवेया ॥  
अरे वेयो अजह नहि होतु स्वरो जो प  
हो ॥ तिहु ताप के तापन में ॥ कछु पंच  
न दोसु कहा पर पंच जुर्ये नही के सुभा  
यन में ॥ मानि होतु सदा शिव रूप तुही  
जो प्रकास बडो यो सुठायन में ॥ यह वं  
धन जो मन ही को कियो मने बांध भवा  
नी के पायन में ॥१५८॥ दूसरो उदा हरन ॥  
कविता ॥ चारु मुख चंद मद हसनि मनो  
हर है चिंता मनि मोतिन की माल हरि  
के गोर ॥ लाल पीत पट लटकल पटा  
ये नट नागर निपट रम नीय रूप को करे ॥  
का नन के मोतिन की चंद्रिका कपोल  
चम कात जरी चीरा पर मोर चंद्रिका  
थरे ॥ कोटि काम सुंदर विरा जत कुंवर  
कान्ह कालिंदी के कूल में कदंब तरु के  
तरे ॥१५९॥ पुत्र विषय करति भाव को उ  
दा हरन ॥ कविता ॥ कुलही ललित जरका  
सी जग सगै अरु भालर में भाल कात १  
मुकता हसौ सुटार ॥ कोसर के रंग रंगी १  
भीनी सी भागुलि या में भाल कात अंगकु

वलय हल सुकुमार ॥ हसत वदन दतिया  
दैं देखि चिंता मनि जनम सुपाल करि  
मानें दसरथदार ॥ गोदलैंकें राम जूको  
आनंद मगन मैया ललकि कैं बलैया  
लेत वार वार ॥ १६१ ॥ रसा भास ॥ दोहा ॥

अनुचित विषय करति जुहै  
सोई तरस अभास ॥ अनुचित  
विषयके भावजो सो पुनि भा  
वाभास ॥ १६२ ॥

वैठि भरोखे मारि दृग वानन करति कु  
काज ॥ मृग नैनी मृगया रची तरुन दृग  
न पर आज ॥ १६३ ॥ भावा भास ॥ दोहा ॥  
पाइ न परि ईश्वर कहै जाको सुर नर ना  
ग ॥ पशु मिथि बध रावन कियो रघु पति  
जरन जाग ॥ १६४ ॥ उपसमयावैं भाव  
जो भाव संत सो जानि ॥ भाव उदै आदि  
का सुतौ उदया दिवा पहि चानि ॥ १६५ ॥  
मानवती पीतम लख्यो खरो दीन मुख  
दूरि ॥ ओचक ही लोचन जलज आसज  
ल सो पूरि ॥ १६६ ॥ भावो दयको लहरा  
\* ॥ दोहा ॥ \*

वेंदी पिय पट सों लगी लीनी अली उता  
रि ॥ वृडि गर्दु अव लोकि उत सकुच सिं  
धु सुकुमारि ॥ १६७ ॥ भाव संधि को उदा  
हरन ॥ कविज ॥ चारु मुख चंद राम चं  
द अर विंद नैन दूदी वर देहु इति लस  
नि सुहाई हैं ॥ कानन के मुकता पाल  
न की भालकि मंद हसनि कपोलनि  
अमोल छवि छाई हैं ॥ रीभी सुकुसा  
रि दसरथ के कुमार लखि भीषम धनु  
ष दीन मुख मुर भाव हैं ॥ ह्वै कैं विह व  
लतन जानुकी विकल मनहि मनसैल  
सुता कुल देवता मनाई हैं ॥ १६८ ॥ \*

भाव सबलता

कविज ॥ दूरहीतें सोही चारु अवल हसो  
ही ऊंची भौहन के संग सोहै सुभग नंद  
लीकी ॥ आयो जव दिग तव सुवरन वे  
ली पर लीन्ही उन हारि है खंजन जुग  
कोलीकी ॥ पुनि अथ खुली दूदी वर  
की वालीसी आइ परी है तिरी छी डीठि  
वचा कैं सहेलीकी ॥ विविधि कटाक्ष भां  
ति मैन सर पांति खरी खुलीं आकु अ-

THE BRITISH LIBRARY  
ORIENTAL AND INDIA OFFICE COLLECTIONS

## Reference

Copyright photograph - not to be reproduced  
photographically without permission of the  
India Office Library and Records.

FR

101

का.कु.क.त.२१ई

खियां अनूप अल वेलीकी ॥ १६८ ॥

इति श्री चिंता मनि वि  
रचिते काविकुल कल्प  
तरे अष्टमं प्रकरणम्  
समाप्तम् शुभं भवतु ॥

हस्ताक्षर च्चराडी रत्न वाम्हरा कायकुल